BHOJPURI JUNCTION-DELBHO/2021/81811 Title Code - DELBHO00011

http://humbhojpuria.com/ https://twitter.com/bhojpurijuncti2/ https://www.facebook/com/bhojpurijunct2

पाक्षिक पत्रिका | 1 जनवरी – 30 जून 2026 | मूल्य – ₹20

भोजपुरी जंक्शन

अंक 154

महिला रचनाकार अंक – 7

भोजपुरी कहानी–संग्रह

अब तक 166 महिला कथाकार

पूरा विश्व से

125 लेखिका

125 भोजपुरी कहानी (पाँच भाग में)

अउर

अन्य

15 मातृभाषा में

41 लेखिका के

41 कहानी (दू भाग में)

स्त्री–स्वर के सृजनोत्सव

भोजपुरी जंक्शन

महिला रचनाकार सिरीज (166 कहानी)

महिला रचनाकार अंक / कहानी–संग्रह / भाग 1–5 / 125 भोजपुरी कहानी

भारत – 104 कहानी (जवना में 5 दिवंगत महिला कथाकार।)
मॉरीशस – 4 कहानी
सूरीनाम – 5 कहानी
फिजी – 1 कहानी
नेपाल –5 कहानी
एम्स्टर्डम, नीदरलैंड –1 कहानी
वर्जीनिया, अमेरिका –1 कहानी
लंदन –1 कहानी
आयरलैंड –1 कहानी
सिंगापुर –1 कहानी
घाना –1 कहानी

मातृभाषा विशेषांक (भाग– 1–2) / 41 कहानी

मैथिली (10 कहानी), मगही (4 कहानी), अवधी (6 कहानी), ब्रजभाषा (2 कहानी), कन्नौजी (2 कहानी), बुंदेलखंडी (1 कहानी), छत्तीसगढ़ी (1 कहानी), हरियाणवी (1 कहानी), राजस्थानी (1 कहानी), कुमाउँनी (3 कहानी), गढ़वाली (2 कहानी), बघेली (2 कहानी), अंगिका (3 कहानी), बज्जिका (1 कहानी) आ नागपुरी (2 कहानी)

वर्ष : 6, अंक : 9-20 | 1 जनवरी – 30 जून, 2026

भोजपुरी जंक्शन

पाक्षिक पत्रिका

अध्यक्ष आ प्रधान संपादक
रवीन्द्र किशोर सिन्हा

संपादक
मनोज भावुक

उप संपादक
डॉ. कादम्बिनी सिंह
मनीषा श्रीवास्तव, परिधि जैन

कला अउर सज्जा
ज्योति सिन्हा

सोशल मीडिया
सुमीत रावत

विपणन विभाग

सहायक उपाध्यक्ष
विशाल सिन्हा (मो.- 8853531208)
जनसंपर्क अधिकारी: संदीप द्विवेदी (मो. 9868317507)
क्षेत्रीय प्रबंधक : बिहार-झारखंड
मनीष किशोर (मो.-9334919888)

संपादकीय कार्यालय
ई-1, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली- 110065
editor.humbhojpuria@gmail.com
पंजीकृत कार्यालय
ई-1, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली- 110065
http://humbhojpuria.com/
https://twitter.com/bhojpurijuncti2
https://www.facebook.com/bhojpurijunct2/

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक रवीन्द्र किशोर सिन्हा द्वारा ई -1, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली-110065 से प्रकाशित अमर उजाला लिमिटेड, सी -21/22, सेक्टर - 51, नोएडा 201301, गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित, संपादक - रवीन्द्र किशोर सिन्हा

हलचल

भोजपुरी भाषा शिखर सम्मान 4
पुस्तक लोकार्पण 95
बेस्ट लिरिसिस्ट अवार्ड 99

कंटेंट डिस्क्लेमर: पत्रिका में संकलित सभ रचना में व्यक्त विचार रचनाकार के आपन विचार ह। ओहसे भोजपुरी जंक्शन परिवार के सहमत भइल आवश्यक नइखे।

एह अंक में

सुनीं सभे

गणतंत्र दिवस पर याद रखे के बा एह बालवीरन के 07

भारत

रश्मि सिन्हा / आत्म सम्मान 09
पूनम सिन्हा / छलिया दमाद 10
डॉ. मंजरी पाण्डेय / प्रेम क ताकत 11
सविता गुप्ता / साँझ के बेरा 12
शेफालिका सिन्हा / अइसन ना हो सकेला 14
अर्चना शरण / नियति के खेला 16
सुनीता श्रीवास्तव 'जागृति' / दूध पिआई 18
डॉ. निवेदिता श्रीवास्तव 'गार्गी' / लौट आइल बुधिया 20
सविता सिंह मीरा / निहारिका 22
डॉ. दीप्ति / मन के कोना 23
शुभ्रा मिश्रा / गदबेरा 24
श्वेता सुरभि / भवानी 26
स्वर्ण लता / सपना के गठरी 27
प्रियंका गुप्ता / कुकुर 29
पूनम शर्मा 'स्नेहिल' / कंचन 31
लक्ष्मी सिंह 'रूबी' / प्रेरणा 33
माया चौबे / ई कइसन सोच 35
डॉ. प्रतिमा / अधूरा सपना 37
विजया शर्मा / रूप-गर्विता 38
विभा पाठक / नेह के परदा 40
कुमारी शुभम मिश्रा / हमसफर 42
आकृति विज्ञा 'अर्पण' / मन के चौकठ 44
मंजरी मिश्रा / लेडी कंडक्टर 47

घाना

भारती सिंह / साग 49

सूरीनाम

सान्द्र लुटावन / सरनामी कहानी 50

महिला कहानी-संग्रह (भाग 1-6) 51

महिला साहित्यकारन के 104 प्रकाशित किताब 76

हम भोजपुरिआ के सफर 87

भोजपुरी जंक्शन के सफर 89

राउर पाती 93

बीजे डेस्क

मनोज भावुक के मिलल ‘भोजपुरी भाषा शिखर सम्मान’

पटना, 8 मई 2026। भोजपुरी भाषा, साहित्य, सिनेमा आ मीडिया जगत में अपना बहुआयामी, दीर्घकालिक आ ऐतिहासिक योगदान खातिर सुप्रसिद्ध साहित्यकार, फिल्म गीतकार आ वरिष्ठ टीवी पत्रकार मनोज भावुक के आज पटना के ऐतिहासिक बापू सभागार में जी मीडिया द्वारा आयोजित भव्य समारोह में ‘भोजपुरी भाषा शिखर सम्मान’ से सम्मानित कइल गइल। एह अवसर पर उनका के ‘ग्लोबल भोजपुरी एम्बेसडर’ आ ‘भोजपुरी आइकॉन’ के प्रतिष्ठित उपाधियो से अलंकृत कइल गइल। उनका के ई सम्मान जी बिहार-झारखंड के संपादक राजकमल चौधरी, जी उत्तर प्रदेश-उत्तराखंड के संपादक रमेश चंद्रा आ भोजपुरी सुपरस्टार दिनेश लाल निरहुआ संयुक्त रूप से प्रदान कइलें।

सम्मान ग्रहण करत मनोज भावुक कहलें कि, ‘जब साहित्य सिनेमा के साथ चलने लगता है तो सिनेमा खिल जाता है। इसलिए भोजपुरी सिनेमा को साहित्य के साथ चलने की जरूरत है। साथ ही मनोज जोर देके कहलें कि भोजपुरी एक अंतरराष्ट्रीय भाषा है, इसलिए सरकार को भी इसे आठवीं अनुसूची में शामिल कर भाषा का दर्जा दे देना चाहिए। भोजपुरी करोड़ों लोगों की सांस्कृतिक आत्मा और भावनात्मक पहचान है। "

मनोज भावुक ओह विरले रचनाकारन में बाड़न जे भोजपुरी के खाली भाषा ना, बलुक वैश्विक सांस्कृतिक पहचान के रूप में स्थापित करे के सतत प्रयास करत रहल बाड़न। ऊ जेतना साहित्य के बाड़न, ओतने सिनेमा अउर मीडियो के बाड़न। गाँव के माटी से जुड़ल रहके ऊ भोजपुरी के परचम देश-दुनिया में फहरवले बाड़ें। इहे कारण बा कि उनका के 'भोजपुरी समाज के सांस्कृतिक दूत' आ 'भोजपुरी साहित्य आ सिनेमा के इनसाइक्लोपीडिया' मानल जाला।

समारोह में राजनीति, मीडिया, सिनेमा, साहित्य आ संस्कृति जगत के अनेक प्रतिष्ठित हस्ती लोग शिरकत कइले रहे। ✷✷✷

संपादकीय

मनोज भावुक

स्त्री-स्वर के सृजनोत्सव

महिला कहानी संग्रह (भाग 1-7)

भोजपुरी जंक्शन के ई महिला कहानी संग्रह खाली साहित्यिक अंक नइखे, बलुक स्त्री-चेतना, संवेदना, संघर्ष आ सृजनशीलता के महत्वपूर्ण दस्तावेज बा। ई ओह आवाज आ विचार के संकलन बा जे बरिसन से घर-अँगना, देहरी, गीत, लोककथा आ चुप्पी में दबल-बसल रहल ह। बहुत दिन से मन में ई टीस रहल ह जे समाज के आधा हिस्सा त महिले लोग के बा, बाकिर साहित्य में उनकर भागीदारी बहुते कम काहे बा? कहानी में ऊ पात्र बनली, प्रेरणा बनली, दुख-सुख के प्रतीक बनली, बाकिर कहानीकार कमे बनली। उनका जीवन के कथा अक्सर पुरुष लोग लिखत रहल बा... भिखारी ठाकुर, महेन्दर मिसिर भा अउर-अउर पुरुष लोग लिखत-गावत रहल बा, त मन में ई सवाल बेर-बेर उठत रहल जे महिला लोग आपन दुख-सुख खुद कब कहिहन!

भोजपुरी भाषा में त ई सवाल अउरी जरूरी हो जाता, काहे से जे भोजपुरी-जीवन के धुरी त नारिये हई। उहे परिवार के आधार बाड़ी, लोकगीत के जननी बाड़ी, परंपरा के रखवइया बाड़ी, श्रम के मूरत बाड़ी आ संस्कार के संवाहक बाड़ी। सोहर में उहे गावेली, कजरी में उहे भींजेली, बिरहा में उहे तड़पेली, बियाह के गारी में उहे हँसेली। तीज-त्योहार, छठ-ब्रत, नेग-न्योछावर, खोंइछा, रिवाज ...सब त उनके हाथ से सजेला। पति परदेस गइल होखे त घर के जिम्मेदारी, विरह के पीर, समाज के ताना, दुनिया के बोझ ...सब त उनके कपारे आवेला। फेर?

हम महसूस कइनी जे महिला लोग कथा-कहानी के जादे नगीच बा। बस अंतर ई बा कि ऊ लोग आँगन में त झूमर पार-पार के कथा कहता, बाकिर कागज पर नइखे उकेरत। अइसे त दू जनी एक पास बइठ जाव त ए लोग के पास कथे कथा बा, बाकिर ई मुहाँ-मुहीं बा, वाचिक बा, लिखित ना।

त हमरा मन भइल जे ई कथवा कागज पर उतरे। ... फेर शुरू भइल खोज। निहोरा कइल गइल, मनुहार कइल गइल, पीछे पड़ल गइल, हौसला बढ़ावल गइल। कई बेर इंतजार कइल गइल, कई बेर मन पारल गइल। कतना लोग पहिले झिझकल, बाद में खुलल। कतना लोग चुप रहल, फेर कलम उठवलस। आ जब कहानी आवे लागल, त लागल जइसे बरिसन से रोकल गइल नदी के राह मिल गइल होखे।

आज एह मेहनत के नतीजा रउरा हाथ में बा- भोजपुरी जंक्शन के सातवाँ महिला कहानी अंक।

एह अंक के साथ अब तक दुनिया भर से 166 महिला कथाकार के रचना हमनी तक पहुँच चुकल बा। एह में सवा सौ भोजपुरी कहानी पाँच अंकन में, आ 41 गो अन्य 15 गो मातृभाषा के कहानी मातृभाषा अंक (भाग 1 आ 2) में शामिल बा। ई संख्या खाली आँकड़ा नइखे-एह विश्वास के प्रमाण बा। ई बतावत बा जे स्त्री लेखन सीमा में बँधल नइखे; ऊ भाषा, भूगोल आ देशकाल से परे एगो व्यापक मानवीय चेतना के स्वर बा।

एह अंक (भाग-7) में शामिल 25 महिला कथाकार के हार्दिक बधाई। संगही धन्यवादो - उनका धीरज खातिर। कुछ कहानी त दू-दू बरिस से प्रतीक्षा में पड़ल रहल ह।

हमार एगो सीमा बा। परिवारो बा। अउर कुछ अउर जिम्मेदारियो बा। अब आराम करब। एह सीजन खातिर भोजपुरी जंक्शन पर एह अंक के अंतिम गाड़ी मानीं। 2020 जनवरी से अब तक केतना साहित्यिक गाड़ी एह जंक्शन से होके गुजरली सन, केतना स्पेशल लिटरेरी ट्रेन के सौगात मिलल, यथा-महात्मा गांधी विशेषांक (3 अंक), वीर कुँवर सिंह विशेषांक, राजेन्द्र प्रसाद विशेषांक, कोरोना विशेषांक (5 अंक), रूस-यूक्रेन युद्ध विशेषांक, गिरमिटिया विशेषांक, फगुआ विशेषांक, चइता विशेषांक, दियरी-बाती-छठ विशेषांक, दशहरा विशेषांक, सिनेमा विशेषांक, देशभक्ति विशेषांक, माई-बाबूजी विशेषांक (2 अंक),

जन्म-मृत्यु विशेषांक (2 अंक), संस्मरण विशेषांक, समीक्षा विशेषांक (4 अंक, 100 किताब के समीक्षा), भोजपुरी के गौरव विशेषांक, 101 दिवंगत भोजपुरी सेवी विशेषांक, खेती-बारी विशेषांक (4 अंक), राम विशेषांक (2 अंक), कृष्ण विशेषांक (2 अंक), गजल-विशेषांक, महिला रचनाकार अंक/भोजपुरी कहानी संग्रह (5 अंक, हर अंक में 25 महिला कथाकार के कहानी) आ मातृभाषा विशेषांक (15 मातृभाषा के 41 कहानी) आदि। तीन दर्जन से बेसी विशेषांक निकाल देनी। सब अपना आप में एगो शोध-ग्रंथ बा, किताब बा। अब तक 154 अंक निकल गइल। अब फेर कबो।

सात साल कम ना नू होला। एह सफर में जेतना सपरल, जेतना लूर-बुद्धि रहे, कइनी। विश्वास बा कि प्रमादवश अगर कवनो कमी परगट भइल होखे त सुधीजन ओकरा के अनदेखा करिहें।

'भोजपुरी जंक्शन' पत्रिका में हिंदुस्तान के बाहर मॉरीशस, फिजी, गुयाना, दुबई, नेपाल आ अमेरिका-यूरोप के भी भोजपुरी लेखक लोग लिखत रहल आ उहाँ के साहित्यिक-सामाजिक-सांस्कृतिक समुदाय के प्रेम-प्रोत्साहन मिलत रहल। ई साधारण बात नइखे। वैश्विक प्लेटफॉर्म पर एह तरह के जुड़ाव-लगाव, सहयोग आ साझीदारी आह्लादित करे वाला बा। भले भारत सरकार के खाता में हमनी के 'बोली' बानी जा, बाकिर पूरा दुनिया के भोजपुरीभाषी आ भोजपुरी-प्रेमी के आत्मा में- 'भाषा', एगो 'अंतरराष्ट्रीय भाषा' बानी जा। कुछ लोग लोकभाषा कहता, त इहो गर्वे के बात बा, काहे कि लोकभाषा मूल भाषा होले। साहित्य के भाषा में स्विमिंग पूल वाला प्रवाह होला जबकि लोक भाषा में नदी-झरना वाला कल-कल, छल-छल प्रवाह होला। खैर, भोजपुरी त लोकभाषा से विकसित होके साहित्यिक भाषा बन चुकल बा। एह से दिन प दिन एह में लिखल-पढ़ल बढ़बे करी।

हमहूँ एगो अंतराल के बाद फेर लौटे के कोशिश करब। नया ऊर्जा, नया जोश के साथ। नया कलेवर आ नया रूप-रंग के साथ। ई विराम जरूर बा, लेकिन ई यात्रा के अंत ना ह।

भोजपुरी के नशा त ना छूटी, ना टूटी। काहे से जे हम इहे ओढ़ी-बिछाइले।

पूरा दुनिया से जवन लगभग 200 भोजपुरिया दिग्गज लोग के डेटाबेस बनल बा, ऊ अकारथ ना जाई। न्यूक्लियर रिएक्टर बनी आ सब ऊर्जा के यूनीडाइरेक्शनल कइल जाई। ठेठ भाषा में कहीं त, फेर बाँस-बल्ली गड़ाई, सामियाना तनाई, मंच बनी आ एक साथे, एक सुर, एक लय में बाजी पचास जोड़ा झाल आ गूँजी चइता, गूँजी फगुआ। चइता-फगुआ माने भोजपुरी। भोजपुरी हमरा साँस-साँस में समाइल बा आ अब ई अंतिम साँस के साथही जाई।

हम जानत बानी, लोग के स्मृति कमजोर ह। तबो, निहोरा बा जे 'भोजपुरी जंक्शन' के प्यार देत रहब। ई थाती बा। बहुत कुछ बा एह में। ई हमेशा कामें आई। सँजो के, सजा के राखीं। हम चल जाएब तबो ई रही आ एह में कहीं-ना-कहीं हम दिखब। ना जाने केतना रात के नींन, केतना जरूरी काम आ केतना कुछ छूटल बा एकरा पाछे। केतना निहोरा-पाती, जिद आ जद्दोजहद करे के पड़ल बा। खैर, सृजन के राह आसान होखबो ना करे।

सात साल के सफर के सब सहयोगी आ शुभचिंतक लोग के हृदय से आभार व्यक्त करत बानी।✷✷✷

प्रणाम!
मनोज भावुक

सुनीं सभे
आर. के. सिन्हा

गणतंत्र दिवस पर याद रखे के बा एह बालवीरन के

हर साल जनवरी के महीना आवते गणतंत्र दिवस के तइयारी अपना चरम पर पहुंच जाले। राजधानी दिल्ली में त गणतंत्र दिवस के तइयारी बकिया जगह से बेसी बड़ स्तर पर होला काहें कि राजधानी दिलिए में गणतंत्र दिवस परेडो निकलेला। ओह परेड के हिस्सा ऊ बालवीरो लोग होला, जिनका के देश ओह लोग के साहस, सूझबूझ आ शौर्य खातिर सम्मानित करेला। ऊ लोग जब राष्ट्रपति जी के सलामी देत आगे बढ़ेला त कर्तव्य पथ (पहिले राजपथ) में उपस्थित जन समूह ओह लोग के हर्ष ध्वनि से स्वागत करेला। गणतंत्र दिवस परेड के 1959 से हिस्सा बा लोग बालवीर पुरस्कार विजेता लोग। ई लोग कुछ साल से खुला जीप में निकले लागल बा लोग। हालांकि लंबा समय ले ई लोग हाथी पर सवार होत रहे लोग। बाकिर मेनका गांधी जी के विरोध का बाद से एह लोग के हाथी पर बइठेके परंपरा रोक दिहल गइल।

बालवीर लोग गणतंत्र दिवस परेड से दस दिन पहिले राजधानी में आके परेड के रिहर्सल में शामिल होला लोग। एकरा अलावे ई लोग दुपहरिया आ सांझ के कबो राष्ट्रपति, कबो प्रधानमंत्री, रक्षा मंत्री कबो दिल्ली के मुख्यमंत्री, उप राज्यपाल, वायुसेना, नौसेना आ थलसेनाध्यक्ष जइसन महत्वपूर्ण व्यक्तियन से मिलेला लोग। कबो लाल किला, पुराना किला, कुतुबमीनार, हुमायूं के मकबरा जइसन ऐतिहासिक इमारतन आ कबो फन एंड फूड विलेज जइसन मनोरंजक स्थल घूमेला लोग। एह लोग के राजधानी के फन एंड फूड विलेज के संस्थापक आ नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जी के साथी सरदार सेवा सिंह नामधारी बहुते उपहार देवेलें। उहां के ना रहला के बादो बालवीरन के ओजा सम्मानित कइल जाला।

गणतंत्र दिवस से कुछ दिन पहिले तक त ई बालवीर लोग खबरे में रहे ला लोग। ई लोग पहिले इंटरव्यू देवेला लोग आ फेर नपत्ता हो जाला लोग। ई स्थिति कवनो आदर्श ना मानल जा सकेले। कोशिश त अइसन होखे के चाहीं कि जेकरा बालवीर पुरस्कार मिलल ओकरा के जीवन में आगे बढ़े खातिर राज्य सरकार हर संभव अवसर देवे। हमनी के पुरस्कार सांकेतिक रूप से ना देवे के चाहीं। ईमानदार कोशिश होखे के चाहीं ताकि बालवीरन के बेहतर शिक्षा के अवसर मिले। आमतौर पर एह लोग के संबंध देश के सुदूर इलाका में रहे वाला निर्धने परिवार से होला। एह लोग के हर संभव प्रोत्साहन के दरकार होला। ई लोग देस के नौनिहाल होला लोग। एह लोग के प्रति ठंडा रुख रखल गलत बा।

अब ले विभिन्न राज्यन से करीब एक हजार ले अधिका लइकन के राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार प्रदान कइल जा चुकल बा। साल 2018 का बाद से भारत सरकार के बाल विकास मंत्रालय खुदे एह लइकन के चयन करे ला। अब ई राष्ट्रीय पुरस्कार वीरता के श्रेनी के अलावे खेल, मनोरंजन, विज्ञान,

अनुसंधान आदि आउरो अनेक श्रेनियन में बाल प्रतिभन के दिहल जा रहल बा।

अब देश में केतना लोग के इयाद बा कि पहिला बालवीर पुरस्कार हरीश मेहरा नाम के बालक के मिलल रहे। अब हरीश मेहरा करीब 80 साल के बुजुर्ग हो गइल बाड़न। ऊ दिल्ली में रहेलन। ऊ देश के पहिला प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के एगो बड़हन हादसा के शिकार होखे से बचइले रहलन। ऊ तारीख रहे 2 अक्टूबर 1957। स्थान रहे दिल्ली के रामलीला मैदान। सांझ के सात बजत रहे। ओह दिन हरीश मेहरा राजधानी के रामलीला मैदान में चल रहल एगो कार्यक्रम के दौरान वालंटियर के ड्यूटी देत रहलें। वीआईपी मेहमानन खातिर आरक्षित कुर्सी पर पंडित नेहरू, श्रीमती इंदिरा गांधी, केंद्रीय मंत्री बाबू जगजीवन राम आदि उपस्थित रहे लोग। तबे ओह समियाना के ऊपर तेजी से आग के लपट पसरे लागल जेमें तमाम नामवर हस्ती लोग बइठल रहे। ऊ तुरंत 20 फीट ऊंच खंभा के सहारे ओह जगह पर चढ़लें जेने आग लागल रहे। उनका लगे स्काउट के चाकू रहे। जेने आग पसरल रहे उहां पहुंच के ओह बिजली के तार के अपना चाकू से काट देलें। एह सउंसे प्रक्रिया के अंजाम देवे में मात्र 5 मिनट के समय लागल। ओह समियाना के नीचे बइठल तमाम आम आ खास लोग हरीश मेहरा के अदम्य साहस आ सूझबूझ के देखलें। बाकिर एह दौरान उनकर दूनों हाथ बुरी तरह झुलस गइल। उनका के राजधानी के एगो सरकारी अस्पताल में भर्ती करावल गइल। अगला दिन अस्पताल में उनकर हाल जाने खातिर बाबू जगजीवन राम खुदे अइनीं। हरीश मेहरा के उनका एह बहादुरी खातिर बालवीर सम्मान मिलल । ऊ 26 जनवरी 1959 के गणतंत्र दिवस परेड के हिस्सा बनलें। उनका से पहिले ई सम्मान केहू के ना मिलल रहे। ओकरा बाद उनका के केहू ना याद रखलस। ऊ

सगरी उमिर एगो सरकारी विभाग में कलर्की करते रह गइलन। ई कुल स्थिति हमनी के व्यवस्था के काहिलिए देखावेली सन। 1959 से अभी ले कवनो बहुत साल नइखे गुजर गइल कि हमनी के बालवीरन के कवनो डेटा ना बना सकेनी सन भा ओह लोग ले ना पहुंच सकेनी सन। बाकिर बुझाला जे बालवीरन के 26 जनवरी के सम्मानित कइला के बाद हमनी लगे ओह लोग खातिर कवनो योजना ना होला। हरीश मेहरा के बाद राजधानी के दीनदयाल उपाध्याय मार्ग (राउज एवेन्यू) पर स्थित सर्वोदय स्कूल के सातवां कक्षा के छात्र फकीर चंद गुप्तो के बालवीर पुरस्कार मिलल। उनका सूझबूझ के चलते एगो बड़ ट्रेन हादसा टलि गइल। ऊ फरवरी महीना के 28 तारीख रहे आ साल रहे 1959। फजीरे स्कूल आवत बेरा फकीर चंद गुप्ता रेलवे लाइन के साथे हरकत करत कुछ लोग के देखलें, ऊ पटरी काटत रहलन सन। अरे कुछ देर के बाद त एह पटरी प ट्रेन आवे वाला बा बड़ दुर्घटना हो सकेला फकीर चंद के ई आशंका भइल त ऊ दउड़ के ई जानकारी अपना स्कूल के लगे खड़ा पुलिस कर्मियन के देलन। पुलिस आ के ओह बदमाशन के पकड़ लेहलस। जाहिर बा, फकीर चंद गुप्ता के वजह से बहुत बड़ दुर्घटना टलि गइल। उनहू के राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार से सम्मानित कइल गइल। ऊ गणतंत्र दिवस परेड के हिस्सा बनलें। बाकिर उनका बारे में केहू के कवनो खबर नइखे। मेहरा आ फकीर चंद के मामला त पुरान हो गइल, संबंधित विभागो का लगे, कुछ दशक पहिले जेकरा बालवीर पुरस्कार मिलल रहे, ओकरा संबंध में कवनो जानकारी नइखे। बेशक, ई अफसोसजनक स्थिति बदले के चाहीं।✷✷✷

(लेखक वरिष्ठ संपादक, स्तंभकार आ पूर्व सांसद हईं)।

महिला रचनाकार अंक -7 / कहानी-संग्रह

रश्मि सिन्हा

आत्म सम्मान

रमेसर बाबू रामपुर गाँव के पोस्टमास्टर रहीं। बहुते सज्जन आ गाँव के लोगिन के मददगार। उनकर मेहरारू लता देवियो रमेसर बाबू का संगे-संगे कदम-से-कदम मिलाके चले वाला रहली। गाँव में दु कमरा का मकान में खुशी-खुशी जिनगी के दिन बीतत रहे। ऊ लोग कम आमदनी का बावजूद एकलौता बेटा का पढ़ाई में कवनो कसर ना छोड़लख लोग।

आज उनकर इकलौता बेटा कृष्णा के मेहनत सफल भइल। गाँव के लड़िका मुम्बई में इनकम टैक्स ऑफिसर बन गइल। घर गाँव छोड़े का बेरा कृष्णा बहुते उदास हो गइल रहस आ माईयो-बाबूजी के करेजा के टुकड़ा के अपना से दूर कर बेरा बेर बेर भींजल आँख पोछत रहे लोग।

जब तलक बेटा आँखि से ओझल ना भ गइलें ऊ दुनों बेकत टुकुर-टुकुर ताकत रहलन। बेटा के गइला एक महीना भ गइल। कृष्णा ऑफिस में बइठल फाइलन में अंझुराइल रहलन तबे उनकर मोबाइल के घंटी बाजल। लता देवी के फोन रहे, बहुते घबड़ाइल रोअत-रोअत कहे लगली, 'ए बेटा! तोहर बाबूजी के दाहिना अंग में लकवा मार देहलस। भोरे खेत से घूम के अइले आ कुरसी पर बइठते गिर के बेहोश हो गइलन। बगल के डागदर के बुला के देखवनी हं...'! लता देवी रो-रो के बेटा से जल्दी आवे के निहोरा करे लगली।

सांझे खानी कृष्णा गाँवे पहुँच गइलन। रमेसर बाबू का होश त आ गइल लेकिन हाथ-गोड़ उठा ना पावत रहस। दुनो बेकत बेटा के देखके बहुते खुश भइलन। लेकिन ऊ लोगिन की आँखि पतोह गीता के ढूँढ़त रहे। बेटा बतवलें 'माई काम के भार का वजह से गीता ना आ सकली ह।

कृष्णा आ गीता साथे-साथे कॉलेज के पढ़ाई पूरा करके यूपीएससी के परीक्षा भी संगे पास कइले रहस। कृष्णा का इनकम टैक्स ऑफिसर के पद आ गीता का इंडियन पोस्टल सर्विस मिलल। दुनू जने दोस्ती में करीब अइलें आ दुनू जन के माई बाबूजी का मर्जी से बियाहो हो गइल। चार दिन बाद कृष्णा लवट गइलन।

लेकिन हर महीना में गाँव के एक चक्कर लगावे के पड़त रहे। पांच महीना बीत गइलो पर रमेसर बाबू का हालत में तनिको सुधार ना भइल। कृष्णा खातिर बार-बार ऑफिस छोड़के आइल संभव ना रहे। एही से कृष्णा दुनों जन के मुंबई ले जाए के विचार करके गाँव अइलन आ गाँव पर के घरवा के बेच के मुंबई चले के कहलें, लेकिन रमेसर बाबू इसारा से घरवा बेचे से इनकार कर देहलन।

मुंबई में बेटा के घर में अपना घर खानी दोनों जन रहे लगलन। शुरू में पतोह गीता के व्यवहार दोनों जन के बदे ठीक ठाक रहल।

धीरे-धीरे गीता का सास-ससुर के संगे तालमेल बइठावे में दिक्कत होखे लागल। गीता बियाह के बाद एके हाली गाँवे गइल रहली फिर कभियो ना गइली। ऊ बियाह के दो साल बाद मुंबई में आपन दुनिया में मस्त रहस। बाबूजी के देखभाल वास्ते एगो नोकर रखा गइल। कुछ दिन तक सब ठीक ठाक रहे लेकिन एक महीना बाद सब कुछ बदल गइल। दुनों जने के प्रति ओ लोगन के व्यवहार नाटक बन के रह गइल। आजाद रहे वाली गीता का एह लोग के रहल बंधन लागे लागल। रमेसर बाबू के देखभाल खातिर जवन नोकर रखाइल रहे ओकरा हटा देहल गइल। गीता अपना सास से बोललली, 'अम्माजी! बाबूजी के काम अपने ही करल करीं। बइठे के अलावा रउआ कवनो काम नइखे। दस हजार रुपयो बच जाई। धीरे-धीरे दुनू टाइम रोटी आ दाल भर मिले लागल, जबकि ए घड़ी रमेसर बाबू के ताकतवाला खाना बहुते जरूरी रहे। दुनू पति-पत्नी एक दोसरा के देख के लोर पोंछ लेवे लोग।

कुछ दिन बाद ''पेशाब के बदबू बाहर तक आ रहल बा'' बोलके अन्दर खानी खुले वाला दरवाजा बंद भ गइल। गीता के चिक-चिक से कृष्णा बहुते परेशान हो गइलन आ ओही परेसानी में माई-बाबूजी के कमरा में आके दुनो जन से बहुते कुछ कह गइलन..' अम्मा बाबूजी के ठीक से नहलावल करऽ, देह से बदबू अवेलाऽ..'। लता देवी बोललली, 'बेटा हमरा में एतना ताकत नइखे कि बाबूजी के उठाके गुसलखाना तक ले जाईं' ! बेटा के मुंहवा से निकल गइल कि ..'अम्मा खाना त अच्छे से खालू फेर ताकत काहे नइखे..? बेटा के ई बोली दुनो जन के आत्मा के छलनी कर देहलख। बेटा के कमरा से बाहर जाते लता देवी रमेसर बाबू के पकड़ के जोर-जोर से रोवे लगली। रमेसर बाबू का आँखि से भी ढर-ढर लोर बहे लागल। इसारा से गाँव लवट चले के कहलन। उनकर आँखि बहुते कुछ कह गइल। लता देवी रमेसर बाबू के हाथ पकड़के बोललली, 'हँ, अब उहवें लवट चलीं, जहवाँ अनकरो से आत्म सम्मान मिलेला, जहवाँ एक जून के खाना में भी आत्मा जुड़ा जाला... इहाँ त सम्मान के बिना आत्मा रोअता। रमेसर बाबू दोसरा दिन बेटा से गाँव जाए के कहलें। कृष्णा रोकलन ना, टिकट कटा देलन।

आँख से बहत लोर के साथे फेरू बेटा के दुआरी ना आवे के परन लेके दुनो बेकत अपना घरे, अपना गाँवे लवट अइलें। जहवाँ उनकर आत्मसम्मान रहे, सुन्नर प्यारा छोट दुनिया रहे। स्नेह करेवाला पड़ोसी रहुए जेकरा संगे सम्मान के साथ माथा उठाके जिये के इच्छा रहे। ✷✷✷

नाम: रश्मि सिन्हा
जन्मतिथि: 2 मई, 1957
संपर्क: राँची
संप्रति: निदेशक, संजीवनी अस्पताल, बरियातू, राँची

छलिया दमाद

आज भिनसहरे पूरा 'आरे' में ई खबर आगी लेखा फइल गइल रहे कि नामी वकील 'बाबू केदार नाथ' के घरे आयकर बिभाग के छापा पड़ल बाटे। देखते-देखते उनकरा घरे, हीत दुसमन के भीड़ लाग गइल। जेतना मुंह ओतना बात होखे लागल, केहू कहे- बहुते करिया धन! रखले बाड़ें... सबे लुटा जाई... केहू कहे... बेईमानी के धन कबहूँ ना फरेला.....कुछ उनकर हीत भी रहले जे कुछो कहले ना। इह कुली से हट के, एगो वकील बाबू के परिवारे बा जिनकरा मन में आत्म-ग्लानि भरल बा, आज वकील बाबू अपना करनी पर पछतात बाड़ें।

वकील बाबू पढ़ल लिखल बड़ घर के एकलौता बेटा बाड़न, पूर्वज लोगन से मिलल गाँव पर खेत-खलिहान अउर बड़ फारम बाटे, इंहा 'आरे' टाउन में भी ऊ बहुते मान-सम्मान के धनी बाड़न। उनकर वकालत बढ़िया चलेला, बड़ से बड़ मुकदमा के भी आसानी से जीत जालें। घर में सुन्दर, सुशील मेहरारू अउरो दू गो लइका बाटे। सब मिला-जुला के उँहाके एगो एकबाली आदमी बानी।

वकील बाबू के जब बियाह भइल तब ससुराल में उँहाके बड़ दमाद रहनी। उनकर मेहरारू के बाद एगो भाई अउर दू गो छोट बहिन रहे लेकिन ऊ सभे उनकर मेहरारू से बहुते छोट-छोट रहे, एहसे ससुराल में उनकर बहुते खातीर-बात होखे। उनकर बात सब लोग माने, ससुर जी कुल जरुरी बात उनकरे सलाह से करत रहनी। ससुर जी बहुते सीधा, सरल अउर धार्मिक आदमी रहनी। उँहाके जिनगी भर शिक्षा विभाग में नौकरी कइनी। बेसी पइसा त ना कमा सकनी लेकिन समाज में उनकर बहुते इज्जत-मान रहे।

छोट साली दुनो पढ़े में तेज रहीं त मेहनत, लगन अउर वकील बाबू के सहयोग से दुनो जानी, डाक्टर अउर प्रोफेसर बन गइली लेकिन उनकर छोट साला 'भूषण जी' तीन गो बहिन में एगो बेटा भइला के चलते लाड़, दुलार में बिगड़ गइले, ज्यादा कुछ ना पढ़ सकले। सिनेमा देखे के चस्का लागल त इंटर तक पढ़ के पढ़ाई छोड़ देहले। बेगार, बइठल साला के वकीले बाबू दौड़-धूप क के वन विभाग में नौकरी लगवा देले रहनी।

नौकरी ठीक-ठाक मिलल, तनख्वाह भी बहुत ना त खाना-खर्चा लायक रहे, नौकरी लगला के बाद उनकर बियाह भी धूमधाम से हो गइल। देखत-देखत भूषण जी तीन गो बच्चन के बाप हो गइलन। सब काम-काज में वकील बाबू के पूरे सहयोग रहे। ससुर जी बहुते सीधा इंसान रहनी त ससुराल में वकीले बाबू के अभिभावक मानल जाए। ससुराल में उनकरा से पूछले बिना कवनो काम ना होखे।

भूषण जी के नौकरी वन विभाग में होखला से उनकर बदली भी जंगले में एने-ओने होत रहे। उनकर मेहरारू के पास बहुते गहना रहे। एक दिन वकील बाबू सलाह देहनी 'हमार बड़ लॉकर पटना स्टेट बैंक में बा, त काहे ना दुल्हिन अउर माई के भी गहना, कुली ओही में राख दिहल जाए! एहसे गहना सुरक्षित रही।' सभे के राय विचार से, माई अउर दुल्हिन के सब गहना वकील बाबू के लॉकर में रखा गइल।

दुनो साली लोग के नौकरी भइला के बाद, एक के बाद एक बियाह होखे लागल। चूकि ससुर जी अउर भूषण जी के लगे बहुते पइसा ना रहे त बियाह में वकील बाबू भी कुछ पइसा से मदद कइनी, ओह समय माई के कुछ गहना निकाल के बियाह में लागल। अब वकील बाबू के बेटा लोग बड़ हो गइले। भूषण जी के बेटी भी सयान हो गइली। ओकर बियाह लागल।

ससुर जी बूढ़ हो गइल रहीं। एक दिन ससुर जी भूषण जी के साथ 'आरे' पोती के बियाह के 'नेवता' देवे अइनी। नाश्ता पानी के बाद बात-चीत होखे लागल- 'वकील बाबू! रउआ त जानते बानी! भूषण जी के कमाई बेसी नइखे। जे कमाई बा, उ सब खाना-पीना अउर लइकन के पढ़ाई-लिखाई में खर्चा हो जाला। बियाह शादी में खर्चा बेसी होखी। गांव के जमीन भी बटईया पर बा त अब दुल्हिन के गहनवा ही काम में आई। एह से पटना चल के गहना निकाल के दे दिंही ताकि इंतजाम बात के शुरूआत कइल जाए।'

ई सुनते वकील बाबू के भृकुटी तन गइल। कहे लगलन 'कइसन गहना ... कवन गहना !...उ सब ना मिली!...पहिले हम जे साली लोगन के पढ़ावे में अउर बियाह में छईटा भर पइसा देहनी ओकर का?... ओकर हिसाब हमरा साथे करे के पड़ी...। हमरा के सब पइसा 'सूद' समेत चाहीं।....'

इ सब सुनते, सब लोग सन्न रह गइल। वकील बाबू के मेहरारू उनकरा से निहोरा करे लगली अउर समझावे लगली- 'देंखी अपने अइसन अनर्थ जन करी.., अपने दू-तीन लाख से मदद कइनी त..ओतना के गहना माई के गहनवा में से लें लींहीं... बाकि दुल्हिन अउर माई के सब गहना दे दींहीं....,पाप लागी।

हमहूँ माई, भाई-बहिन के आपन मुंह ना देखा सकब। पूरा गहना करीब 25-30 लाख के रहे, लेकिन वकील बाबू पर उनका बात के भी कवनो असर ना पड़ल। उनका मन में त बेईमानी रहे। दुनो बेटा भी ओहमे सामिल हो गइले, उ लोग टस से मस ना भइल।

अउर बेचारा ससुर जी रिस्ता के मान रखत, बिना कुछ बोललही आँख में आँसू भर के भूषण जी के साथ वापस चल गइले। इही से कहल जाला कि भगवान के घर में देर बा लेकिन अंधेर नइखे! आज छापा पड़ला के बाद, वकील बाबू के परिवार अपना गलती पर पछता रहल बा। ✷✷✷

नाम: पूनम सिन्हा
जन्म तिथि: 05 जुलाई 1958
स्थाई पता: 3504, विजया गार्डन, बारिडीह, जमशेदपुर

महिला रचनाकार अंक -7 / कहानी-संग्रह

डॉ. मंजरी पाण्डेय

प्रेम क ताकत

ठंडी बढ़े लागल। दू तीन दिना पर सुरुजमल के दरसन भइल त बूढ़ पुरनिया, लईका बच्चा सब दुअरे डेरा जमा लिहल। कऊड़ा बारल गइल आ चारु ओर लोगबाग बइठ गइल। केहू पंजा फइला फइला सेंकऽता त केहू हाथ। ढेर बड़ बूढ़ मचिये बइठले, त कुछु जना दरी भा चटाई कुछहू बिछा भुइयें आसन जमा लिहले लोग। कुछु जने त सुसुआइल कऊड़ा तरे से भूंजल आलू अ कन्ना निकार निकार बच्चा बुतुरु के खियावत रहें। खरपत्ती देवियो बइठल रहीं। ओनकर दुलरुआ पोता मुकुन्दा स्कूली से अवते झोरा एक ओरी बीग के पहिले दादी के गरे लपट गइल। गिरत-गिरत बांचल। सबही कहे लागल - अरे ई दुलार कहिया छूटी बहिनी। भूख न पियास अवते रोज एहिंगा दादी भिरी चपट जाला। कहिया ई बड़ होखी दादा। बुझाला दादी एकर कहियों छूटल जातिया। दादी झिरके लगलीं - सुनऽ तारे नऽ।

मुकुंदा अउरी चूमे चाटे लागल। कहे- माई ई लोग का बुझिहें। तू हम्मर परान हई अ हम तोर। ह की ना? औंजियास दादी कहस-अच्छा जो पहिले घरे में डरेस उतार के खा पी लऽ त आवऽ। बाकी ओकरा कहाँ सुने के। दादिये संगे खाइल-पीयल, सुत्तल कुलही होखे। सांझी खान दादिये भिरी बइठ के पढ़ल लिखल, किस्सा कहानी सुनल कुल होखे। स्कूली क साथी मित्रन क बात, एन्ने ओन्ने क कुलही किस्सा पुरान होखस, अहींगा जीवन चलत रहे। माई बाबू कुछु ना बस ईहे आजी पोता क दुनिया रहे। जहिया से मुकुन्दा कऊड़ा में गिरत गिरत बचलें, तहिया से खरपत्ती देवी कऊड़ा तपले छोड़ दिहलीं।

एक बेरी क किस्सा मोन परेला त रोआं भरभरा जाला। जब पूरा देसे में करउना का कहर रहे, ओही घरी खरपत्ती देवी क बोखार आवे लागल। माई बाबू मुकुन्दा के कतनो दादी भीरी से हट्टावस क कोसिस कइल बाकी ऊ कहवां माने वाला रहे। आजियो कतना कहलीं बाबू हमार जियरा ठीक नइखे तू अपना बाबू लगे सुत्तऽ। ठिका जाइबि त फेर सुतिहऽ। बाकी ना, ओकरा के कुछु ना सुने के त कानी में ठेपी ना के बइठ जाय। राती खान सुतला में बाबू धीरे से उठा ले गइलें त फेर आधी रात खान उठि के भागि आइल।

ओह दिना त अउर गजब भइल। भोरे-भोरे आजी क सगरी देह तपे लागल। घर भर डेरा गइल। परधान जी से कहल अ ओइजे टम्परेरी बेवस्था में कोरंटाइन में भेजले के अलावा कउनो उपाय ना बुझास। लोग आजी के इस्टरेचर पर लेटावे लागल बाकी मुकुंदा छोड़बे ना करे। भोकर भोकर रोवे- माई हमार परान बिया हमू संगे जाइबि। माई बेहोस होखे लागल। घर भर मिल के त मुकुंदा के पकड़ल लोग। चिल्ला चिल्ला के फेर घिघियात घिघियात चुपाइल का भकुआ गइल मुकुन्दा।

खाइल पियल छोड़ दिहलस, टुकुर-टुकुर बस दुअरिये निहारे। ई कुल खबर त आगि खानी फइले ओह घरी। बाकी सबकर आपन-आपन विचार। केहू आस पड़ोस करउना भइले के डरे डेराय लागल तऽ केहू कहस हस्पताल भेजल ठीक ना भइल। केहू मुकुंदा के माई बाबू के ताना मारे लागल - कइसन बेटवा पतोहू। दू चार दिना घरहीं एहि घरी बरकाय के रख ना सकल। एही तरीका से दुरियावल त ठीक ना भइल। का जने अब लवट के खरपत्तो अइहैं की ना। बम्बई से लवट के आइल गिरधर कहता- हमनी के ओइजा से भाग के आपन घर परिवार भीरी अइनी जा। दुनिया आपन घर-बार रिश्ता खातिर, अपने लोगिन के बीचे मुअला भा जियला खातिर सब जगह छोड़ के गाँव जवार लवट आइल। हमनियो के लवट अइनी जा की नून रोटी खाइब, बाकिर दुःख सुख में साथहिं रहब जा, बाकी ई कइसन निमोहीं बा। एक्के दिना में बात क बतंगड़ बने लागल। एहर मुकुंदा गोलियाइल गोड़े में मुँह लुकाय के बइठल रहे। मंगर के जिया कचोटे लागल। बुझाय केहू करेजा कढ़ले जाता। परधान भीरी जाई के निहोरा करे लगलन-परधान जी हम माई के ले जाइबि। परधान जी समझावे लगलन आ कहलन की तू बुरबक बाड़ऽ। एइजा से बिना ठीक भइला ई लोग जाए भी ना दीही। टप-टप लोर बहे लागल। बुझाय करेजा दू फांक हो जाई। घरे लवट अइलैं। मुकुंदा पहिलहीं अधपरान भइल रहे। माइयो बाबू के लचार देख हिरदय क भाव बंधा छोड़ा के दऊरत गाय खानी भऽ गइल। चुपचाप घरे से भाग के अस्पताली पहुँच गइल। आ भोकर-भोकर नदाए लागल- माई-माई... तहरा के लेवे आइल बानी। जनाइल की कुलही देवार काँपे लागल। माइयो के कानी में आवाज चहुँपल। उठ के ताके लागल। कइसन ताकत आ गइल की डगरात लंगडात बहरा निकरि आइल। दउर के मुकुन्दा चिंवटा अस करेजा से चफन गइल। मुकुन्दा के चफनाई के सीना से विलपे लागल- अरे बउरहवा, तें खोजिये लिहले। तहरा के देखले बिना चैन से मरियो ना सकत रहीं। पाछे-पाछे दवरत कुलही परिवार पटीदारो आ गइल। ई देख के केहू अइसन ना रहे जेकर आँखी लोरियाइल नाही। खर-खर बहे लागल गंगा जमुना। अस्पताली क लोग छोड़ावे लागल, जवन असान ना रहे त मंगरू, मुकुंदा क बाबू आ भर गाँव क लोग खड़ा भ गइलें की ना.. इनका के भरती कइला के जरूरत नइखे। गलती माफी करीं। हम खून क रिश्ता का, प्यार क मतलब तनकी भुला दिहले रहीं। अब बुझा गइल। ओइजें ठाढ़ ठेला पर माई आ मुकुंदा के बइठा के घरे लिआइल सभे। घर-परिवार के मोहब्बत के ताकत से, मुकुंदा के दुलार, मंगरू आ मंगरू बो के देखभाल से परिवार सब ठिका गइल। आज कऊड़ा पर बइठला ऊ दिन मोन पड़ेला। कब्बो-कब्बो मन कांपियो जाला। बुझाला प्रेम क ताकत से बड़हन कुछु ना हऽ। मऊतो का मुह से बांचि गइली। बाकी ऊ राति ऊ दिन मउत के पिंजरा अस भुलाला ना✷✷✷

नाम: डॉ. मंजरी पाण्डेय
जन्मतिथि: 28 मई 1959
प्रकाशित किताब: सफीना (काव्य संग्रह), कच्ची पगडंडियों पर (गीत संग्रह), छन्नपकैया(काव्य संग्रह), प्रवाल (निबंध संग्रह), एहसास-ए-मंजरी (गजल संग्रह), माता कैकेयी (खण्डकाव्य), छन्नपकैया -भाग 2 (काव्य संग्रह), संपादन- अपराजिता (कवयित्री संकलन), काशी कवयित्री संकलन
संपर्क: बरईपुर,सारनाथ, वाराणसी

साँझ के बेरा

रात के सात बजऽता। बहरी अभियो गरम भट्ठी लेखा तपऽता। आषाढ़ के महीना बीतल जाता लेकिन आसमान से अभियो आग बरसऽता। गरमी से हाल बेहाल बा। रामानन्द जी रोज आसमान ताकऽस कि आज कहीं आकाश में बदरू देखाई दे जाए तऽ कलेजा ठंडा हो जाए... का जमाना आ गइल बा... अइसे कइसे खेती होई। लागऽता असो सुखार पड़ जाई।

रामानन्द जी आपन मेहरारू मालती देवी से बतियावत रहलऽन।

मालती देवी भी भयंकर गरमी से हलकान रहऽली। कहे लगली- आरे भगवानों तऽ ऊपरे आराम से रूसल बइठल बाड़न। लागऽता मेंढक मेंढकी के बिआह करावे के पढ़ी। हीत-नात लेखा मौसमों के मुँह फुल गइल बा। मन के बात मुँह से निकल गइल।

रामानन्द जी उनकर बात पऽ ठटा के हँस देलन।

साँचो कहऽतानी जी, देखीं परदिपवा के, छह महिना हो गइल हमनी के अइला, एको बार झांकें ना आइल, एको बार फोनो पऽ हाल चाल पूछे के फुरसत नइखे ओकरा। पाँच बरिस हम ओकरा के अपना घरे रख के पढ़वनी-लिखवनी। बिआहो आपन बहिन के गोतनी के लइकी से करा देनी। किस्मत के चाड़ बा कि सरकारी नोकरी मिल गइल। उहो में तऽ हम इंटरव्यू में बोल देले रहीं झा जी के। हमार सीनियर रहलन कि तनी देख लेब भतीजा हऽ। इंटरव्यू में पाँच गो सदस्य में उहो रहलन ...रामानन्द जी कहलन। आज काल के लोग के आँख में जरिको पानी नइखे...

चलऽ उठऽ चाय बनावऽ एतना गरमी में पिए के तऽ मन नइखे बाकी चाय के निसा अइसन लगा देले बाड़ू कि छूटते नइखे।

बाबूजी लीं चाय पी लीं, बेटा विमल भीतर आके माई बाबूजी दुनो के चाय ले आके देलऽन। रोज तीनों साथे चाय पिअस। आज एतवार रहे तऽ किरण पतोहूओ आ गइली आपन चाय लेके। बातें बात में किरण कहली कि बाबूजी खेती तऽ होत नइखे, बटइया पर देला से कुछो फायदा नइखे। छोटकी चाची के दबदबा बा।

छोटका चाचा तऽ गउ हवन जे चाची जी बोलेली हं में हं मिला देवेलन। तऽ रेलवे लाइन वाला खेत बेच के मिला जुला के एहिजा एगो फ़्लैट ले लेवल जाए ... कब तक किराया के घर में रहब जा। रउआ लोग के भी उमिर होखता...। बेटा विमल भी मेहरारू के बात के समर्थन कइलन।

मालती देवी भी कहे लगली। ठीके तऽ कहता, अब गाँवें के बात व्यवहार पहिले जइसन नइखे। छोटकी के हम सब सिखवनी ना तऽ कुछु के लूर ना रहे। तरकारी में कबो नून कम तऽ कबो बेसी, कूकर तऽ देखले ना रहे अइसन घर से आइल रहे ...अब देखऽ तऽ फ़्रीज,गैस चूल्हा, टी वी सब से घर भरल बा। पहिले तऽ कबो कबो बासमति चाउर, चना, अरहर के दाल गावें से आवत रहे। किने के ना पड़त रहे। देवर जी अपने पहुँचा देत रहलऽन। अब तऽ कई बरिस हो गइल, सब बंद कर देले बिया छोटकी। आपन बेटा के सब कुछु भेजेले। हम देखले बानी परदिपवा के बेटी के जन्मदिन में गइल रहीं तऽ आपन आँख से देखले रहीं। स्टोर रुम में बोरा आ कनस्तर में सब भरल रहे।

परदिपवा के कनिया पुष्पा से पूछनी तऽ कहली कि हमनी के दाल चाउर कबो किने के ना पड़े। अम्मा जी एतना भेज देली कि रखे के जगह नइखे। मोटका चाउर तऽ हम दाई के बेच देनी। बॉलकोनी में भर दउरा आम रखल रहे। बड़ भाई के एक किलो देबे में फाटऽता। मालती देवी तमतमइले आपन भड़ास निकालत रहली। पतोहू किरण आज मन बनाके बइठल रहली। बात के आगे बढवली, हम तऽ कहतानी पापा जी रउआ लोग के उमिर होखल जाता, बँटवारा करे में समझदारी बा। इनका से कुछो ना होई...।

रामानन्द जी खेत बेचे के पक्ष में ना रहलन। गाँव से बड़ा लगाव बड़ूए। छह महिना गांवें आ छह महिना बेटा के पास रहब। बुढ़ापा मजे से कट जाई। हम तऽ इहे सोचले बानी। माई-बाबूजी, दादा-दादी के धरोहर कइसे बेच दीं। जहाँ बचपन बीतल, हाई इस्कूल कइनी। आगे के पढ़ाई बनारस से पढ़े लिखे में उहे खेत के दाल ,चाउर बेच के दादा पइसा भेजत रहलन। उहे खेत के दाना पानी हमार खून में बहता।

हम तऽ पढ़े लिखे में ठीक रहनी तऽ कलक्टर बन गइनी। बनारस में पोस्टिंग रहल तऽ माई, बाबूजी, दादा आवत जात रहलन। दादी तऽ ना आ पइली, नोकरी लागे के दू साल पहिलही गुजर गइली। उनकर बड़ा मन रहे हमार नोकरी देखे के। बड़ा मानऽत रहीं, सब पोता पोती में सबसे बेसी हमरे के मानत रहली। दादा के सेवा के मोका मिलल। हमार रुतबा, लाव लस्कर देख के दादा खूबे आसिरवाद देस। हर महिना कबो चिउरा कबो गुड़ के लाई कबो सत्तू तऽ कबो बगइचा के आम ले के आ जात रहलन।

हँ हमनी के गरमी के छुट्टी में जात रहनी तऽ दादा जी पोखरा से ताजा मछरी मरवा के भोरे ले के आवत रहलन। एक बार हमहूँ उनकरा साथे

नामः सविता गुप्ता
जन्म तिथिः - 16 सितंबर 1960
स्थाई पताः A G Co-operative colony, H.No/72, Kadru, Ranchi/Jharkhand
प्रकाशित किताबः 1-लघुकथा संकलन-घरौंदा, 2-काव्य संग्रह-काव्य कलश, 3-मन के अँगना में (भोजपुरी काव्य संग्रह)

गइल रहनी। बड़े दादा जी बड़ा खिसियाए लगलन। छुट्टी के बाद घर लौटे घरी बड़े दादा जी लाल रंग के थैली से हरमेसा बीस रुपैया देत रहलन... विमल आपन याद ताजा कइलन।

छठ बाद विमल के लइका के मुंडन रहे। सब गोतिया के नेवता गइल रहे। इंतिजाम करे खातिर रामानन्द जी आ मालती देवी पहिलही गाँव चल गइल रहे लोग। आँगन में माँड़ो गड़ाइल, ऊपर छत पऽ खाए पिए के इंतिजाम भइल। सब रासन पानी, मर मसाला किन के आइल। मालती देवी छोटकी से खेत के गमकउआ चाउर एक मन मंगली तऽ सीधे हाथ खड़ा देली। बहुत मंगला पऽ दस किलो ले आ के देके कहली कि हमनी के तरफ से बउआ के आसिरवादी बा। सब लोग के रहे के ओढ़ना, बिछवना,खाए पिए के इंतिजाम विमल आ रामानन्द जी के माथे रहे।

छोटका भाई कुछो खर्चा करस त छोटकी के लाल पियर मुँह देख के मालती देवी आ रामानन्द जी भाई के चुप रहे के कह देलन। हद तऽ तब हो गइल जब खाना बनत बेरा सिलेंडर खतम हो गइल तऽ छोटकी आपन दू गो सिलेंडर रहला पर भी साफ मना कर देली आ आपन चउका में ताला लगा देली।

ऊ तऽ बगल के पांडे जी के लइका के भनक लाग गइल आ उ बिना पूछले अपना घर से सिलेंडर ले आ के देलन त काम चलल। छोट-छोट चीज खातिर बजार दौड़े के पड़ल। मालती देवी के इ सब देख के एतना खराब लागल कि ऊ सभे के सामने कह देली कि जेकरा बेटा के हम बनारस में अपना घर में रख के पढ़वनी बना-बना के खिअवनी, बिआह के आइल रहलु तऽ बड़ बहिन जइसन बेहवार कइनी।

घरे से कुछो ना मिलल रहे, आपन कमरा में पलंग सजवा के देले रहीं ... खिसिया के मालती देवी उघटा पईची करे लगली तऽ रामानंद जी जोर से डटलन तऽ चुप भइली। गोतिया दयाद सभे में खुसर-पुसर होखे लागल। फुआ कहली इ सब बहरा से आके एतना बढ़िया इंतिजाम करलन।

छोटका भाई के गलती बा, उनका ज़िम्मा लेबे के चाहत रहे। रामानन्द बहुत कइले बाड़न। घर के बनवावे में पहिले खपड़ा के छत रहे, बरसात में चूअत रहे। सब पक्का करवलन। सब परिवार के ले के चललन।

मुंडन के भोज भात के दिन संउसे गाँव के नेवता गइल रहे। सउंसे गाँव खा के निहाल हो गइल। जे आवे से रामानन्द जी के गुण गावे, काहे से कि सउंसे गाँव में अब तक उहे एगो कलक्टर बनलन। अइसन भोज केहू ना देले रहे।

विमल एक पैर पऽ खाड़ा होके बेटा के मुंडन के इंतिजाम में कौनो कमी ना रखलऽन। एक हफ़्ता रहके विमल सपरिवार लखनऊ लवट गइलन। रामानन्द जी मालती देवी गांवे रूक गइलन। दुनो गोतनी में बोलचाल बंद हो गइल रहे।

मालती देवी जिदिया गइली आ आपन चालीस बरिस पुरान कमरा खाली करे के छोटकी पऽर दबाव डाले लगली। रामानन्द जी मना कइलन तबो ऊ ज़िद पऽ उतर गइली। बँटवारा खातिर अड़ गइली। दूनों भाई में समझौता करवावे खातिर बड़की बहिन कल्पना के बोलावल गइल। ऊ सबसे बड़ रही। उनकर परिवार में इज्जत मान जान रहे।

पंद्रह दिन तक बहसा बहसी, मान मन्नअउल्ल भइल। मालती देवी आपन बात मनवावे में सफल हो गइली। घर के देवता छोड़ के बीचे अँगना में देवाल उठ गइल। छोटकी एह खातिर बड़ी हंगामा कइली लेकिन अबकी रामानन्द जी के करेजा छोटकी के व्यवहार से फट गइल रहे। ऊ अपना आगे के भविष्य के सोच के कि विमल बेटा के हमरा बाद कुछो परेशानी ना होखे, एही से बँटवारा करवावे में भलाई समझ के पक्का कागज बनवा के रख लेलन। आपन हिस्सा के खेत बेचे चाहत रहलन लेकिन छोट भाई मुँह खोल के कहलन कि हमरा के बेच दऽ, हमही किन लेब। रामानन्द जी बात मान गइलन। कमें दाम में खेत भाई के दे देलन।

गाँव से लौटला पऽ कुछ महिना तऽ ठीक-ठाक बीतऽल लेकिन किरण के बेहवार में बदलाव आवे लागल। बात-बात पऽ झनक पटक करस। खाए पिए में भी कटौती होखे लागल। रामानन्द जी विमल से कहलन कि किरण के कहीं घुमा ले आवऽ, आज कल उनकर मिजाज ठीक नइखे रहत। मालती देवी रोवे लगली।

रो-रो के कहली, हमनी के कुछो रोक-टोक ना करिले, जे चाहें पहिरऽ,जे चाहें बनावऽ-खियावऽ,जहाँ चाहे आवऽ जा। स्कूल में पढावे जाली, हमनी के दिन भर घरे रह के घर देखिला, बबुआ (पोता) के ई पढ़ा देवेलन...विमल कुछो ना बोललन चुप चाप मुड़ी गाड़ के सुन के चल गइलन।

रामानन्द जी के छोटकी बहिन के फोन आइल कि एह बार रक्षा बंधन पर लखनऊ आवे के प्रोगराम बनता, हमनी के आइब जा। रामानन्द जी बड़ा खुश हो गइलन। मालती देवी के कहलन- कई बरिस हो गइल राखी बंधवइले, रेखवा आवतिया। किरण के साथे बाजार जाके एगो बढ़िया साड़ी ले अइहऽ।

मालती देवी किरण के कहली तऽ किरण झंझुआ के कहे लगली, जब देखऽ केहू ना केहू के जमघट लगले रहता, धर्मशाला बन गइल बा। एगो कमाये वाला बा, सात गो खाए वाला। सब कमाई घरे झोंका जाता। एतना महँगाई बा, साले साले घर किराया बढ़ जाता। एको पइसा के बचत नइखे...रउआ लोग के रोज दिन के कुछो कुछ फरमाइश से तंग आ गइल बानी हम...।

मालती देवी कुछो ना बोललीं। कमरा में आ के मुँह ढक के रोए लगली। रामानन्द जी के भी पतोहू के ताना मारल बड़ा खराब लागल। ओकरो से बेसी विमल के चुप्पी अखर गइल।

रामानन्द जी कई दिन से मने मन सोचत रहलन। अब समय आ गइल बा ओकरा पर निर्णय लेवे के। तीन चार महिना में सब हो गइल। माथा पर एगो छत के अरमान रहे ऊ पूरा हो गइल। रामानन्द जी एगो फ्लैट मालती देवी के नावें लखनऊ में किन लेलन। कुछ पइसा पोता के नाम पर आ बाकी पइसा मालती देवी आ आपन नाम पर फीक्स डिपोजीट कर देलन।✷✷✷

अइसन ना हो सकेला

सुकुमार अउर सुमिता के छोट ही परिवार बा। फिर भी नौकरी में ट्रांसफर के कारण सुकुमार बाहर रहेलन। घर में बेटा-बेटी के साथ सुमिता। उनकर माई बाबूजी लोग कभी-कभी गांव से आवेला, लेकिन महीना दिन से जादे ना रहे। उ लोग के इ महानगर में मन ना लागे।

एक साल से सुमिता बेटा-बेटी के साथे अकेलहीं रहतारी। इहे बात अच्छा बा कि मोबाइल से लगभग रोज आपस में बात हो जाला।

छुट्टी के दिन सुकुमार के वीडियो काल आइल त बेटा-बेटी खुश हो गइलन स। बेटा छह साल के बा अउर समझदार भी। उ आपन पापा से जल्दी आवे के फरमाइश करे लागल। सुकुमार सुमिता से कहलन कि अकेले रहे से आदमी परेशान हो जाला, सोचतानी कि एक हफ्ता के छुट्टी लेके घरे आ जाईं। हेड आफिस छुट्टी खातिर लेटर भेजले बानी। सुमिता कहली कि इ त बहुत अच्छा खबर बा। आजकल अकेले रह के हम भी बहुत घबरा गइल बानी।

फोन रखे के बाद सुमिता कुछ निश्चिन्त होखली। उनका त एने कुछ दूसर शक होखे लागल रहे, उनकरा लागता कि सुकुमार अब पहिले जइसन रोज फोन नइखन करत। हर वीकेंड पर भी नइखन आवत। पूछे पर कहतारन कि काम बहुत बा,समय नइखे मिलत। सुमिता बराबर कहस कि काम से समय निकाल के फोन पर हालचाल लेना अ देना बहुत जरूरी बा।

सुमिता के त अब अइसन लागता कि इहां अकेले रहना ही बहुत कठिन बा। सुकुमार के साथ उ लोग के शिफ्ट हो जाए के चाहत रहे। लेकिन पाँच साल के बेटा के एडमिशन इ महानगर के अच्छा स्कूल में हो गइल रहे। आजकल ई आसान बात नइखे, केतना मुश्किल से त एडमिशन भइल। एक छोटा बच्चा के स्कूल के एडमीशन आ फीस में जेतना लागता ओकरा से कम में लोग पहिले इंजीनियरिंग पढ़ लेत रहे।

खैर, सुकुमार भी इहे कहलन कि ट्रांसफर दूर नइखे भइल। आपन घर से उहाँ तक गाड़ी से जाए में तीन घंटा से जादे समय ना लागी, ओह से हर वीकेंड घर आवे में कोई झमेला ना होखी।

पर, बाद में सुमिता के लागे लागल कि खाली बेटा के पढ़ाई खातिर अकेले रहना कवनो बुद्धिमानी के बात नइखे। आजकल आए दिन ओकर स्कूल से शिकायत आ रहल बा। ओकर छोट बहिन भी प्ले स्कूल जाले, पर अकेले दोनों के संभालना बहुत मुश्किल बा।

एक दिन बेटा के स्कूल से फोन पर नोटिस मिलल, इंचार्ज से मिले खातिर। जब मिले स्कूल गइली त उ अइसे पूछताछ करे लगली कि सुमिता के लागल कि उ कवनो अपराध कइले होखस। जब इंचार्ज के पता चलल कि पति साथ ना रहस, उनकर पोस्टिंग दूसर जगह बा त कहे लगली, 'बेटे का चिड़चिड़ापन और तोड़फोड़ का यही कारण हो सकता है। कोशिश कीजिए कि आप दोनों साथ रहें और बच्चे को समय दें।'

जब सुमिता फोन पर सुकुमार के स्कूल के इंचार्ज के बात बतइली त उ निश्चिंत हो उल्टे जवाब देलन, 'अरे, ई सब बड़ स्कूल के चोंचलेबाजी ह, अब बच्चा बड़ हो रहल बा त, कुछ न कुछ व्यवहार में बदलाव देखे के मिली। तू ओकरा पर विशेष ध्यान द।'

सुकुमार त आसानी से समझा देलन, पर सुमिता के शक गलत ना रहे। अकेले रहके सुकुमार के त लाटरी लाग गइल बा। जिंदगी में पहिला बार कुछ उनकर मन लायक हो रहल बा। अभी तक त उनकर बाबूजी जवन चहलन उहे भइल। उनहीं के अनुसार - पढ़ाई, प्रतियोगिता परीक्षा के तइयारी आ फिर शादी भी। जिन्दगी के एतना बड़ा फैसला भी बिना उनका से पूछले ही ले लेलन।

उनका शादी करे के पड़ल अउर उनकर पिछले पांच-छह साल से चलत आ रहल सपना टूट गइल। उ सपना जे कालेज के पहिलके दिन से देखत रहलन। जब शहर के कालेज में पढ़े गइलन त पहिले दिन पहिला नजर वाला दोस्ती भ गइल। पहिलके क्लास में स्नेहलता नाम के लइकी मिल गइली, उनकर बातचीत से बहुत अपनापन लागल। सांवला रंग आ नाक नक्श बहुत सुंदर अउर ओही शहर के रहे वाली भी। पहिले दिन के बातचीत के बाद धीरे-धीरे दोनों के बीच अइसन दोस्ती हो गइल कि कालेज में उनकर ज्यादा समय साथे बीते लागल। उ प्यार से उनका लता कहत रहन। उ लोग के साथ पढ़े वाले दोस्त कहस कि 'शादी कर ही डालो'।

लेकिन तब लता भी अपन कैरियर बनावे में लागल रही। सुकुमार भी सोचलन कि आपन पैर पर खड़ा हो जाइब, नौकरी हो जाई त घर में एकरा बारे में बात करब।

उनकर बाबूजी सुकुमार के कहे के मौका ही ना दीहलन। उनकर प्रशासनिक सेवा में अफसर खातिर चुनाव होते हर तरह से संपन्न एक

नामः शेफालिका सिन्हा
जन्म तिथिः 4 जनवरी 1962
स्थाई पताः फ्लैट नं 5 सी, फेज 3, शुभाश्री अपार्टमेंट, रांची, झारखंड।
प्रकाशित किताबः 'ये बडी बात है' कविता संकलन और एक कहानी संकलन 'वंश बेल और अन्य कहानियाँ' प्रकाशित, दो साझा पुस्तकें
संप्रतिः लंबे समय तक अध्यापन,अब सेवानिवृत

परिवार से रिश्ता जोड़ देले। लड़की पढ़ल-लिखल रहे। दूसर बात बिना मंगले अच्छा-खासा दहेज भी मिलल। सुकुमार आपन बाबूजी से बहुत नाराज भइलन, आपन मां से कहलन कि उ बाबूजी के समझावस। पर, उनकर बाबूजी केकरो ना सुनलन।

उनका त लागत रहे कि आपन तीन बेटियन के पार लगावे के एकरा से बढ़िया कुछ ना हो सकेला। उनकर कमाई त बस खेती-बाड़ी से ही बा,ओकरा से सब संभव नइखे। उ जिम्मेवारी के हवाला देके सुकुमार के एक न सुनलन। अब सुकुमार खातिर त शादी बिन बुलावल मेहमान जइसन ही आ गइल। अब उनका आपन पहिला प्यार के भुलाके जिंदगी के बेमन से आगे बढ़ावे के पड़ल। शादी के छह बरस में एक बेटा आ एक बेटी के बाप भी बन गइलन।

एने शादी के बाद से ही सुमिता के लागत रहे कि सुकुमार कभी खुलके कवनो बात ना करस। उनकर जरूरत के ख्याल करस, पर पति वाला लगाव अउर प्रेम महसूस ना होखे।

एक बार त उ आपन छोटकी ननद से पूछबो कइली, त उ कहली, 'भाभी, भूलकर भी अइसन मत सोचऽ। भईया त बड़ा ही सीधा-सादा बा, उ त रउरा से बहुत प्रेम करेला।'

सुमिता भी सोचली कि कवनो प्रेम-विवाह त उनकर ह ना, त प्रेम धीरे-धीरे ही बढ़ी!

लेकिन इहां पोस्टिंग पर त कुछ और ही हो रहल बा। जब उ आपन काम से बैंक गइले त उनकर भेंट अचानक स्नेह लता से हो गइल। ऊ उहवें बैंक में नौकरी करेली, एक दो बार मिले से पता चलल कि लता अभी तक शादी नइखी कइले। सुकुमार अपराध ग्रस्त हो गइले, उनका लागल कि उनकर इ स्थिति के जिम्मेवार कहीं उहे त नइखन? अब अधिकतर सांझ के दोनों मिले लगलन।

छुट्टी में भी अब उ आपन मेहरारू-लड़िकन के पास न जा के लता के साथ आसपास घूमे निकल जास। उनका लागल कि उनकर पुरान दिन लौट आइल बा। उ त एतना खुश हो गइले कि अब उनके ना आपन जोरू आ न ही लड़िकन के याद आवत रहे। सारा दिन बस लता ही नजर आवत रही।

लता के का रहे, जब उहे एतना मेहरबान रहलन। उनकर साथ से अच्छा त लगते रहे,पर उ दिल के साथ आपन दिमाग भी इस्तेमाल करत रही। उ त अभी तक शादी ना कइली काहें कि उनके ऊपर दो छोट भाई-बहिन के जिम्मेवारी रहे। उनकर पिता ना रहले आ घर में उ सबसे बड़ रही। उनका पता चल गइल कि सुकुमार अपराध ग्रस्त बाड़े, लेकिन ओकरा कम करे से उनकर का फायदा बा? अइसे भी उनकर विश्वास मर्द जाति से उठ गइल बा।

एक दिन छुट्टी के पूरा दिन सुकुमार लता के साथ बितवले अउर उनका से कहले- 'अब हम नइखीं चाहत कि तूं हमरा से दूर होखऽ, सारी उमर तोहरे साथ बितावे के चाहतानी।'

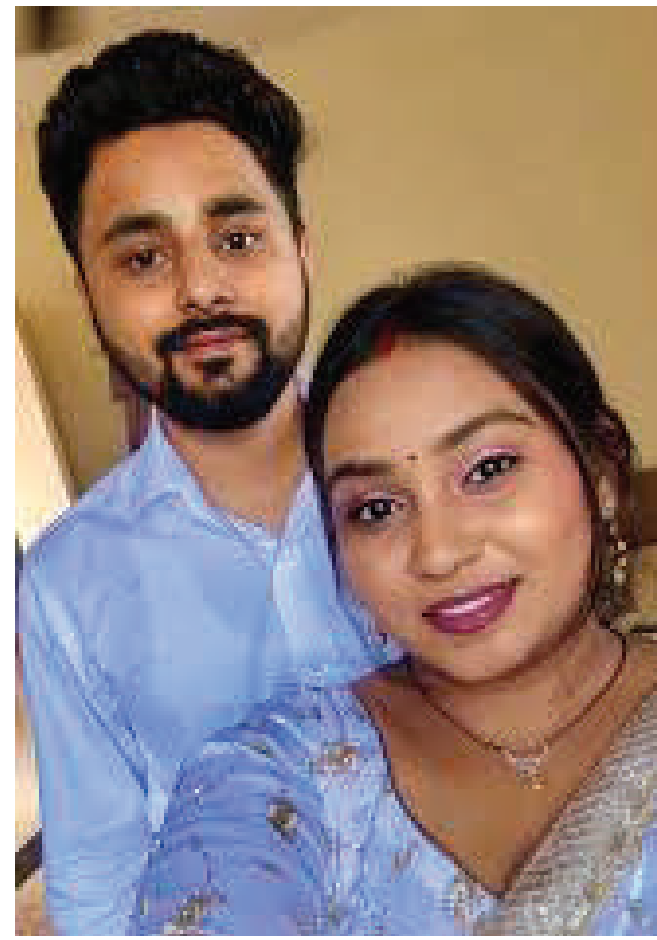

एकरा पर लता बिना लाग लपेट के कहली, 'अगर साथ रहे के बा त शादी करे के पड़ी आ शादी तबे होई, जब उ आपन मेहरारू के तलाक दीहन।'

तलाक के नाम से सुकुमार सपना के दुनिया से सीधे जमीन पर आ गिरले।

उ तुरंत अपना क्वार्टर लौट अइले। उ सोचे लगलन कि कौना आधार पर सुमिता के तलाक देब? उ त एक शिकायत के मौका भी कभी ना दीहली। उनकर त सब काम बिना बोले कर देबेली। उ त परिवार में भी सबके बारे में सोचेली। मां-बाबूजी त उनकर गुणगान ही करत रहेला लोग।

मन ही मन उनका लागल कि गलती त उहे कइलन, शादी कर के भी मन से उनका के कबो स्वीकार ना कइलन। फिर अब बेटा-बेटी के का गलती बा? उनका समझ आइल कि पिछले छह महीना से उ कबो दिमाग से सोचबे ना कइलन, दिल के बात में अझुरा गइलन। उ सुमिता के तलाक ना दे सकेलन, अइसन ना हो सकेला। ✶✶✶

नियति के खेला

रात के पाली से छुटला के बाद भोरे-भोरे कुछ मजदूर लोग आपन-आपन डेरा ओरी लवटत रहे लोग। अन्हार अभी ठीक से छंटलो ना रहे, पौ फटे से पहिलही तीनों आपन शिफ्ट पूरा होते घर ओरी निकल गइल रहे लोग। संतु अउरी राजेसर एगो भोजपुरी गीत ही ही ही ही हँस देले रिंकिया के पापा गावत आ ही ही ही ही हँसत चलल जात रहे। बिलवा सबसे पीछे मुड़ी निहोर के डेगे-डेगे चलल जात रहे। गली सून रहे आ तनी मनी अँजोर बुझात रहे। रास्ता पर लाइट त कमें जरत रहे।

'हाली हाली चल रे बिलवा। हाली से ईहे गलिया पार कर लेवे के। बायें ओर जाके रास्ता घूम जो। आजकल भोरे-भोरे भी चोर-चाइन सब घूमे ल सन। अगर भेंटा गइलन सन त जेबी में जेहि दू गो पैसा बा ऊ हो दु पैसा छीन लिहन सन। संतु के बात सुन के राजेसर भी हां में हां मिलावत बोललस कि जल्दी चले के भाई लोग, आज त सबका एके ठौर जाए के बा। संतू के आज भोरे ही बीड़ी के तलब लागल बा त उ तनी सबके रोक के पाकिट से बीड़ी निकाले लागल आ सुलगावे खातिर दियासलाई मांगें लग लस बिलवा से- 'सलाई बा का रे बिलवा?' बिलवा सलाई निकाल के बीड़ी सुलगवलस अउर तीनो बीड़ी पीयत आगे बढ़ गइलन स।

ई महानगरी में तीनों आदमी तीन जगह के बाड़ें सन बाकिर इहाँ दिल्ली में एकदम एक हो गइल बाड़न...सुख-दुःख में संगी साथी। संतू बलिया जिला के पीपरा गाँव के रहे वाला बा, आ राजेसर झारखंड के लोहरदगा के लगे के ह त बिलवा बिहार के सीतामढ़ी जिला के रुन्नीसैदपुर गांव के रहे वाला बाटे। तीनों संघतिया लोगिन के गांव में तनी मनी खेतियो बारी बाटे, मिट्टी के कच्चा खपड़ैल मकान भी बा बाकिर गांव में अब आमदनी के जरिया कुछो ना रहे से ई लोगिन के पेट के आग बुझावे खातिर रोजगार खोजही के पड़ल। मजबूरी में इहाँ आवहीं के परल। पाकिट में दू गो पाई रही तबे न भर पेट भोजन मिली, बेरा कुबेरा ईलाज के व्यवस्था होई, अंगना में चांपाकल लागी, ईंट के पक्का मकान बनी। इहे सब छोट-छोट जरूरत आ उम्मीद नू लोग के गाँव से पलायन खातिर मजबूर करेला।

फेर ऊ लोग गीत गावते आगे बढ़े लागल लोग। बाकिर बिलवा त अपने चिंता में डूबल रहे, उहो का करो, ओकरा लगे भी त ना घर बा, ना जेबी में पइसा। गाँव भेजला आ अपना खरच से बचवला के बाद थोड़ा बहुत रकम जोड़ले रहल ह उहो माई के बेमारी आ कर्जा के सूद देवे में निकल गइल। का पता ई जनम में उधारी के मूलधन भी ऊ चुका पाई कि ना? बिलवा एगो सरकारी जमीन पर मड़ई टाटी डाल के कइसहूँ गुजर बसर करत रहे। ईहे ओकरा खातिर महल से कम ना रहे। ई सरकारी जमीन पर अनेकता में एकता बुझात रहे। ओही जमीन पर कुछ बाशिंदा लोग राजस्थान के बंजारा के परिवार से बा, जे कि सड़क पर भालू आ बंदर के नचाके अउर अपने भी करतब दिखाके आपन पेट भरत रहे। यूपी बिहार झारखंड कुलहि जगहिया के लोग उहाँ बसल बा जे कवनो फैक्टरी में काम काज करत रहे या फिर मलाई बर्फ, भुट्टा, भूंजा अउर गोलगप्पा के ठेला लगावत रहे।

सब जना आपन-आपन पेट ओहि जगह रहके पोसत रहलन। बाकी ओकरो पर त एक दिन नगर निगम के बुलडोजर चल गइल। रोजे एगो सरकारी कर्मचारी नोटिस लेके आ जात रहे आउर धमकी देवे कि हाली से ई जगह खाली कर द लोग। ई सिलसिला पिछला आठ महीना से चलत रहे। बाकिर ओजा रहे वाला लोग आपन-आपन दुखड़ा साहब लोग के सामने रोवत रहे, हाथ गोड़ जोड़ के गिड़गिड़ात रहे। ओह सभ में महेश तनी पढ़ल-लिखल रहलन।

उनका कवनो एन जी ओ के जानकारी रहे जे गरीबन के हक खातिर लड़े। ओसे भी सभ कोई मदद मांगे के कोशिश कइलस। कार्यकर्ता आवे लोग त दूनो तरफ से लमहर बहस चले। कुछ दिन खातिर मामला ठंढा जाए बाकिर फेर उहे बतिया। ऊ लाचार आ बेबस लोग साहेब लोग से निहोरा करे कि अइसन जुलुम मत करी लोग हमनी के बेघर मत करीं लोग। आखिर कंहवा जाईं जा शरण लेवे। कवनो दुसर आसरा नइखे। फेर एक दिन अचके में सब कुछ नेस्तनाबूत हो गइल। जब से घर छीना गइल तबसे त बिलवा जइसे हँसल अउर मुस्काइल कूल्ही भूल गइल बा। कूल्ही सपना स्वाहा हो गइल। आपन ओही मड़ई के लीप पोत के रहे लायक बना लेले रहे।

उ ओवरटाइम मजूरी करके दु पइसा बचावत रहे मगर बेघर होखे से ओकर भूख पियास रात के नींद आ दिन के चैन सब खतम हो गइल रहे। अब त उ जइसे भी होखे घर के जुगाड़ करे खातिर लागल रहे। एही उधेड़बुन में उ खोवल रहे। जाले कवनो जुगाड़ ना होई तब ले उ आपन बर्तन बासन, सारा सामान लेके संतू आ राजेसर के डेरा पर आ गइल। ई दोनो लोग भाड़ा पर एगो कोठरी में जोड़े-जोड़े रहत रहे। ए दोनो लोग के साथ भी उ केतना दिन रह सकेला, बुझाते ना रहे। ज्यादा दिन रहल उचित नइखे बुझात, ईहे सब सोचत अउर दोहमच में ओकर चाल मंद पड़ गइल रहे। रात के शिफ्ट में काम कइला के बाद थाकल हारल बिलवा आपन किस्मत के कोसत रहे। करमहीन बा ऊ, का जाने फूटल नसीब में अउर का का दुःख देखे के लिखल बाटे। एही उमर में केतना दुख देख लेलस। लईकाईं में ही बाप मर गइल, महतारी बेमार आ छोट भाई बहिन के पोसे के जिम्मेवारी अलगे! राजेश आ संतू लगे एक दू दिन त रहहीं के पड़ी। एकरा बाद ऊ कहीं ना कहीं आपन इंतजाम करिए लिही। तनी सुस्ता के संतू आ राजेसरा संगे खाना ओना खा के आज भर दिन बिलवा किराया के कमरा खोजे में बीता दीहलस।

चिन्हा परिचय के मदद से उ आस पास कई ठो कोठरी जा के देखलस बाकिर भाड़ा त ओकरे बूता के बहिरे रहल। सारा दिन ऊ आस पास के इलाका

नाम: अर्चना शरण
जन्मतिथि: 11 जुलाई 1963
प्रकाशित किताब: चौखट के उस पार (कहानी-संग्रह)
संपर्क: फ्लैट नंबर-C4/103, दिल्ली पुलिस आवासीय परिसर, साइबर पुलिस स्टेशन, सेक्टर-16C, द्वारका, नई दिल्ली

में ही कोठरी ढूंढ़त फिरत रह गइल, बाकी कूल्ही जगह ओकरा निराशा ही भेंटाइल। एने-ओने भटकत-भटकात राह में ओकरा उमेश भेंटाइल। उनका के देखते बिलवा के उदासी दूर भइल अउर मन हरियराइल। उमेश ओकरा जिला-जवार के बारन- 'अरे उमेश यार तू एनिये रहे ल का भाई'?

उमेश भी बिलवा के देख के खुश भइल आ एगो बनत पुल के ओर इशारा करत कहलस -'उ देख इहे पुल के कंस्ट्रक्शन कंपनी में मजूरी करीला। ... आउर भाई एतने पइसा मिलत बा कि एही पुल के नीचे गुजर बसर चलावतानी। अगर किराया में ही सब पइसा झोंका जाई त घरे का भेजब?' बिलवा पुल के नीचे प्लास्टिक के बनल टेंटनुमा घरके अचंभा से देखत कहलस 'एजा रहेलऽ?' हँ एही जा। आ नियरे सुलभ शौचालय भी बाटे त दिशा-बिहान भी हो जाला। एगो रुपया लेवे ल सन। फेर नगर निगम के नल से पानी आउर नहाइल धोवाइल, कपड़ा फिंचल सब कामकाज हो जाला।''

बिलवा के त मानी लॉटरी लाग गइल। खुश होत बोललस ''हमरे गुजर बसर करे खातिर भी व्यवस्था कर देतऽ भाई त बड उपकार होइत।'' हाथ जोड़के चिरौरी कइलस-''कवनो जुगत भिड़ाके हमरा खातिर भी सेटिंग कर देत।'' उमेश बिलवा के अपना ठेकेदार से मिलवइलस। ठेकेदार जी, ई हमार दोस्त हवे बिलवा, हमरे गाँव के बसिंदा बाड़न। पूल के नीचे एक ठो अउर चिमचिमी के घर बनइहे, तनी परमिशन दे देती''। आउर ठेकेदार सहमति दे दिहलस त बिलवा आपन जुगाड़ लगाके दु चार दिन में नयका घर के व्यवस्था प्लास्टिक से घेरके आउर टीना से ढंकके रहे लायक बना लेलस आ ओही में रहे लागल।

बनत पुल से थोड़की दूर पर एगो पीपल के पेड़ रहे जेकरा आस-पास कूल मोहल्ला के फेंकल चिमचिमी के थैली, कागज क टुकडा, सड़ल-गलल तरकारी, रसोई के कूड़ा, जूठन, गोबर चारों ओर फइलल रहे आउर गाय-बकरी ओकरा के चरत रहले सन। जेसे गंदगी आउर बिखर जात रहे। उ सभ सड़ गल के अउरो बास मारत रहे। दु चार गो मुर्गियो ओही में पलले रहलन सन आ लोहा के जाली के बनल दड़बा में भी रखले रहलन स। एतना छोट जगह में मुर्गियन के पालल आ ओकनी के भोरे-भोरे बाग देहल बिलवा के ढेरे अखरेला मगर उ कर भी का सकेला। नगर पालिका के नल टूटल भइला से पानी बह बह के चारो ओरी फइल के गड्ढा में जमा होखे लागल रहे। सायकिल या बाईक के पहिया उ गंदा पानी में छपछपात चलत जाय, पैदल चले वाला के त सबसे ज्यादा दिक्कत होत रहे। एही सब रोजमर्रा के ढेर परेशानी के झेलत बिलवा के ज़िंदगी धीरे-धीरे कटत रहे। मन मार के कइसहूँ रहत रहे। कवनो तरह से एक बेर के रोटी तरकारी बना के खा लेत रहे। आसपास के लोग से अभी दोस्ती भी ना भइल रहे बस थोड़ बहुत बातचीत होत रहे। राम राम करके निकल जात रहे मुड़ी गोंतले।

रतिया में थाकल हारल बिलवा लौटके नयका घरवा में खाट पर जइसही निढाल होके गिरे ओकरा रह रहके आपन मंगेतर लक्ष्मी के खूब याद आवे। धर्मेश के बियाह में चार गांव दूर सैतपुर के पास करमावा गांव बाराती बनके ऊ गइल रहे, ओही जे लक्ष्मी से बिलवा के भेंट भइल रहे। धर्मेश के मेहरारू के खासमखास सखी रहे लक्ष्मी। दुबर-पातर लमहर लक्ष्मी बिलवा के घूरत देख के लजाके भाग गइलस। एकटक निहारत ओकर भोली सूरत पर ही त बिलवा रिझल रहे, मंदिर में धर्मेश के जब बियाह होखत रहे, ओकरो देख के मन में भइल कि एही मंदिर में पंडित जी से कह के लक्ष्मी के संगे सात फेरा ले लेव आ सेनुरदान कर लेव आ अपने संगे ले आके माई के सामने खड़ा कर दे।- ''देख माई ई तहार कनिया''!

मगर बिलवा के अरमान त धरल के धरल रह गइल। हां, लक्ष्मी के हामी मिले के बाद ही बिलवा के माई ओकर बाबू से बात पक्की कइलस आउर बिलवा निश्चिंत भइल कि अगिला लगन में बारात लेके जाई आ लक्ष्मी के आपन बनाई। एगो राहत के बात इहे रहे कि, लक्ष्मी से दु चार बार मोबाइल फोन पर धर्मेश के कनिया बात भी करा देले रही।

फोनवा पर लक्ष्मी लजा-लजा के बतियावस त बिलवा के देह आ दिल में झुरझुरी उठे लागे। धर्मेश बो के एतना दरियादिली दिखावल ओकरा खातिर बहुत रहे, एतने में बिलवा के मन गदगद हो जात रहे, मुस्कात दिन बितत रहे। ई एहसान धर्मेश के मेहरारू के जिनगी भर याद रखी ऊ। ओकरा त अब ले आपन जिंदगी आ दिहाड़ी मजदूरी से भी कभी कोई शिकायत ना भइल रहे मगर एने कुछ दिन से ढंग के घर ना रहला से बिलवा दुःखी होके झल्लात रहत रहे। केतना सपनात रहे ऊ कि एही लगन में बियाह कईके लक्ष्मी के कुछ दिन खातिर दिल्ली ले आई। लाल किला आ इंडिया गेट देखके त लक्ष्मी एकदम से बउरा जाई पगली। कबहूँ सोंचलहूँ ना होई दिल्ली घूमे के। सोच-सोच मुस्कुराई बिलवा। गांव के कई गो लईका लोग पंजाब, दिल्ली आ मुंबई जाके काम करत रहे लोग, अच्छा पइसा भी कमात रहे लोग बाकिर केहू आपन जोरू के संगे ले के घुमावत ना रहे।

बाकिर बिलवा त हट के सोचत रहे। सोचत रहे कि लक्ष्मी के हाथ पकड़के दिल्ली में बस पर चढ़ाके घुमावे ले जाई। गांव के लोग ओकरा पर हँसी त हँसे। जोरू के गुलाम कही त कहे, ओसे कवनो फर्क ना पड़ी। मगर बीच में ई साला अधिकारी लोग ओकर सपनवे सब के बेड़ा गरक कर गइलन सन। एकर कइल का जा सकेला अब ..... ई चिमचिमी वाला घर में उ लक्ष्मी के कइसे ले आई..... ना रे ना। अब उ ओवरटाइम काम करके ढेर पइसा कमा कमा के जोड़ी। बड़का साहेब से काल्हे बात कर के देखी। सोचत-सोचत पता ना कब बिलवा के आंख लग गइल। ओही रतिया जब बिलवा लक्ष्मी के झील जइसन गहिर आंख में डूबत उतरात रहे तबे एगो अनहोनी घटना घट गइल। अचानक ओकरा बुझाइल जे ओकर देहिया हलुक होके आकाश के ओर जाता, ऊपर आउर ऊपर आकाश में उड़ रहल बा। देखलस कि ओकर लक्ष्मी आपन खटिया पर सुतल बाड़ी ..... बिलवा कबे से उनका के जगा रहल बा ''ए लक्ष्मी.... ए लक्ष्मी काहें नइखू बोलत? देख हम आइल बानी बिलवा दिल्ली से ...'' मगर कुछ भी जवाब नइखे मिलत। सब कुछ अचरज से भरल बा, ओकरा के हरानी में डाल रहल बा। केहू हमार आवाज काहें नइखे सुन पावत?

बिहान भइला देश के कुल अखबार में सबसे ऊपर में एगो समाचार लागल रहे- ''राजधानी दिल्ली के कश्मीरी मेट्रो स्टेशन के नजदीक में जो पुल निमार्णाधीन था वो किसी तकनीकी कारण की वजह से चरमरा कर गिर पड़ा है। आउर ओकरा ठीक नीचे एगो और खबर रहे ''फ्लाइओवर जो अभी निमार्णाधीन था, के नीचे कुछ मजदूर मृत पाए गए। सरकार सभी मृतकों को दो दो लाख मुआवजा देगी और घायलों को तुरंत सरकारी अस्पताल तक पहुंचाने के लिए सरकार और प्रशासन बड़ी ही मुस्तैदी के साथ लगी हुई है।'' बिलवा के लाश क्षत-विक्षत हालत में पड़ल बा। चारो तरफ कोहराम मचल बा। प्रशासन मलबा से लाश निकाले में लागल बाटे। ✱✱✱

दूध पिआई

जिनगी के चऊथा पड़ाव में साठ बरिस के जसोदा के देह के बनावट आ उनकर मीठ सुभाव से कोई ई नइखे कह सकत कि उनका कवनो दुख भा पीड़ा बा। अन्हार कोठरी में चईत के अइसन लहलहात गरमी में एगो चदर से मुंह ढंपले ऊ बिछौना पर पड़ल बाड़ी। मन बहुत बेचैन बा।

दामोदर लाल का अपना पत्नी के एह तरह देखल तनिको नइखे भावत। ऊ कवनो ना कवनो बहाने कोठरी में आवत जात बाड़ें, ना त बाहरे चहलकदमी कर रहल बाड़ें। दामोदर जी आज आपन रूसल मेहरारू के कवनो तरे मना नइखन पावत काहे कि अबहीं ऊ जवन दुख झेल रहल बाड़ी ऊ एगो मतारी के अलावे कोई नइखे समझ सकत।

छोट भाई बिसंभरो के फोन बार-बार आ रहल बा। उनकरो के दामोदर जी कवनो ना कवनो बहाने संभरले बाड़ें। आज उनकरा घर में बहुत बड़हन खुशी होखे वाला बा। उनकर भतीजा माधव आज दूल्हा बने जा रहल बाड़ें।

फोन पर ही उनकरा छोट भाई के घर के चहल-पहल के आवाजो आ रहल बड्डुए। सगरे मेहमान पहुंच चुकल बा लोग। दामोदर जी के बेटा राघवो आपन पत्नी के साथ माधव के बियाह में शामिल होखे खातिर बम्बई से पहुंच गइल बाड़ें।

दामोदर जी मनावस त कइसे मनावस। ऊ अपना पत्नी के सिरहाने आके बइठ के उनकर केस सहलावत कहे लगलन कि...'देखऽ जसोदा हम तोहरा एह रिस्ता के बीच में कभी ना अइनी आ ना कबो आइब, हमरा बुझाता कि आजु के रात भविष्य में बहुत दिन तक तोहरा के दुखी करे वाला बाऽ..!'

तबहिंए फोन के फेर घंटी बाजल। माधव के फोन रहे। बड़ा रूआंसल आवाज आइल, 'बड़का बाबूजी एक बार अम्मा से बात करा दीं ही।
उनकर आशीर्वाद के बिना हम बिआह करे कइसे जाइब....?'

दामोदर जी कांपत आवाज में कहलें ..'हम कोसिस करतानी बेटा..! तोहार माइयो बेचैन बाड़ी, बाकी जाहिर नइखी करत।'

तब जसोदा उठके फोन कान से लगा लेहली, ओने से माधव के रूधंल आवाज आइल, 'माई हम दूल्हा त बन गइनी लेकिन अब दूध पिआई के रसम के करी, तुहीं बताव ..? तोहरे नू इच्छा रहे कि राघव भइया के शादी के बाद हमहूँ बिआह कर लीं, अब तू हीं हमरा अकेले कर देलु अम्मा.. आओ ना माँ.. प्लीज। '" दुनों तरफ से सिसकारी के आवाज आवे लागल।

दामोदर जी उहाँ खड़ा होके माई बेटा के बात सुनके भाव विभोर होखे लगलन। जसोदा से कहे लगलन 'देखऽ तू बहुत खीसा-खीसी कर लेलू, बड़ा भाग से ऊ बचवा का जिनगी में आज ई सुभ दिन आइल बा। देवता-पित्तर से तोहार गुहार, विनती, उपास और व्रते के ई परिणाम ह कि माधव आज आपन घर बसावे जा रहल बा। तू मन से सब मइल के निकाल द, चलऽ अब इ आपन परण तुड़ऽ, उठऽ जा आ ओकरा आपन स्नेह दऽ।

जसोदा रोअत-रोअत उठली आ दामोदर जी से कहली..'एक बेरा मुनिया के हमरा भीरी भेजीं। मुनिया जसोदा जी के घरे लड़िकाइये से रहल रहे देखभाल करे लागी। मुनिया आके पूछलस 'का भइल अम्मा..?' जसोदा कहली-'ए मुनिया सुन! जल्दी से बक्सा से हमार कथ्था वाला बनारसी साड़ी निकाल दे'का अम्मा ..रूसल हो गइल राउर.. हम तऽ बुझते रहीं कि ई खीस कपूर लेखा बा..'!

'अच्छा हो हमार चाची.. हाली करऽ' ... मुनियां जसोदा जी के सेवा में रहते-रहते तनी मुहलग्गु हो गइल रहे।

'अभी निकाल दे तानी अम्मा...!'
मुनिया का कोठरी से चल गइला का बाद जसोदा साड़ी हाथ में पकड़ ले ली। बीतल दिन का इयाद में भुला गइली..!

तीस साल पहिले बाबा आ माई जसोदा आ उनकर छोट बहिन के शादी एकही घर में कइले रहे। जसोदा बड़ रही अउर वृंदा छोट। वृंदा बहुते चंचल आ सुंदर रहली। बाबा के इहे कहनाम रहे कि दुनों बहिन सुरूऐ से एके संघे खेलल, खाइल, कबो झगड़ो ना भइल दुनों बहिन में। एहनी के बिआहो एके घर में होइत त कतना अच्छा होइत। संजोग से अइसन घर मिल गइल। दामोदर आ विसंभर, दुनों कुंवर बिल्कुल राम-लखन के जइसन दु भाई। दामोदर जी गंभीर आ विशंभर तेजस्वी। दामोदरजी से जसोदा के, विसंभर से वृंदा के बिआह भइल।

दुनू भाई सरकारी कार्यालय में बढ़िया-उम्दा पद पर काम करत रहलें।
एगो अउर सुखद संयोग रहे कि दुनों भाई के नौकरियो एके शहर में रहे। आपन बाबूजी के बनावल बड़हन हवेली जइसन घर में दोनों परिवार हँसी खुशी रहत रहे। एने दुनों बहिनों के गहना आ कपड़ा-लत्ता एके जइसन बनत रहे, ससुरालो में और नईहरो में।

नाम: सुनीता श्रीवास्तव 'जागृति'
जन्मतिथि: 18 नवंबर, 1963
संपर्क: राँची

गृहस्थी के गाड़ी बड़ा अच्छा से चलत रहे। जसोदा का राघव के जनम देला का छः महीने के बाद वृन्दो गर्भवती हो गइली आ माधव के जनम भइल। माधव के जनम के बादे से का जाने का भइल कि बृंदा बड़ा बेमार रहे लगली, दिन पर दिन देह कमजोर होत गइल, एकदम बिछौना से सट गइली। बेमारी के पते ना चलत रहे। कतना डागदर, वैद से देखावल गइल। जसोदा मतारी लेखा जीव जान लगा के बृंदा के सेवा करे लगली। माधव अभी छवो महीना के ना रहस। डॉक्टर आ बैद के सब सुई-दवाई बेकार हो गइल। वृंदा के बचावल ना जा सकल।

वृंदा के मरला का बाद जसोदा माधव के कलेजा से लगा लिहली। आपन दूध पीआके बड़ कइली। जसोदा आपन बेटा राघव से जादे माधव के देख भाल में रहली। माधव जब चार साल के भइलन त विसंभर के बदली दूसर शहर में हो गइल। विसंभर का आपन बेटा के छोड़के जाए के पड़ल। माधव उनका जीवन के अनमोल प्यार रहे।

राधव अउर माधव के बालसुलभ चंचलता के देखके पूरा परिवार भाव-विभोर हो जात रहे। माधव त जसोदा के आंख के तारे रहन। दोसर शहर में विसंभर के खाए पिए में बड़ी तकलीफ होखे लागल। भाई के अकेलापन के देखके दिन-रात दामोदर जी के मन कचोटत रहे। विसंभर के खाना पीना के व्यवस्था गड़बड़इला से उनका स्वास्थ्य पर असर पड़े लागल रहे। अकेले अइसे गृहस्थी कतना दिन चली ..? इहे सोच के दामोदर जी भाई के बहुत समझइनी कि अब दोसर शादी कर लऽ। परिवार आ दोस्तन के समझवला पर विसंभर दोसर बिआह खातिर तइयार हो गइलन।

एगो गरीब घर के लड़की से विसंभर के बिआह हो गइल। जसोदा त दिल से बड़ा उदार आ नरम रहले रही, ऊ सावित्रियों के स्वागत बिल्कुल अपनी छोट बहिन वृन्दा के जइसन कइली। बड़ा प्यार से सब चीज सिखावत रही। लेकिन सावित्री अल्पज्ञानी, उनकर मन ना खाना बनावे में लागत रहे ना कवनो दोसरा काम में। ऊ हरमेशा विसंभर के आगे-पीछे घूमत रहस। उनकर सब नादानी सब कोई माफो क देत रहे। लेकिन विसंभर उनका एह व्यवहार से बहुत चिंतित आ व्यथित रहे लगलन। सावित्री के ज्यादा ध्यान खाली सिंगार पटार में रहत रहे। माधवो पर आपन हक जमावे का चलते कइसनो बात पर ऊ जसोदा से उलझ जास। जसोदा अगर बीच बचाव करस, त सावित्री दिन भर खनो ना खास आ मुँह फुला के आपन कोठरी में बंद हो जास।

छह बरिस के माधव ना त आपन मौसी अम्मा के पास रह पवलें आ ना अपना नयकी माई के पास। विसंभर के अच्छा-भला जिंदगी में सावित्री कलह के पिटारा लेके घुसली। भाई के गृहस्थी के अइसन हाल देखके दामोदर जी अपना के अपराधी माने लगलन। एतना खुशहाल परिवार के ना जाने केकर नजर लाग गइल। जसोदा ऊ मूढ़ औरत के समझावे के लाख कोशिश कइली लेकिन कामयाब ना हो सकली।

सावित्री माधव के लेके विसंभर के नौकरी पर जाये खातिर हमेशा जिद करस ..'हमहूं रउआ साथे चलब आ बउओ के ले चलीं अपना नौकरी पर ऽ.. ऊ बार बार कहस कि लोग हमरा का कही .. माधव के माई हमीं नू हईं, त उ हमनी के हऽ त हमरे साथे नू रही। रउआ ई काम करहीं के पड़ी..!

आखिर विसंभर अइसना कलही मेहरारू के आगे हार गइलन। उहां सावित्री माधव के कबो ठीक से पढ़े ना देस, ओकर पढ़ाई में व्यवधान डाले खातिर कुछ ना कुछो बहाना से घर का काम करावस ना त बाहर भा बाजार भेजस आ दउड़ावस।

विसंभर के आँखि से ई बात छुपल ना रह पाइल। माधव आपन ई कुल दुख के अपना जसोदा अम्मा से चिठ्ठी में लिखके बतावत रहन।

जसोदा के समझवला पर सावित्री दू टूक जवाब देइए दिहली, 'माधव त हमनी के बेटा ह आ ओकरा हम जइसे रखीं, मर के चाहे जी के। हमरे साथे नू रही।'

विसंभर फैसला ना कर पावस कि का करे के चाहीं। हार-थाक के माधव के बोर्डिंग स्कूल में डाल दिहलन। माधव बड़ा गंभीर लड़िका रहन। ऊ चुपचाप हर फैसला के मानत रहस लेकिन उनका मन में अपना मउसी-माई के बहुते इयाद आवे, बाकिर घर के शांति खातिर उहो चुप्पी साध लेलें। कभी-कभी अकेले में एगो बजरंग बली के मंदिर पर जाके खूब रो लेस।

दिन गुजरत गइल सावित्री के अउरो बाल-बच्चा भइल। ऊ आपन गृहस्थी में रम गइली। लेकिन जसोदा हमेसा माधव के इयाद में घुलत रहस। चुपके-चुपके दुनों माई बेटा मिलत रहे, उनकर प्यार बनल रहल।

सावित्री के दुर्व्यवहार से अउर माधव के उहाँ ना रहे से जसोदा कबहूँ विसंभर का घरे ना गइली। उनकर इ फैसला के विसंभर भी आदर से स्वीकार कइलन। माधव अपना बापे अइसन तेज रहलें। ऊ हर क्लास में अउअल नंबर से सफलता पइलें। पढ़ाई का बाद एगो बढ़िया से नउकरियो लाग गइल।

अब अच्छा-अच्छा घर से रिस्ता आवे लगल। बढ़िया परिवार देख के विसंभर माधव के बिआह तय कर दिहलन।

माधव आज बिआह करे जात बाड़ें। बिआह के सगरी रसम विसंभर के नयका बंगला पर होत रहे। बारात निकले वाला रहे एही बीचे बड़-बुढ्ढी लोग कहे लागल कि अब 'दूध पिआई' के रसम खातिर माई आवस। तब हीं नु बरतिया आगे बढ़ी। समय भागल जात रहे। नइकी माई के दुर्व्यवहार से माधव के हृदय अतना विदीर्ण हो गइल रहे कि उ कभी कलही सावित्री से रिस्ता के कवनो नाम ना देहलें। आपन जसोदा अम्मा के जुदाई के दंश के भुला ना पावत रहस। सावित्री एगो कोना में खाड़ रही। माधव मने मन कहलन इहाँ हमार के आपन बा। हमार माई एह दुनिया में कहाँ बाड़ी ..? माधव उदास हो गइलन। आज उनका अपना माई के बहुत याद आवत रहे। आजतक त मतारी का छवि में जसोदा के अलावा कोई ना बसल।

जसोदा उहे कथ्था बनारसी साड़ी पहिनली आ दामोदर जी से कहली..' चलीं, हाली से आपन जीप निकालीं। सांझ होखे से पहिले हमनीका उहाँ पहुँच जाइब। लेकिन हमरा भीतरी जाए के मत कहब बुझनी नू।

दामोदरजी जसोदा के हर शर्त माने के तइयार रहन, एह फैसला से ऊ खुश रहन। झट से जीप निकाल के कहलन ..'जइसन तोहार मर्जी। बस आज माधव के आपन दूध के कर्ज से मुक्त कर दऽ।' जसोदा दामोदरजी के कंधा पर माथा राख के जोर-जोर से रोये लगली...। ✷✷✷

लौट आइल बुधिया

घर छोड़ के भागल बुधिया आज पांच साल बाद अपना गांव अपना घरे लौट आइल रहे। ना जाने ई बुधिया कवन गियान लेके आइल बा सगरों गांव में ईहे चरचा शुरू हो गइल रहे। महतारी त देखते लाठी लेके दउड़इली, बाकि बुधिया के बाबू उनका के केहू लेखा समझा बुझा के रोक लेहलन। महतारी के आंख के लोर सुखते ना रहे। ऊ पांच बरिस के एक-एक रात कइसे कटले बाड़ी ई उनका के छोड के दुसर केहू ना समझ सकेला। घर में जवान पतोह के सजे-संवरे के उमर में मुरझाइल मुंह देख के बुधिया के माई के करेजा फाटे लागत रहे। एह पाप के भागी उ अपने के मानस, काहे कि उहे जिद कके बुधिया के बियाह कमली अइसन सुनर आ सुशील लइकी से कइले रहली। पढत लईकी के पढ़ाई छूटल आ ई करम जरुआ घर से भाग के कमली के जिन्दगी खराब कर देहलस।

माई बाप के इकलौता संतान के चलते बुधिया लाड़-प्यार में तनी सोख हो गइल रहे। केतना देवी-देवता के भारा भखला के बाद बियाह के नौ साल बाद ओकर जनम भइल त गांव भर लड्डू अउर जलेबी बंटाइल रहे। बाप अपने खेत पर जास, गईया के चारा पानी माई बाप मिल के करस। बुधिया के स्कूल भेज के पढ़ाके बड़का आदमी बनावे के सरधा रहे। बाकिर उ त स्कूल से भाग के बगाइल चले। ना कवनो कामे सिखलस, ना पढबे कइलस। केहू तरे बोर्ड पास कर गइल त आगे नीमन करीये जाई, एह भरोसा पर कमली के बाप खुसी-खुसी सादी करे के तइयार हो गइलन।

माई बाप सोचलस कि सुनर मेहरारू आ गइल, अब जिमेदारी बूझी। अब ओकरा त आराम के चसका लागल रहे, ओपर से सुनर मेहरारू। अब घर से बाहर अऊरी ना निकले। कमली के पहिले त ना बुझाइल, बाकिर धीरे-धीरे समय बीतत बुझाए लागल कि ई ना पढ़े जात बारन, ना कुछउ काम धाम करेके चाहत बारन। अब ई सब देखत-देखत कमली के नीमन ना लागे। आपन मन के बात कमली आपन महतारी से कहलस, तब कमली के माई समझइली कि तोहार मरद ह तू समझावऽ, पर कमली सकुचाए कहे में।

देखते-देखते साल बीतते कमली पेट से हो गइल। बुधिया बाप बने के खुसी में कमली के पकड़ के लागल नाचे आ ओकर माई- बाप के खुसी के ठेकाना ना रहे। बाकिर कमली के आपन जिनगी के साथे-साथे एक अउर आवे वाला के भविष्य के चिंता सतावे लागल।

कमली एक दिन आपन सास से हिम्मत जुटा के एह बात के जिकिर कइलस। सास सुनके कमली पर बरस गइली कि हमनी के जिनगी में तहरा कमी ना होखी। ढेर अकिला मत बनऽ। ई सुन के कमली चुपचाप रह गइल। अब उहो समय आ गइल, जब कमली के बेटा भइल त सास-ससुर आ बुधिया के करेजा जुड़ा गइल। खूब बड़का भोज-भात संउसे गांव के खियावल गइल।

अब बुधिया बेटा के मुंह देख-देख के अउर घर से ना निकले। समय के साथ देखते-देखते कमली के बेटा के साल लाग गइल। बाकिर बुधिया में कौनो सुधार ना भइल। उ निठल्ला के निठल्ला रह गइल। ई सब देखके कमली के आपन त ना बाकिर बेटवा के फिकिर होखे लागल कि एकर भविष्य के का होई। बुधिया के दिन-रात घर में देख के कमली के खीस आवे। ठीके कहल बा मरद सोभे बाहर, मेहरारू अँगना। लेकिन कमली बोल ना सके।

मने मने सोचे कि कइसन एकर बुद्धि बा कि तनिको काम धाम से ना मतलब, ना आपन परिवार के चिन्ता बा। माई-बाबूजी भी समझावत नइखी, दुलारे आन्हर भइल बा। कुछ दिन बाद माई-बाबूजी आठ दस दिन खातिर चल गइनी तिरिथ करे। घर में अब ईहे तीन जन रहले। तभिये बुधिया के बेटा बीमार हो गइल, बोखार से ओकर देह जरत रहे। कमली घबरा गइल, डाक्टर से देखावे के कहलस त ओकरा कौनो मतलब ना। जवन कमली घर से बाहर कभी झांके ना, ऊ दउरल बगल के चाची के घरे। ऊ बेचारी चाची के साथे डाक्टर से देखावे ले गइल। बाकिर बुधिया टस से मस ना भइल। डाक्टर के देहल दवाई बेटा के समय पर कमली देवे लागल जेसे बेटा ठीक होंगे लागल।

चार दिन के बाद बहुते सुधार भइल त तनी कमली के जान में जान आइल। अब बुधिया के बेटा खेलावे के मन हो गइल। जइसे बेटा के उठावे के हाथ लगइलस, कमली के भीतर के खीस बाहर आ गइल। खबरदार जे हमरा बेटा के हाथ लगइलऽ। छुईह जन। बुधिया के बड़का झटका लागल कि आज ई कमली के का हो गइल, ई त कबहूँ जबान ना खोले...! हं ठीक बूझत बाड़ऽ, आज से ई हमार बेटा ह, हमही माई-बाप बानी। जब तोहरा कुछऊ जिम्मेदारिये नइखे त कवन बात के बाप...! एके सांस में कमली एतना दिन के भड़ास आज निकाल देहलस। बुधिया के त जइसे साँप सूंघ गइल। उ सोचलही ना रहे कि कमली कभी मुंह खोली। आज ई रूप देख के ओकर जबान ना खुलल, जइसे ठकुआ मार देलस। औरत आपन दुख सहन कर सकेले बाकिर आपन औलाद खातिर ऊ जमराज से लड़ जाई। बुधिया दनदनाइल घर से निकल गइल, ई कहते कि ते रह अकेले बेटवा

नामः डॉ. निवेदिता श्रीवास्तव 'गार्गी'
जन्मतिथिः 1 जनवरी 1969
प्रकाशित किताबः 35 साझा हिंदी अउर भोजपुरी मिला के आ एगो एकल 'सुनहरे पर्दे के पीछे' हिन्दी कविता किताब
संपर्कः भुइयाडीह, पटेल नगर स्लैग रोड, नीति बाघ कॉलोनी, जमशेदपुर
संप्रतिः संस्था 'कलम की सुगंध', अखिल भारतीय साहित्य परिषद में उपाध्यक्ष अउर कई संस्था में सक्रिय सदस्य।

के लेके। हम घर छोड़ के जात बानी... हं हं त जा ना, रह लेहब। जब तहरा कुछ करही के नइखे त रहऽ चाहे जा। बुधिया बे खइले-पीयले घर से निकल गइल हमेसा खातिर।

मरद के मेहरारू के ताना बर्दास्त ना होखे। आन पर आ जाला। एह बात के धेयान कहां रहे कमली के ? ऊ त सोचलस जइसे माई-बाबूजी के डांट-फटकार से खिसिया के फेर मान जाले, ओसही थोड़े देर घुम फिर के आ जइहें।

दुपहरिया से सांझ आ फेर रात हो गइल, बुधिया ना आइल, तब ओकरा चिन्ता होखे लागल। बगल के चाची के खबर देहलस त खोज-बिन भइल, बाकिर बुधिया के पता ना लागल। नदी किनारे लईका सन बालू में खेलत रहऽसन त ओही में से एगो कहलस कि बुधिया भईया ओह पार गइलन हं। कहत रहस कि बुद्ध बन जाएम, घर छोड़ के जात बानी। हमनी के त मजाक लागल ह, बाकिर का मालूम कि साचहूं ....! अब तक गांव भर में एह बात के चरचा शुरू हो गइल कि कमली के चलते बुधिया घर छोड़ के भाग गइल। कमली हत्यारिन खानी बइठले रह गइल। तब चाची समझा बुझा के सम्हरली। बेटवा खातिर ओकरा हिम्मत करहीं के परी।

दोसरे दिन माई-बाबूजी आ गइल लोग। गांव के सन्नाटा से तनी घबराहट भइल, कोई कुछ ना बोलल। जब घर में घूसल लोग त देखते कमली दहाड़ मार के रोवे लागल। कतनो पूछे लोग तभीयो बोली ना निकले, खाली रोवत जाए। तब चाची सब बात बतवली।

ई सुनके ए लोग के कमली पर तनिको खीस ना भइल। माई कमली के अपना करेजा से लगाके चुप करइली आ कहली कि ई बहुत पहिले हमनी के करे के चाहत रहे, जे ना कर सकली। एह मे तोर कवनो गलती नइखे। आज से तू हमार पतोह ना बिटिया बाडू। अब तहरा आगे के पढ़ाई करे के बा, बेटा के हमनी सम्हारेम। माई के ई रूप देखके कमली देखते रह गइल, ओकरा बिस्वास ना होखे कि उहे माई हई जे बुधिया के खिलाफ केहू बोल देवे त ओकर एको करम ना छोड़स। कमली उदास आ पसचाताप से दुखी माई-बाबूजी के कहलानुसार करे के सोच लेहलस। एक हफ्ता के भीतर ही कमली के स्कूल में नाम लिखा गइल।

अब ऊ तन मन से पढ़ाई में भीड़ गइल। आगे साल बोर्ड के फार्म भरे के रहे। समय के साथ परीक्षा भइल आ संउसे गांव में कमली टॉप कइलस, त माई-बाबूजी के गरब से सिर ऊंचा हो गइल। आगे के पढ़ाई खातिर कॉलेज में नाम लिखा दिहल गइल। इंटर आ बीए जब गांव से पास कर गइल, बीएड करे सहर में नाम लिखा गइल। एने बिटवा भी स्कूल जाए लागल। कमली छुट्टी छपाटी गांव आवत रहे, बिटवा के देख के करेजा छटपटा जाए।

अब ऊहो दिन आ गइल, जब कमली के बीएड पूरा हो गइल आ गांव के ओही स्कूल में मास्टरनी बन के आ गइल। आज सबकर सपना पूरा कर देहलस कमली। पतोह के काम करेवाली सोच के ना लियाई कोई त परिवार में खुशहाली आवे से केहू रोक नइखे सकत। जब खुसी आवेला त सगरो से आवेला। आज बुधिया भी जइसे सवेरे के भुलाइल सांझ के आ गइल। अइसन लागल कि बुधिया आधुनिक बुद्ध बन के लौट आइल। ऊ बुध के गेयान- परिवार छोड़ के बुद्ध बन गइलन जे कबो लौट के ना अइलन आ बुधिया के गेयान भइल त परिवार खातिर घर वापस आ गइल।अब बुधिया बदल गइल रहे। उ कामचोर आलसी बुधिया के जगह जिम्मेदार बेटा, बाप आ पति बन के हर कदम पर साथ देवे वाला बुधिया बन गइल रहे। ✷✷✷

निहारिका

नाम सुनते मन में जइसे कोमल उजाला उतर आवेला। नंदिनी आज ले ना समझ पइली कि ऊ नन्हकी लइकी में अइसन का बात रहे, जवन उनका दिल के पहिलहीं नजर में छू गइल।

ऑफिस से हर महीना वृद्धाश्रम, अनाथालय आ दिव्यांग आश्रम जाए के कार्यक्रम बनत रहेला - लोगन के हिम्मत बढ़ावे, उनकर चेहरा पर मुस्कान ले आवे खातिर। ओही दिन सभे अनाथालय पहुँचल रहे। संचालिका बच्चवन से मिलावत रहली कि अचानक आवाज लगवली-

'निहारिका... हेने आव बाची।' पाँच बरिस के दुबर-पातर लइकी धीरे-धीरे चलत आइल। 'दूध पी लिहलू? होमवर्क कइलू?' - संचालिका प्यार से पूछली। बाकिर निहारिका चुप रहल... ओकर नजर बस नंदिनी पर अटक गइल रहे। ओह नजर में कुछ अइसन रहे - मासूमियत, अपनापन, जइसे कवनो पुरान नाता जाग उठल होखे।

नंदिनी वापस त आ गइली, बाकिर उनका मन में ऊ चेहरा अटक गइल। पूरा महीना बीत गइल, बाकिर निहारिका के आँख ओकरा के भूले ना देत रहे। जब अगिला बेर अनाथालय जाए के कार्यक्रम बनल त नंदिनी के नाम सूची में ना रहे, त ऊ बहुत कह-सुन के आपन नाम जुड़वा लिहली।

ए बेर जब ऊ पहुँचली, संचालिका धीरे से कहली- 'अच्छा भइल रउआ आ गइनी... हम रउआ के कुछ बतावे के चाहत बानी। रउआ गइला के बाद से निहारिका रोज दस मिनट कॉरिडोर में खड़ा होके राउर फोटो देखेले... ओकरा के छूयेले.. पता ना ओकरा मन में का बा, बाकिर कुछ त जरूर बा...'

ई सुनके नंदिनी के आँख भींज गइल। उनको भीतर अइसने कुछ उमड़त-घुमड़त रहे। फेर निहारिका के बुलावल गइल। ए बेर ऊ थोड़ा अउरी करीब आइल... धीरे से नंदिनी के गाल छूअलस... जइसे बरिसन के अपनापन होखे... आ फेर चुपचाप चल गइल।

ओही पल नंदिनी एगो ठोस फैसला कइली - अब ऊ निहारिका के अपना घर ले अइहें। गोद लेवे के सगरी प्रक्रिया शुरू भइल... कागजी काम पूरा भइल...आ आखिर ऊ दिन आ गइल जब नंदिनी अपना नन्हीं परी के घर ले आवे खातिर तइयार रहली। ऊ आपन गाड़ी के फूल आ बलून से सजा लिहली... मन में हजार सपना संजो के अनाथालय पहुँचली।

बाकिर आज माहौल कुछ अलग रहे... संचालिका के चेहरा बुझाइल रहे। 'का भइल?' - नंदिनी घबरा के पूछली -

संचालिका के आँख भर आइल- 'हम... हम निहारिका के जिंदा रउआ के ना दे पाईब ... काल्हे रात ऊ दुनिया छोड़ के चल गइली...'

एक्के बेरी में जइसे सब कुछ खाली हो गइल।

जवन गाड़ी में ऊ जिनगी ले जाए के सपना देखले रहली... ओही गाड़ी में आज विदाई देवे के घड़ी आ गइल।

ओह दिन नंदिनी के कहानी सच में अधूरा रह गइल। समय बीतत रहल... बाकिर नंदिनी ओही जगह पर ठहर गइली। नींद उनका आँख से गायब हो गइल... हर घड़ी निहारिका के चेहरा, ओकर सपना...

ऊ अपना कमरा के नाम रख लिहली - 'निहारिका ड्रीम हाउस' ...
जइसे ऊ आजो ओही में बसल होखे। घरवाला आ परिवार हर तरीका से उनका के संभाले के कोशिश करत रहल, बाकिर दिल के खालीपन ना भराइल। एक रात ऊ अपना पति से कहली- 'आज निहारिका सपना में आइल रहे... कहत रहे–हम त बस तोहरा घर में आइल चाहऽतानी, बाकिर तू हमरा के ले ना अइलू ...'

धीरे-धीरे ई सपना उनका मन में घर कर गइल। अब हर पल नंदिनी के लागे लागल कि निहारिका कहीं ना कहीं उनका से जुड़ल बाड़ी । आ फेर...एगो दिन खुशखबरी मिलल- नंदिनी माई बने वाली रहली...
जवन उम्मीद लगभग खत्म हो गइल रहे, ऊ फेर से जिंदा हो गइल।

नौ महीना उम्मीद आ इंतजार में बीत गइल...
हर दिन नंदिनी ओह अनदेखल जीवन में निहारिका के छवि देखे के कोशिश करत रहली।

आ आखिर ऊ दिन आ गइल- घर में किलकारी गूँज उठल। जब नंदिनी पहिल बेर ओह बच्ची के देखली, ऊ ठिठक गइली ...
उहे आँख... उहे मासूमियत...
जइसे निहारिका फेर से लौट आइल होखे। ऊ बिना देरी कइले ओकर नाम रख दिहली- निहारिका। अब नंदिनी के मन में एगो अजीब सुकून रहे। जइसे उनका अधूरा कहानी के नया मतलब मिल गइल होखे।

उनका बुझाइल -कुछ रिश्ता जनम से ना बनेला...
ऊ आत्मा से जुड़ेला...
आ फेर कवनो ना कवनो रूप में, वापस जरूर आवेला।✷✷✷

नाम: सविता सिंह मीरा
जन्मतिथि: 23 सितम्बर 1969
प्रकाशित किताब: गुल्लक-काव्य संग्रह, मन की कही - गद्य संग्रह
संपर्क: 29,आलोकनन्दा अपार्टमेंट, फ्लैट नं. ०/1 अलोक विहार, घोड़ाबंधा, टेल्को, जमशेदपुर

महिला रचनाकार अंक -7 / कहानी-संग्रह

डॉ. दीप्ति

मन के कोना

आज उहे दिन ह जवने दिनवा पर नइहर के अंतिम खंभा भी ढह गइल रहे। अनायास आज कमली के मन बरिसो पहिले के समय में घूमे लागल। का दिन रहे ऊ बालपन के, मन आजाद चिरई बनके घूमत आ विचरत रहे। लइकाईं में कमली के छोट कंधा पर घर के कामो के भार बढत गइल, संघे-संघे पढाई त रहले रहे। कमली के त यादो नइखे जे ऊ कब से अपना माई के संघे चउका के काम के देखरेख करे लगली! बाकी बहुते बढ़िया समय रहे।

गते-गते समय बीतत गइल। कमलिओ कवलेज में चल गइल। कमली के आगे एगो नया चैलेंज आवे के रहे। ओकर आपन एकलौता भाई कवनो दोसर जात में बिआह खातिर तुड़ाइल रहन आ माई आ बाबूजी पर दबाव बनावत रहन। अब त माई चिंते में रहे लगली कि हमरा कमली के बिआह कइसे होई। माई अपना मन के बात परिवार के आगा रखली कि पहिले कमली के बिआह क के ही ओकर बड़ भाई आपन बिआह करस। अइसहीं भइल। आनन-फानन में लइका खोजाइल आ कमली के बिआह के तइयारी होखे लागल। कमली आगे पढ़े के चाहत रहे। ओकरा भीतर कुछुओ बने के जज्बा रहे, उ पढ़े में नीमन रहे, होनहार रहे। ओकर शौख कविता कहानी लेखनी, बागवानी आ नृत्य रहे। अब ओकर सभ पढ़ाई भा शौख धइले रह गइल। कमली में कुछो बने के जज्बा रहे। ओकर ई मंसा के माई-बाप आ परिवार मिलके फँसरी लगा देलस लोग। का रुढिवादी समाज में बेटी के आपन मन के बात रखे के अधिकार नइखे? शायद ओह जमाना में ना रहे।

एने कमली के बिआह भइल आ ओकरा बाद ओकर भाई के कोर्ट मैरिज हो गइल। कमली नया पारी खेले खातिर नया घर में तइयार हो गइल। विपरीत माहौल के भी खुशनुमा बनावे में ऊ कवनो कोर-कसर ना छोड़लस। बारहवीं पास कमली आपन नया घर परिवार के संघे आपन पढाईओ करे लागल आ डबल एम.ए, ओकरा बाद पी एच डी भी कइलस आ बन गइल डा.कमली। ई सफर तय करे में ओकर ससुराल बहुते साथ दिहलख बाकी एतना सफर तय करे में तीन दशक बीत गइल। आपन बचवनो के ऊ उच्च शिक्षा दियवलस, आ उहो सब आपन पैर पर खड़ा बाड़न स।

कमली के बाबूजी के असमय गइला से नइहर के जे तनी मनी लस रहे उ भकभकात बुझाइल। बाकी इहे भाई रहले जिनका से नइहर के दिया टिमटिमात रहे। भगवान उहो दिया बुता दिहले। अँखिअन के लोर रूके के नाम ना लेत रहे। खुशी, गम, दरद, बिछोह जइसन शब्द जिनिगी में अइसन रचल-बसल बा कि गाहे-बगाहे ई सभे से भेंट होते रहेला। भाई के गइला अभी कुछुये महीना भइल रहे। कमली के एक गोड़ अपना घर में त एक गोड़ माई का लगे। माई कमली के संघे ओकरा ससुराल में रहे खातिर ना तइयार भइली। अचानके छोटकी बहिन माई के अपना लगे दोसर सहर में ले जाए खातिर आ गइल। ओकर तर्क रहे कि माई के सवांग के बीच में रहे से सेहत ठीक रही। साफ दिल के कमली आपने बहिन के गलत मंशा ना चिन्ह सकल। माई के गइला महीना के कहो, सालो बीत गइल।

आज आपने माई के बोली सुने खातिर कमली के मन हहर जाता। ओकरा परिवारो में सास आ ससुर ई लोक छोड़ दिहलस लोग। बाँच गइल कमली मरद मेहरारु आ ओकर लइका सब। देखावेले ना कमली बाकी भीतरे-भीतर घुलत जात बिआ ऊ। रोजे माई के मोबाइल पर एक फेरा जरुरे फोन लगावेले बाकिर केहू कवनो रिस्पोंस ना देवे, फोन उठावल त दूर के बात ह।

काहे, माई के हमार बहिन आ बहनोई हाइजैक क लेले बाड़े स, कारण अब बुझाइल। भाई एगो मोटा अमाउंट माई के नावें रखले रहलें, बाबूजी के मोटा पेंशन रहे। भाई के गइला के बाद ओही पइसा पर नजर रहे। पइसवा त हडपिइये लिहले स आ माई के भी आपने समाज से काट दिहले स। रिश्ता से बढके आज पइसा हो गइल!

मोबाइल के घंटी बजला से कमली वर्तमान में आ गइल, अपना सोच अपना चिंता से बाहर। माझिल बहिन के फोन रहे। ऊ कहलस कि माई से हमरो बात नइखे हो पावत बाकी पता चलल बा कि उनकर तबियत बहुत सही नइखे रहत।

बाबूजी के गइला के बादो भाई रहन कि गाहे-बगाहे नईहर माने अपना घरे बोलावल ना भुलात रहस। कंहवा गइल ऊ दिन? आज पाछे मुड़के देखला पर कुछुओ नइखे लउकत। कमली के मन बहुत विचलित बा। एकर असर ओकरा तबियत पर लउकत बा। कमली के गिरत सेहत देखके ओकर दुल्हा आ ओकर छोट बहिन समझवलख लोग कि आपन हाथ में जब कुछुओ नइखे त आपन ध्यान अपना काम पर लगावऽ। आपन गिरहस्ती, सामाजिक काम पर लगावऽ। बहिन कहलख कि कमली दी अब हमनी एक दूसरा के नईहर बन के रहब, एक दूसरा के देखब। माई अपनो से जब आवे के कोशिश नइखी करत त ओने से आपन ध्यान हटावे के पड़ी, तबे मन के कसक दूर होई दीदी। कमली सोचे पर मजबूर हो गइल एके माई बाप से जनमल तीनों बहिन के संस्कार कइसे अलग हो गइल?

आज आपन बहिन के परिपक्व बात सुनके कमली रोए लागल आ अपना मन के समझवलख कि ए मन तू रेंगनी के कांट खानी बनके मत रहऽ, समय के हिसाब से बदलऽ अपना आप के आ अपना मन के भी। बाकी मन के कवनो कोना में हूक त उठते रही। नासूर बनके चुभते रही। हे भगवान अइसन दिन केहू के मत देखइहऽ! केहू माई बेटी के मन के कवनो कोना में अन्हरिया मत फइलइहऽ। ✷✷✷

नाम: डॉ. दीप्ति
जन्म तिथि: 02 जनवरी 1971
स्थाई पता: 106, यशोदा अपार्टमेंट, दीघा, पटना-800011
प्रकाशित किताब: काव्य संग्रह 'मन'
संप्रति: अर्थशास्त्र शिक्षिका, हायर सेकेंडरी, सेंट डामिनिक सेवियोज हाई स्कूल, पटना

गदबेरा

का हो दीदिया! कइसन पतोह उतरले बाड़ू! लमघोड़ी.. तनिको बुझाता काले के पतोह हिय।

'अब रहे द.. ढेर बोललू। तोहार पतोहिया कइसन बिया! खिड़लिच खनिया.. बुझाला कहियो अन्न से भेंटे नइखे भइल। दोसरा के केतना ताकेलू।'

दुनु जाने के झींक लगावल फुआ के तनिको सोहात ना रहे। सुनत-सुनत एके बेर बीखे धइली - 'रे त तोनी के कवन सुभइत रहलु सन। चिल्होर खानी त रहलु सन। ए घरे लात धइलु सन त भाग चमक गइल।'

अब त ल ना.. मुँह फुल्ला-फुल्ली सुरु हो गइल। जग परोजन के घर आ एही में एकनी के कोहनाइल। अब के चुल्हानी जाता, के भात पसावता, के चाउर फटकता। एकनी के लीला देख के त बाई उपट जाता। फुआ के त सारा मलिकाव फेलिया गइल रहे।

अकेले का का करस। एने हजामिन के निमने लुगा चाहीं। अब जे आइल बा पहुनाई से नेवता में, उहे नु दियाई आकि अब इनका खातिर नौलख्खा किनाव-

'बढ़नी मारो..लेबु त ल, ना त उफर पर। हमरा ना जानगर बा, ना एतना धन बा जे उझील दीं तोहरा के।'

'मलकिनी! निमन लुग्गा दीं। बेटी बियहे के बा। हम कहवाँ से करजा काढ़ीं? रउए लोगिन के नु असरा बा। कुछु मदद होखो पंच के।'

फुआ के जिनगी के कवनो ओर-छोर ना रहे। अभी अपना माई के गोदिये में रहली कि परदादा बियह देहलें। उनका सुध कन्यादान करे के रहे। पोती के जांघ पर बइठा के पबितर कन्यादान करे के रहे। कन्यादान क के अपने त गंगा नहा लेहलें बाकिर पोती के भाग डुबा देहलें। गवना के पहिलहीं फूफा के टीबी हो गइल। फुआ के हाथ-बाँह धरे वाला फूफा फेर लवट के ना अइलें।

सात बरीस बाद फुआ के लोटा संघे गवना भइल बाकिर ससुरा में उनके कवनो मान-जान ना भइल। उनका देवरू के बियाह में भाई भार-भरहुत ले के गइल रहलें। फुआ के दुरदसा देखि के उनके करेजा फाट गइल। ओकनीं के एक कवर निरइठ अन खाए के ना द स फुआ के। फुआ से निमन त उहाँ के दाई-लवड़िन लउक सन।

देवरू के बियाह निफरला पर भाई बिदा करा के संघे लेले अइलें। तब से उनका ससुरा से ना कवनो बोलावे अइलें सन, ना कहियो भाई उनका के भेजलें। फुआ जुगजुगान खतिरा इहवें रह गइली।

भाई-भउजाई जले जियलस लोग फुआ के तरहथिए पर रखलस लोग। बाकिर बरहमा के लिखल करम के मिटा सकता! पारा पारी दुनु जने मर बिला गइल लोग।

फुआ के लगे बड़ा गहना रहे- हँसुली, गोड़हरा, पहुँची, मोट-मोट गर के सीकड़, भारी कनफूल। गहना के एगो पेटिए रहे फुआ लगे। नइहर, ससुरा के ढेर गहना रहे उनका लगे।

फुआ के गहना पहिने के बड़ी सौख रहे। कबो-कबो पहिनियो लेस। फुआ के पावजेब, बिछिया बड़ी भावे। कबो पहिन लेस त पुरनिया लोग मार-मार करे - 'देख स रे! एकरा बिछिया पहिने के सवख लागल बा। केकरा पर बिछिया पहिनबे रे!'

बाकिर फुओ रहली पक्का करेजा वाली। भाई के कोठी, असबाब, बाल-बच्चा के जिनगी से बढ़ के मनली। ओकनी के माई से कम दुलार ना देहली। हजमिनिया जानत रहे कि फुआ के बोली बीख ह, बाकिर फुआ करेजा से मयगर हई।

अपना कोठरी के झरोखा से नएकी पतोहिया सब देखत सुनत रहे। खवासिन दुआरिये पर बइठल रहे-

'तनिका सुनी त! उनका के एगो लुगा दे दीं। हमरा नइहर से ढेर लुगा आइल बा।'

'ए बहुरिया! तू बीच में का परल बाड़ू। फुआ के मलिकाव ह, उनके के देखे द। फुआ के जब उपटेला, त केहू के मान में ना आवेली।'

हजामिन किहाँ लइका वाला अइलें सन। लड़की कलसा ले के ओकनीं के सोझा ठड़ा भइल। लड़की के चलवा के देखलें सन, बोलवा के सुनलें सन, इस्लेट पर नाव गाँव लिखवइले सन।

ए बात के कुछ दिन बीत गइल रहे। घर के चरचा बहुरिया के कान में त परबे करे। एक दिन फुआ गंगा नहाए तिरवेनी गइल रहली। घर के खवासिन

नाम: शुभ्रा मिश्रा
जन्म तिथि: 17 दिसंबर 1974
स्थायी पता: बेतिया, प० चम्पारण, बिहार

से हजामिन के बोलाहट भइल-

'राउर बेटी का करेली? पढ़ल-लिखल बाड़ी?'

'हँ! ए कनिया! मटरिक ले पढ़ले बिया। आगे पढ़े के कहेले बाकिर अब बियाह में पइसा झोंकीं आकि पढ़ाई में? पढ़ियो के त माटी झेंटी करहीं के बा।'

'हमरा लगे लेया के भेंट कराईं। हम बतियावतानी ओकरा से।'

इहो बात बितले महीना भर हो गइल। बियाह के दिनों तय भइल। बाकिर बहुरिया के मन में बड़ा खुदबुदी रहे। हजामिन के घर कवनो नगीचा त रहे ना। एक दिन गदबेरा में बहुरिया चहुँप गइली हजामिन किहाँ -

'क्या नाम है तुम्हारा?'

'अंजलि'

'अभी ब्याह क्यों कर रही हो? अभी तो तुम्हारी उमर भी नहीं हुई है।'

'का करें भउजी! हमारी बात सुनने वाला कोई नहीं।'

'मत करो बियाह..आगे पढ़ो।'

'हमारा बियाह तो एगो ओटो डराइबर से हो रहा है। उ पढ़लो लिखल नहीं है।'

बहुरिया लवट के घरे त आ गइली, बाकिर मन अथिर ना रहे। दिन रात सोच लागल रहे कि केहुतरे बियाह टर जाओ। बाकिर फुआ जी के आगे केहू के चले ना -

'का हो! अभिन चार दिन तोहरा अइले ना भइल, आ गोड़ बहरी निकले लागल। कवना घर के हऊ। एगो रहन नइखु सिखले।'

अभिन फुआ के बातो पूरा भइल ना रहे, तले खवासिन बीचे में बोल उठली-

'ए फुआ! जाए दीं। अभिन बहुरिया के बुधिए केतना बा।'

'का रे! तोर ई मजाल हो गइल, आकि फुआ के बात काटे लगले।'

फुआ के त एड़ी से कपार ले जरल रहे। खीसे धनकत रहली।

'ए बहुरिया! अब केतना दिन बइठल खइबु। रोपनी होता..मजूर लोग के पनपियाव बनावे के बा। जा चूल्हानी!'

बहुरिया बेचारी सहरुआ लड़की.. ई सब कहाँ देखले रहली.. रोपनी-सोहनी, माटी-झेंटी। तबो बेचारी बइठल पनपियाव बनवली। मने-मने खिसियातो रहली-अपने त चल गइलें नोकरी करे।

आ हमरा के फुआ के कपारे फँसा देहलें। अबकी हमहूँ संगे चल जाएम। ना आपन सास बाड़ी, ना आपन ससुर। इहाँ केकरा खातिर रहेम। बहुरिया के लोर रोकले ना रोकाए।

खवासिन सब बूझत रहे, मने फुआ से अझुराए के मतलब रहे जवनो दु कौर खा के जियत रहे, ओहू पर आफत हो जाइत।

बिहान भइले नवकी बहुरिया पेटी-बाकस बान्ह के तइयार-

'हम इहवाँ ना रहेम..माई किहाँ जातानीं। एतना कार धंधा हमरा से ना होई।'

फुआ के त बकारे बन हो गइल। अब इहो देखइब का हो दइब! घर के इजत बहरी जाव आ लोग बाग तमासा देखो, एसे पहिले छन भर में फुआ नरम हो गइल रहली-

'देख बहुरिया! भाई-भउजाई के जाल सँभारत भुला गइल रहनी हँ कि इ हमार राजपाट ना ह। हम तोहार एगो खर जियान होखे नइखीं देहले, ना अपना जिनगी में जियान होखे देम। अब तू आ गइलू आपन जाल सँभार! अब ए जिनगी के गदबेरा में हम का मलिकाव करीं! आपन कुल-कापड़ सँम्हार! हम गंगासागर नहाए जाए के चाहतानीं।'

नवकी बहुरिया भी इज्जती घर के रहे। ओकरा बूझत देरी ना लागल कि ओकरा से बड़का भारी कसूर हो गइल बा। जुरते फुआ के गोड़ ध लेहलस-

'हमार बाबूजी रउरे के देख के बियहले बानीं। हमरा के छमा करीं। आपन कान ध के, किरिया खा के कहतानीं फेन अइसन कसूर ना होई। ए कुल-खनदान के पुरनिया रउरे बानीं। अपना सरन में ले लीं..कर जोरतानी।'

खवासिन आ बाकी दाई-लवड़िन के त ठकुआ मार देले रहे। फुआ के मन के कवनो दुख-तकलीफ बरदास्त से बहरी रहे। आज ले अइसन कहियो ना भइल रहे-

'जाए दीं फुआ! मतारी बरोबर बानीं। सब त रउरे कुल पलिवार ह। आज ले निबहनी, आगहूँ निबाह दीं। रउरा से हमनी के जियतानीं। हमनी के टूअर हो जाएम सन। छमा करीं छमा करीं! हमनी के अरदास बा..दसो नोंह जोरतानीं।'

तनी देर बाद फुआ अथिर भइली। घर के हँसी-खुसी फेन से लवट आइल। फुआ धीरे-धीरे बड़ी सानत से घर के जाल, पथार से अपना के अलगा क लेहली। अब घर के सारा जाल बहुरिया देखे लगली।

ए बीचे एगो अउरी निमन बात भइल। दान-दहेज के लफड़ा से अंजलिया के बियाह कट गइल। अब अंजलिया फुआ के सेवा टहल में रहेले। उनके लगे सूतेले, उनकर कार सँभारेले। बहुरिया ओकर आगे पढ़े के इंतजाम क देले बाड़ी। जिनगी के गदबेरा में फुआ के अब कवनो चिन्ता फिकिर नइखे।

बहुरिया फुआ के हर टहल खातिर एके गोड़ पर तइयार रहेली। फुआ भाई-भउजाई के करजा त ए जनम में ना उतार सकली, मने अगिला जनम में उतार सकस एकरा फिकिर में जरूर रहे लगली। बहुरिया के अपना गहना के पेटी के संघे जिनगी के सारा भार सउँप के फुआ निहचिन्त हो के भजन-किरतन में रम गइली। ✷✷✷

भवानी

आज स्त्री सम्मान समारोह में ओह सब स्त्री लोग के सम्मानित कइल जात रहे, जिनकर समाज में विशेष योगदान रहे। एतना बड़का सम्मान समारोह में जब विशेष सर्वोच्च सम्मान खातिर भवानी जी के नाम पुकारल गइल त सब ओर से ताली के गड़गड़ाहट सुनाई देवे लागल। भवानी के चेहरा पर मुस्कान रहे लेकिन उनका आंख में लोर भरल रहे।

भवानी मंच पर पहुंचली त फूल माला से उनका के सम्मानित कइल गइल आ अवार्ड दिहल गइल। मुख्य अतिथि उनका बारे में बोलल शुरू कइलन- 'भवानी जी हमनी के समाज में एगो मिसाल बाड़ी। हमनी सब उनका सामने नतमस्तक बानी। भवानी जी अपना नाम के अनुरूप शक्ति के अवतार बानी। जीवन के हर संघर्ष से बहादुरी से सामना करके अपना बल पर आज ऊ आपन शहर के मेयर बन गइल बाड़ी...'

मुख्य अतिथि अपना भाषण में उनकर बड़ाई करत रहलन, आ भवानी अपना अतीत में पहुंच गइल रहली... 16-17 साल के चंचल, खुशमिजाज भवानी पढ़ाई-लिखाई से लेके गीत-संगीत तक में सबसे आगे रहे वाली लड़की रहली। देखे में तनी साधारण रहली, लेकिन गुण में कौनो कमी ना रहे। 18 बरस के होत-होत उनका बाबूजी के लगे भवानी खातिर रिश्ता आवे लागल।

एगो निमन रिश्ता आइल। लड़का अच्छा नौकरी में रहे, निमन घर परिवार रहे, आपन घर दुआर सब रहे। भवानी के माई, बाबूजी, बाबा सभनी के रिश्ता बड़ा पसंद आइल। भवानी के कान में जब ई बात पड़ल त उ एकदम चिहुंक गइली। ई का बात होखे लागल?

भवानी एकदम चिल्ला के बाबा से कहली- 'बाबा हमरा अभी बियाह नइखे करे के ! हमरा पढ़ाई करे के बा, कुछ बने के बा।' लेकिन भवानी के रोअला,धोअला, खिसिअइला से केहू पर कौनो असर ना पड़ल।

माई समझावे लगली- 'देखऽ भवानी, पढ़ाई त कहियो पूरा हो सकेला। नीमन रिश्ता, लइका, नीमन घर-बार हमेशा ना मिलेला। एक बेर बियाह हो जाई त दूल्हा के मना के आगे आपन पढ़ाई पूरा कर लिहऽ, जौन चाहे तौन बन जईह।'

तबले बाबा भवानी के पुकरलन। बाबा बड़ा दुलार से भवानी के अपना लगे बोला के कहलन -'हम तोहार बियाह उहें करेम जहां तोहार पढ़ाई ना रुकी। एगो खुशखबरी बा तोहरा ला..' भवानी पुछली -'का ह बाबा?' बाबा कहनी - 'तोहरा ससुराल में हम बात कइनी हं। उ लोग तोहरा के आगे पढ़ावेला तइयार बा।'

अब त भवानी के खुशी के कौनो ठिकाना ना रहे। उनकर गोड़ जमीन पर ना पड़त रहे। उ मने मने आपन होखे वाला दूल्हा आ ससुराल के खूब धन्यवाद देत रहली। सुंदर भविष्य के सपना सजावत-सजावत भवानी ससुराल पहुंच गइली। दू तीन दिन तक रसम रिवाज आ लोकाचार में निकल गइल। ए बीच में भवानी देखली कि उनकर दूल्हा रमेश के उनका से कौनो मतलब नइखे। बस खाली काम से बात करत रहलन। उनका के चाय, खाना, कपड़ा सब चीज एकदम टाईम पर चाहीं, ना त खिसिया जात रहलन। कुछ दिन बीतला पर एक दिन मौका देख के भवानी तनी हिम्मत कर के अपना पति रमेश से कहली - 'एगो बात कहे के बा। हमरा आगे पढ़े के बा। हमार एडमिशन करा दीं ना।'

जइसे भवानी के पढ़ाई के नाम सुनलन, रमेश एकदम से उखड़ गइलन -'इहां तहरा के पढ़ावे खातिर ले आइल बानी? एगो त तोहार खरचा उठावतानी। घर दुआर, खाना, कपड़ा सब दे तानी, अब तोहरा पढ़ाई के खरचा उठाईं ? ई नया सुर चढ़ल बा? तोहरा कलेक्टर बने के बा? चुपचाप घर में रहऽ, गिरहस्थी के सम्हारऽ। आज कहलु से कहलु, दोबारा ई बात मुंह पर आइल त बूझ लिहऽ!'

भवानी के जइसे काठ मार गइल। रमेश एतने पर ना रुकलन - '... एगो त हम उपकार कइनी तोहरा से बियाह कर के..केहू पूछत ना रहे तोहरा के.' अब त बात आत्म सम्मान पर आ गइल रहे! तब भवानी से ना रहल गइल। धीरे से कहली- 'हमरा त अभी बियाहे ना करे के रहे। ना त एक से एक रिश्ता मिलत रहे हमरा। उ त ईहां से जोर पड़ल त बाबा ए बात पर मान गइनी कि रउआ लोगनी हमरा आगे पढ़ावे ला तइयार बानी। ना त ई बियाह ना होखित।'

एतना सुने के रहे कि रमेश आव देखलन ना ताव, चटाक से एगो झापड़ भवानी के गाल पर जमा देहलन। भवानी सम्हर ना पइली आ गिर गइली। रमेश तमतमा के, गोड़ पटक के बाहर निकल गइलन। भवानी रात भर बइठ के ईहे सोचत रहली कि परिस्थिति से समझौता कर के, चुपचाप मुड़ी गाड़ के इहां बस जाईं, जिंदगी भर दाई बन के गुजार दीं ,कि सब छोड़ के चल दीं?!

आ फेर, भवानी भोरे-भोरे आपन निर्णय लेली आ चुपचाप घर से निकल गइली। आज भवानी इ शहर के मेयर बाड़ी। ✷✷✷

नाम: श्वेता सुरभि
स्थाई पता: बोरिंग रोड, पटना
संप्रति: दूरदर्शन केंद्र पटना में उद्घोषणा, कविता ,कहानी लेखन

महिला रचनाकार अंक -7 / कहानी-संग्रह

स्वर्ण लता

सपना के गठरी

महेंद्र के माई के महेंद्र से ढेर लालसा रहे। महेंद्र के बाबू कमला आपन इकलौता बेटा के इंजीनियर बना के आपन सपना पूरा कइल चाहत रहन। दस बिगहा जजात रहे बाकिर जिनिगी भर तन के एगो सुबहित बस्तर ना भेंटल। जबकी उनुके साथ के पढ़लका माहटर भा अमीन बन गइलन स त मटका के कुर्ता चमकावत रहेलन स। मदना अफसर बन गइल त मैदानो होखे चारे चक्का से जाला। कमले से सुनले रहीं कि मदन अपना बेटी के बियाह में पटना से कैटरिंग वाला के बोलवले रहे। कमल के त एगो बेटी रहे जेकर बियाह में इज्जत बचावे में दू बिगहा खेत बिका गइल रहे। समाज में दहेज आ देश में महंगाई देखि के कमल कहत रहन दइब बेटी पइसे वाला घरे दिहऽ हमरा जस घर खातिर बेटी लक्ष्मी ना माथ के भार होले।

महेंद्र पढ़े में तेज रहन बाकिर दुइयो बेर में इंजीनियरिंग के एंट्रेंस परीक्षा ना निकाल पवले। कमला एक बिगहा खेत बेच बंगलोर इंजीनियरिंग कॉलेज में महेंद्र के नाम लिखवा देले कि आगे के खर्च के व्यवस्था बैंक लोन से कर लेब। प्राइवेट इंजीनियरिंग कॉलेज शिक्षा के व्यापार बना देले बाड़न स। कमला कॉलेज के भारी फीस भरे खातिर शिक्षा लोन खातिर दसों बैंक में दउड़ले बाकिर लोन स्वीकृत ना भइल। स्थिति महेंद्र के नाम कटे के आ गइल। महेंद्र के माई कमला से कहली हमनी के बाद ई खेतवा महेंद्र के नू होई। महेंद्र के नोकरिया हो जाई त ऊ खेती करे अइहें? रउवा सोचीं जनि खेत बेच बबुआ के पढ़ा दीं। कवनो उपाय ना देख कमला मान गइले आ चार साल के पढ़ाई में चार बिगहा खेत बिका गइल। दस बिगहा के जगह कमला के चार बिगहा खेत रह गइल जेकरा से खरचियो ठीक से ना जुटे। चूल्हा ठंडाये के नौबत आ जाए बाकिर महेंद्र के लेके सपना के रंगिनियत कम ना होत रहे। दूनों बेकत के जिए के आधार सपने रहे।

महेंद्र चतुर्थ वर्ष में रहन त ओहि कॉलेज के अनुषंगी इकाई सुधा डेयरी में चयन हो गइल साफ्टवेयर मैनेजर के पद पर ढाई लाख के पैकेज पर। ना चाहतो योगदान कर लेले पढ़ाई खत्म भइला पर। इंजीनियर महेंद्र के ओहिजा कंपनी के दूध के बिक्री के हिसाब के साथे पशुअन के स्वास्थ्य के जिम्मेवारी के निर्वाह करे के पड़त रहे। उनुका अपना सिनियर के बात इयाद आ गइल जे महेंद्र के राति में पढ़त देख बोलले रहन पढ़ बबुओ पढ़ बेचे के त तेले बा, पढ़इया एहिजे धरल रह जाई। महेंद्र के माई-बाबू के सपना आ आपन कैरियर इयाद आ गइल। भविष्य के सोचके आपन इस्तीफा दे घरे आ गइलन। बेरोजगार लइका के हाल धोबी के कुकुर जस होला ना घर के ना घाट के। महेंद्र नौकरी खातिर ढेर हाथ गोड़ मरले सब बेकार। माई-बाबू के सपना रहन महेंद्र जे अब माथ के भार बनि गइल रहन।

इंतजार के घड़ी आ बेरोजगारी के दिन कटले ना कटे। बेरोजगारी में अपने जिनिगिया भार हो जाला त दूसर केहू भार बूझे त एह में गलत का बा। महेंद्र बड़ी हिम्मत कके बाबूजी के कहले कि हमार रूमेट बी टेक के बाद फाइनांस में एम बी ए कइले रहे आजु इंग्लैंड में साठ लाख के पैकेज में बा। हमहूं सोचत रहीं कि एम बी ए कर लितीं त नौकरी मिल जाइत। कमला कहले कि बेटा बाप के सपना होला। तू हमार सपना रह बाकिर इहो सांच ह सबके सपना पूरा ना होखे। तू जानत बाड़ कि कइसे बी टेक कइले बाड़। अब हमरा ताकत नइखे आगे पढ़ावे के। ना पास में संसाधन बा ना तोहरा से आसे रहल। अब जे बुझाय अपना बले कर। महेंद्र कहले हम राउर बेटा हईं। रउवे जस कुछ हमरो सपना रहे ऊ अबहीं मरल नइखे हमरा आँखिन में ऊ जिंदा बा। हम घर छोड़ के जात बानीं ओह सपना के पावे खातिर। रउरा आ माई के आँखिन के सपना पूरा करे लायक हो जाइब त आइब ना त समझब महेंद्र दुनिया के मेला में भुला गइल। असहूं बेटा के काम ह बाप-दादा के संपत्ति बढ़ावल बाकिर हम त सब ताप गइनीं अपना बेकाम के पढ़ाई में।

महेंद्र घर छोड़ पटना पहुंच गइले। ना एह शहर में कवनो आथ अलम ना जेब में पइसा। शहर में लोग अपनों के पहचाने से इंकार कर देला त अनजान महेंद्र के माथ छुपावे के जगह कहां मिलित। कबो स्टेशन पर त कबो बस स्टैंड में, कबो मंदिर में त कबो रैन बसेरा में राति काटत आ लंगर में खाना खात महेंद्र के दिन कटत रहे कि एक दिन एगो भला मानुष शर्मा जी से भेंट हो गइल। महेंद्र के हालत पर तरस खाके शर्मा जी आपन खाली गैरेज महेंद्र के रहे खातिर दे देलन। महेंद्र टियूशन पढ़ा के आपन खर्च निकाल लेत रहन। बचल समय में प्रतियोगिता के तइयारी करत रहन। क्लर्क, चपरासी, वनरक्षी, सिपाही से लेके बीपीएससी परीक्षा तक में तीन साल लागल रहले बाकिर कहीं ना निकाल पवले। कबो पेपर लीक त कबो पैरबी पुत्र आजु के व्यवस्था में सरकारी नौकरी के महेंद्र के सपना निगल गइल। सरकारी सेवा के सपना बिखरत देख महेंद्र कुछ अउर काम के बारे में सोचे लगले बाकिर उनुकर बुद्धि काम ना करे। आपन सपना के बिखरलो पर माई-बाबू के सपना उनुका मन के आगे बढ़े खातिर बाध्य करत रहे।

शर्मा जी के गैराज में रहत महेंद्र शर्मा जी के बड़ बेटी मनोरमा,जे फिजिक्स में पी जी करत रहे, के पढ़े में मदद कर देत रहन। शर्मा जी के काम में हाथ बँटा देत रहन। शर्मा जी सरकारी काम से पटना के बाहर रहत रहन त मनोरमा के युनिवर्सिटी छोड़े आ ले आवे के काम महेंद्र के रहे। मनोरमो के महेंद्र के साथ बढ़िया लागत रहे। ई नजदीकी कब प्रेम में बदल गइल ई महेंद्र-मनोरमा के पता ना चलल बाकिर जब पता चलल त ऊ लोगिन एक दूसरा के साथ जिनिगी बितावे के निर्णय ले लेल लोग।

नाम: स्वर्ण लता
जन्म तिथि: 11 नवंबर 1975
स्थायी पता: रोड नंबर-4, कृष्णापुरी, चुटिया, राँची
प्रकाशित किताब: शोध प्रबंध- भोजपुरी बाल गीतः एक सांस्कृतिक अध्ययन

महेंद्र के घर से दूर एगो आपन परिवार मिल गइल रहे। मनोरमा जब महेंद्र से आपन संबंध के जानकारी आपन माई के देली आ समझवली त उनुका मनोरमा-महेंद्र के संबंध पर ऐतराज ना रहे। मनोरमा के बाबूजी के कान में जब मनोरमा-महेंद्र के संबंध के बात गइल त उनुका एह संबंध पर आपत्ति रहे। आपत्ति के मुख्य कारण महेंद्र के बेरोजगार भइल रहे। काहे कि शर्मा जी के महेंद्र के साथ बेटी के संबंध में बेटी के भविष्य अंधकारमय लागत रहे। मनोरमा के माई कतनो समुझवली ऊ ना मनले। महेंद्र बात कइल चहलन त शर्मा जी साफ कह देले एह विषय में हम तोहरा से बात ना कइल चाहब। ई देख मनोरमा खुद बाबूजी से बात करे के निर्णय लेली आ कहली बाबूजी हमरा के रउवा पढ़ा के एह लायक बना देले बानीं कि हम आपन जीवन महेंद्र के साथे सुखमय बना लेब। ठीक बा महेंद्र आजु बेरोजगार बाड़े बाकिर उनुका अंदर खुद्दारी मरल नइखे। जेकरा भीतर हौसला आ खुद्दारी रही ऊ कबो भूखे ना मरी। बिसवास रखीं हमनीं का मिलके एगो नया खुशहाल जिंदगी बिताइब जा एकर भरोसा बा। बेटी के बात सुनके आ ओकरा आँखिन में महेंद्र के प्रति प्रेम आ बिसवास देखिके आपन सहमति दे देलन। महेंद्र-मनोरमा कोर्ट मैरिज कर शादी के बंधन में बंध गइल लोग।

शादी के बाद महेंद्र मनोरमा से कहले कि माई-बाबू के सपना हमरा इयाद बा हमार अइसे तोहरा घरे बइठल रहला से ना पूरा होखी। काल्हु तोहार बाबूजी से मिले शाह साहब आइल रहन। बइठका में इंतजार करत रहन त हमरा से बात होखे लागल। ऊ हमार माइनिंग इंजीनियरिंग के डिग्री के जनला के बाद कहले कि हमार लौह अयस्क के खान चाईबासा में बा, तू हमरा साथे चल। हमार खदान में एगो प्रबंधक के जगह खाली बा। हमहूं सहमति दे देनीं। काल्हु उनुके बोलेरो से साथे चल जाइब। हमार बैग तइयार कर दिहऽ। महेंद्र कहले ई परिवर्तन हमरा जीवन में तोहरा अइला से भइल ह। हमरा खातिर तू बहुत शुभ बाड़ू। मनोरमा कहली हम रउआ के ना रोकब बाकिर हमार सपना कुछ विशेष करे के बा। रउवा खुशी खुशी जाईं, हमार मंगलकामना रउवा साथे बा। अब राउर सपना हमार सपना हो गइल बा। दशहरा ले हमार पी एच डी के रिजल्ट आ जाई। दशहरा में आइब त हम कुछ विशेष बात करब।

महेंद्र के चाईबासा खान के नोकरी पसंद आ गइल रहे। उनुका रहे आ खाये के व्यवस्था कंपनी के होस्टल में रहे। वेतन के कुल पइसा बांच जात रहे जे ऊ मनोरमा के आधा आ आधा बाबूजी के भेज देत रहन। मनोरमो एगो प्राइवेट कोचिंग क्लास ज्वाइन कर लेले रही जेह में फिजिक्स के क्लास लेत रही। उनुको हर माह बढ़िया भुगतान मिल जात रहे। सितंबर के अंत में मनोरमा के पी एच डी अवार्ड मिल गइल। ओने महेंद्र के बाबूजी के महेंद्र के नोकरी आ शादी के पता महेंद्र के चिट्ठी से चलल त फोन करके कनिया के साथे गांवे आवे के कहले त महेंद्र कहले बाबूजी राउर सपना अबहीं अधूरा बा, हम माई आ राउर सपना के गठरी जोगा के रखले बानीं अपना आंखिन में। हम जल्दी आइब रउरा लोगिन के पास। ढेर दिन दूर रहनीं अब ना रहब, जल्दी आइब,कहत फोन रख देले।

दशहरा के छुट्टी में महेंद्र पटना मनोरमा भीरी गइले त बाबूजी के बात बतवलें। मनोरमा कहली शादी करके परा गइनीं केहू अइसन करेला। अब हम ना जाए देब। अब एहिजे रहे के बा। राउर परिवार के सपना के गठरी पर हमरो अधिकार बा। कवनो बहुरिया के ससुराल के सुख-दुख बिना मंगले ओकरा आंचर में आ जाला। माई-बाबूजी के सपना के गठरी अब हमरा हवाले करीं, मिलजुल के पूरा कइल जाई। महेंद्र कहले ई त ठीक बा बाकिर चाईबासा जाए से जनि रोकऽ हम ओकरे बले बाबूजी के सपना पूरा करब। मनोरमा कहली शाह साहब के नोकरी से बेसी के नोकरी पटना में मिल जाई बाकिर हमरा मातहत काम करे के होई, मंजूर होखे त बोलीं। महेंद्र कहले बुझवलिया जनि बुझावऽ, खोल के बोलऽ। मनोरमा कहली कि हमरा के रउवा पढ़वले बानीं, हम राउर टैलेंट से परिचित बानीं। आठ-दस महीना के कोचिंग क्लास आ प्रबंधन के हमरो अनुभव बा ई देख हम कोचिंग क्लास खोले के निर्णय लेले बानीं। राउर देल पइसा आ अपना कमाई के पइसा लगा के हम बगल के बनत मार्केट कम्प्लेक्स में एगो बड़ जगह भाड़ा पर लेले बानीं आ ओकर अग्रिम तीन लाख दे चुकल बानीं। फर्निशिंग के पइसा हमार सखी पुष्पा लगवली ह। रउवा मैथ, हम फिजिक्स आ पुष्पा केमेस्ट्री के क्लास लिहें। आई आई टी के तइयारी करावल जाई। कोचिंग के नाम रउवा डिसाइड करे के बा दसमी के दिन उद्घाटन, पूजा, हवन करा लेल जाई। महेंद्र के आपन सपना के गठरी हलुक बुझाए लागल। कबो मनोरमा के त कबो अपना के देखस आ कहले कि अब सपना के गठरी हम का खोलीं तू त पहिलहीं खोलिके सजा लेले बाड़ू। अगर तोहरा ऐतराज ना होखे त हम कोचिंग क्लास के नाम ' के के एडवांस कोचिंग सेंटर ' रखल चाहत बानीं। के के के मतलब कमला-किरण, बाबूजी-माई के नाम। हमरा ऐतराज काहे होई? मनोरमा कहली। महेंद्र कहले ठीक बा बाकिर मनोरमा, डाइरेक्टर के त अनुमोदन लेल जरूरी बा कहत मनोरमा के अपना देने खींच लेले। मनोरमा सरमा के हाथ छोड़ा लेली।

मनोरमा चाहत रही के महेंद्र के माई-बाबूजी एकर उद्घाटन करस बाकिर महेंद्र मना कर देले ना ई काम के शुरूआत उहां सभे से आशीर्वाद लेके तोहरा हाथे शुरू कइल जाई, तू हमनी खातिर लक्ष्मी हऊ। अबहीं सपना के गठरी में अउर बहुत कुछ बा ऊ सब पूरा करि माई-बाबूजी के बोलाइब, अबहीं तनी धीरज धरऽ। ' के के एडवांस कोचिंग सेंटर' के उद्घाटन मनोरमा के हाथे हो गइल आ तीन महीना के अंदर गति पकड़ लेलस। शहर के प्रतिष्ठित कोचिंग सेंटर में के के कोचिंग के नाम आ गइल। अगिला दशहरा तक शहर के अलग-अलग इलाका में के के कोचिंग के पांच गो फ्रेंचाइजी खुल गइल। शहर के किनारे छव बिगहा जमीन में आलिशान बिल्डिंग आ चारदीवारी खड़ा हो गइल - नाम दिआइल के के फार्म हाउस, जेकर उद्घाटन के तिथि चइत नवमी के पुजाई के दिन तय भइल। महेंद्र आ मनोरमा के गिनती शहर के गणमान्य लोगिन में होखे लागल।

महेंद्र मनोरमा संगे फगुआ में गांव पर गइले त दूनों बेकत के देखि कमला आ किरण के आँखि जुड़ा गइल। पतोह के अइला के खुशी में भर गांव मिठाई बंटाइल, सत्यनारायण भगवान के कथा भइल। महेंद्र के देखि कमला के सभ सपना पूरा हो गइल। गांव से लौटत खा महेंद्र माई-बाबूजी के साथे पटना लेले अइले। माई-बाबूजी के हाथे नवमी पुजाई के दिन ' के के फार्म हाउस ' के उद्घाटन भइल। महेंद्र कहले कि बाबूजी राउर सपना के गठरी ढेर दिन ले ढोवनी आजु उतार के रउरा आ माई के चरण में रखत बानीं, स्वीकार करीं। सपना के गठरी उतारि आज हम रउवा चरण में रखे में सफल भइनीं, राउर बहुरिया मनोरमा के बल पर। अब रउवा लोगिन हमनी जोरे एहिजे रहब गांव पर के जमीन पर बाबा के नांव से एगो स्कूल खोलवा दिहीं आजुले गांव में लइकन के पढ़े खातिर बढ़िया स्कूल तक नइखे। कमला बेटा-पतोह के छाती से लगा लेले। कमला आ महेंद्र के आंखि से झर-झर आंसू बहे लागल। ✷✷✷

www.bhojpurisahityangan.com

महिला रचनाकार अंक -7 / कहानी-संग्रह
प्रियंका गुप्ता

कुकुर

आज भोरहरिए पुत्तन के मेहरारू आ राम औतार के महतारी में फेरु से झगड़ा हो गइल। देखल जाउ त झगड़ा के अइसन कवनो खास वजह ना रहे बाकिर पुत्तन बो के ओर से देखल जाउ त बहुत बड़हन बाति रहे।

पुत्तन के मेहरारू सबेरे-सबेरे जब आपन दतुअन-मंजन निबटा के बड़का झाड़ू लेके आपन चउतरा बहारे निकललली, त देखली कि दुआरे पर कुकुर टट्टी क दिहले रहे। ऊ बूझि गइली कि ई काम राम औतार के कुकुर के ह। दू बेर पहिलहूँ ऊ राम औतार के माई से ओरहन दे आइल रहली कि कुकुर-पिल्ला पाले-पोंसे के बा त ओकरा के बान्हि के राखऽ। अब जो हमरे दुआरे टट्टी क दिहलस त ठीक ना होई, बाकिर फेरु से ऊ कुकुरा आके दुआरे पर पैखाना क दिहले रहे। बस, उनकर पारा कपारे पर चढ़ि गइल।

'ई का बात भइल कि पिल्ला पालऽ तोहन लोगन आ ओकर गूह-मूत उठाईं हम...?' खीस से लाल-भभूका पुत्तन बो भनभनात सीधे राम औतार के दुआरे पहुँचि के उनकर केवाड़ी पीटि दिहली।

आपन अँगना बहारत राम औतार के महतारी एकदम से चिहुँकि गइली। तबे रामऔतारो अपनी कोठारी के केवाड़ी खोलि के बहरा निकललें।

'ई के ह रे!' राम औतार के महतारी झाड़ू ध के उठे के भइली बाकिर राम औतार उनके रोकि दिहलें।

'तें रुक, हम देखतानीं कि के अपनी माई के दूध पियले बा कि ए सँवकेरे एतना जोर-जोर से केवाड़ी पीटता?' कहते आपन लुंगी गँठियावत ऊ अँगना पार क के दोगहा के ओर बढ़ि गइलें। ऊ जइसहीं केवाड़ी खोललें, सामने अगिया बैताल भइल पुत्तन के मेहरारू के देखि के चिहा गइलें।

पुत्तनो बो एकदम से राम औतार के देखि के छनभर खातिर अकबका गइली। एतना रीसियो में ऊ ई बाति इयादि रखली कि मेहरारुन के मरदन के मुँहे ना लागे के चाहीं। हँ, आपन मरद के बाति दूसर होला। ईहे सोचि के ऊ जोर से चिल्लइली- 'कहाँ बाड़ी तोहार माई? तनी बोलावऽ त उनके। देखें चलि के कि उनके 'दुलरुआ' का कइले बा।' 'दुलरुआ' संबोधन कलुआ खातिर रहे।

पुत्तन के मेहरारू त टोला भर में हवा बेयारि से लड़ाई करे खातिर जानल जाली बाकिर एकदम से भइल ए हमला से चतुर चालाक राम औतारो चकरा गइल रहलें। उनका अपनी महतारी के बोलावे के ना पड़ल। ऊ एतना देर में सब मामला बूझि लिहले रहली। आपन अँचरा करिहाँइ में खोंसत खुदे निकलि अइली।

'एतना सबेरे-सबेरे काहें हल्ला कइले बाड़ू? का भइल बा?' तनी रिसिआहे कहली ऊ।

'हई देखा? पूछाताड़ी का भइल बा? अरे अपना पिल्ला के सम्हारि ला। जो अब ऊ हमरे दुआरे पर हगलस न, त जवन पोंछि हिलावत ऊ ओह नरिया में मुँह मारत रहेला न, ऊहे पोंछिया पकड़ि के घुमा के अइसन पटकब कि राम नाम सत्त हो जाई। जानि लीहऽ।' पुत्तन बो उनकर मुँहे पर हाथ नचावत कहली।

'चला-चला। बड़ा देखनीं तोहरे जइसन। तू हमरी कालू के पोंछि त का, ओकर एगो बार छू के देखावा, हम तोहरे राम नाम सत्त ना क दीं त कहिहा।' ऊहो घुमा के नहला पर दहला दिहली। रामौतार महतारी के रोके चहलें बाकिर ऊ उनका के धकेल के ताल ठोक के आगे बढ़ि गइली।

एकदम से महतारी के धक्का से राम औतार अपना के सम्हार ना पवलन आ पाछे ठाड़ अपनी गवनहीं दुलहिन से भीड़ि गइलन। दूनू लोग के मूड़ी जोर से लड़ि गइल।

'आहि ए माई!' कहत दुलहिनिया आपन मूड़ी पकड़ि के ओहिजे बइठि गइल आ माई-माई करे लागलि।

अपनी सुन्नर-सुकुवार दुलहिन के ई हालि देखि के ऊ एकदम्मे राम औतार से रावन औतार हो गइलें।

'ऐ पुत्तन के माई! आपन जीभि सम्भार ला आ आपन हाथ-गोड़ अपने मरदे के लुंगी में बान्हि के राखा, नाहीं त हमहूँ कवनों चूड़ी नइखीं पहिरले। बुझलू कि ना?'

'सुना ए रामौतार! मेहरारू जानि के धमकावा जनि। हम मरदन के मुँहे ना लागींले, एसे तूँ आपन मुँह बंद राखा।'

'मुँह ...? अरे हमरी पुष्पा के ढेर घाव लागि गइल रहित न, त एहिजा

नाम: प्रियंका गुप्ता
जन्मतिथि: 31 अक्टूबर 1978
प्रकाशित किताब: नयन देश की राजकुमारी, सिर्फ एक गुलाब, फुलझड़ियाँ, नानी की कहानियाँ, जिन्दगी बाकी है, बुरी लड़की
संपर्क: 'प्रेमांगन', एम आई जी- 292, कैलाश विहार, आवास विकास-एक, कल्याणपुर, कानपुर
संप्रति: गृहणी, रेकी मास्टर, टैरो कार्ड रीडर

खून बहि गइल रहित।' रीसि से काँपत राम औतार इहो भुला गइलन कि अम्मा के पद त उनके बगल में रहे। सामने त पड़ोसी पुत्तन के मेहरारू रहली। भुला त ऊ ईहो गइलन कि उनके पुष्पा के माथे ई गुलमा उनके अम्मा के धकिअवले के नतीजा रहे। एमे पुत्तन बो के कवनों हाथ ना रहे। उनके महतारी ई सब देखत बुझत रहली बाकिर ए समय बड़हन मुद्दा पुत्तन बो के ईंट के जबाब में उनका ओर पत्थर फेंके के रहे, ना कि सतबादी बने के। एसे ऊ राम औतार के फेंकल रसरी पकड़ लिहली।

'आरे हमार बछिया के घाही क दिहलस रे! देखा लोगन हो! ई पुत्तनवा के मेहरारू हमरी पतोहि के कपार फारि दिहलस। अरे नास होई रे तोर! कीरा पड़ी तोरी देहि में! अरे नरको में तोरा के जगहि ना मिले ए पपिनिया...! हे काली माई! अब तुहीं देखिहा एकरा के।' अपनी पतोहि के अँकवार में ले के ऊ पुत्तन बो के हाइसुक सरापे लगली आ अपने मुँह पर अँचरा खीचि के झूठो हीलि-हीलि रोवे लगली।

हल्ला-गुल्ला आ अपने मालिक के रोवत डँहकत देखि के कलुओ उनहीं के लगे बइठि के कुँकुआए लागल। बाकिर पुत्तनो बो कवनों कच्चा खेलाडी ना रहली। उहो ओही इनार के पानी पिअले रहली जवने इनार के पानी राम औतार के माई पियत रहली।

'हम सब बूझऽतानी तोहार ई नौटंकी। ए हरजाई तू नाहीं! तोहार राम औतार जब एही पुष्पा रानी के आधी राति में भगा के ले आइल रहे, तब हमरे मरद पंडी जी के बोला के आ गवाही खातिर अउरी चार लोग के एकट्ठा क के रातोराति ए लोग के भँवरी घुमवले रहे। सब भुला गयिलू? ओ समय कइसे इहे रामौतरवा भाई-भाई करत हमरी मरदे के आगे पीछे घूमत रहे। जो जनतीं त आजु जेहल में सरत रहित तोहार दुलरुआ। तब हम देखतीं तोहा लोग के पुष्पा प्रेम।' आँखि नचावत कहली पुत्तन बो।

'त कवन अहसान क दिहलन पुत्तन! मामला सुलटावे के बहाने हमरा से केतना रूपया अँइठि लिहलन। का हम जानत नइखीं? सार...खानदानी चोट्टा! थू...।' राम औतार जइसे अपनी भीतर के इरिखा मुँह में भरि के ओकरी मुँहे पर थूकि दिहले होखें।

झगड़ा सुनि के टोला भर के लोग राम औतार के दुआरे पर ठाड़ हो के तमाशा देखत रहे। ई हल्ला पुत्तनों के काने ले पहुँचि गइल रहे आ दुआरे पर झाड़ू आ कुकुर के लेंड़ी देखि के ऊ सब मामला समझ गइल रहलें। लड़ाई में कूदे खातिर ऊ आपन लुंगी खोजत रहले। रेंगनी पर लादल कपड़ा में लुंगी के एक झलक देखि के ऊ ओकरा के खींचे लगलें। एतने में रेंगनी खट्ट से टूटि गइल बाकिर लुंगी खींचे में ऊ सफल भइलें। अब लुंगी गँठियावत ऊ दउड़ि के राम औतार के दुआरे आ के उनकर गँटई पकड़ लिहलन। काहें से कि राम औतार के मुँह से निकलल आखिरी बाति उनके काने पड़ि गइल रहे।

'चोट्टा केकरा के कहले रे लखेरवा! लइकिन के पाछे-पाछे घूमे आला दू कउड़ी के लफंदर! तें जानेले कि हम कुछ ना जानींले? जो ई लइकी भागि के ना आइल रहित त तोर बियहवो ना भइल रहित। सार, गुंडा मवाली कहीं के, एने-ओने दलाली क के घर का बनवा लिहले, ढेर अँइठे लगले? दोगला कहीं के!'

अपनी गँटई पर दबाव पडला से राम औतार के मुँह लाल हो गइल रहे। ओने पुष्पा रानी एक ओर ठाड़ काँपत रहली आ राम औतार के महतारी पतोहि के छोड़ि के चोंट का तरे पूत्तन पर झपटल रहली।

राम औतार जब बाप के गारी सुनलें त का जानें कहाँ से उनके देहिं में बल आ गइल। ऊ अइसन हाथ घुमवलें कि उनके महतारी एक ओर छटक गइली। दुसरे ओर पुत्तन छटकि के नाली में मुँह के भल गिरलें आ माथ पर घाव लगला से बेहोश हो गइलें। तमाशा देखे खातिर जुटल लोग दउड़ के राम औतार के पकड़ लिहल, नाहीं त का जाने कि नाली में बेहोश पुत्तन के ऊपर ऊ चार लात अउरी लगवतें कि 'सार कुकुर कहीं के...! तें हमार बाबूजी के गारी देताड़े!'

राम औतार पहलवानी देहि के रहलें। रीसि से काँपत उनके देहि सम्हारल लोग खातिर मुश्किल होत रहे। आपन घाव भुला के उनके महतारिओ उनका के समझावे में लागल रहली। पुष्पा रानी आपन मरद के ई रूप देखि के हदसल रहली। उनके पेट खड़बड़ा गइल रहे आ टोला के मेहरारू कूल्हि पुत्तन के लगे बइठि के रोवत-पीटत पुत्तन बो के सम्हारे में लागल रहलीं...।

एही सब हबड़-तबड़ में पुत्तन के नाली से निकाले बदे केहू के सुधि ना आइल...। एगो कलुए रहे कि पुत्तन के चाटि-चाटि के उनका के होश में ले आवे के जुगति में लागल रहे...। ✱✱✱

महिला रचनाकार अंक -7 / कहानी-संग्रह
पूनम शर्मा 'स्नेहिल'

कंचन

कंचन के जनम एगो अइसन परिवार में भइल रहे, जहँवा लइकीन के ना त बोले के आजादी रहे आ ना आपने कवनो फैसला लेबे के। आजुवो उनुका गांव में गिनले-चुनल लइकी बाड़ी स, जवनन के पढ़े के आजादी बा। सबके घर-गृहस्थी आ चूल्हे-चऊका के जिनिगी जीये के बा।

बाकिर इहो साँच बा कि एह संसार में समय के साथे हर चीज में बदलाव होला। कंचन उहे बदलाव के एगो कड़ी रही। कवनो काम के कइसे कइल जाव कि कामो हो जाए आ केहू के कवनो दिक्कतो ना होखे। इहे आदत धीरे-धीरे उनकर पहिचान बनलि जात रहे।

आजादी रहे बाकिर ओकर एगो सीमा रहे जवना के मिलल भा ना मिलल एके जइसन रहे। घर में लइकिन भा मेहरारुन के ना त लइकन जइसन हँसे-बोले के आजादी रहे आ ना कहीं आवे-जाए के छूट।

कंचन के बचपने से पढ़ाई में खूबे मन लागत रहे। ई देखि के माई-बाबूजी उनकर पढ़ाई रोक ना पवलें। पढ़ाई के साथे-साथे कंचन के घर के कामकाज आ बाबूजी के आगे-पीछे रहे में बहुते खुशी मिलत रहे। कंचन के बाबूजी होम्योपैथिक के डॉक्टर रहनी। माई से बेसी कंचन बाबूजी के साथे समय बितावत रहली। बाबूजी के साथे रहला के चलते कंचन के भीतर माई से ज्यादा बाबूजी के आव-भाव दिखाई देत रहल।

कंचन के भीतर डर नाम के चीज कबो ना रहल। अपना क्लास में कंचन मास्टर साहब के सबसे चहेता विद्यार्थी रहली। कंचन के बाबूजी से मास्टर साहेब बार-बार एके बात कहें - 'देखिहऽ, एक दिन तोहार बेटी तोहार नाम रौशन करी।'

कंचन अब मैट्रीक में पढ़त रही। गांव के लोग उनका माई-बाबूजी से बार-बार कंचन के बिआह-शादी के बात पूछे लागल। कंचन के माई ई बात सुन-सुन के तंग आ गइली। समाज के लोक लाज के चलते ऊ कंचन के बाबूजी से कंचन खातिर लइका देखे खातिर कहे लगली।

बाबूजी बिआह खातिर लइका देखल शुरू कइलन। बहुते देखला सुनला के बाद बिआह ठीक हो गइल। बिआह के पहिलहीं कंचन अपना दूल्हा (अमन) से आपन पढ़ाई पूरा करे के बात रखली, जवना के अमन के ओर से स्वीकृति मिल गइल। एकरा बाद त कंचन के खुशी के ठेकाना ना रहे।

हाई स्कूल के परीक्षा पास कइला के बाद बिआह त हो गइल बाकिर गवना अभी ना भइल। कंचन के ससुराल से उनका बाबूजी के कंचन के आगे पढ़ावे खातिर स्वीकृति मिल गइल रहे।

एही से अब गाँव के लोगन के मुँह बंद हो गइल रहे। समय के साथे कंचन के इन्टरमीडिएट के पढ़ाई पूरा हो गइल। अब गवना के तइयारी होखे लागल। एने घर में कंचन के विदाई के तइयारी चलत रहे आ ओने ओही दिन इन्टर के रिजल्ट आवे वाला रहे। बाकिर खुशी के दोराहा पर खड़ा कंचन के अपना रिजल्ट के बेसब्री से इंतजारी रहे। विदाई के एक दिन पहिले जब अखबार में प्रथम श्रेणी में रिजल्ट आइल त कंचन के खुशी के ठेकाना ना रहे। ऊ खुशी से अपना दूल्हा अमन के पकड़ लिहली।

गवना भइला के बाद कंचन अब ससुराल आ गइली। कंचन के दूल्हा दिल्ली में नौकरी करत रहले आ सास-ससुर पटना में रहत रहलें। पन्द्रह दिन के बाद कंचन के दूल्हा अपना नोकरी पर दिल्ली लवटि गइले। घर से नया-नया कनिया के दिल्ली ले जाये के इजाजत ना मिलल।

घर के कामकाज कइला के बादो कंचन के लगे बहुत समय बांच जात रहे। एह से कंचन अपना सास से आगे पढ़ाई करे के इच्छा जाहिर कइली बाकिर सास के तरफ से साफे मनाही हो गइल।

कंचन के सास कहली- 'हमरा घरे बेटी-पतोह के पढ़े के रेवाज नइखे। घर दुआर देखऽ आ जिम्मेदारी संभालऽ, इहे तोहार करतब बा।'

कंचन अब भीतरे-भीतर घुटन महसूस करे लगली। सास के ई निर्णय उनका पसन ना आइल। एक दिन अचानक कंचन के तबीयत खराब हो गइल। डॉक्टर के देखवला के बाद पता चलल कि कंचन माई बने वाली बाड़ी। आवे वाला मेहमान के खबर से घर में खुशी के लहर दउरि गइल। जब ई समाचार अमन के मिलल त उनको खुशी के ठेकाना ना रहे। फोन प कंचन से बात करत कहलें- 'अब त इंतजार मुश्किल हो गइल बा जल्दिए आवत बानी।'

बाकिर होनी के टाल सकेला, भगवान के त कुछ अउरे मंजूर रहे। अचानक कंचन के तबीयत बिगड़ गइल। आनन-फानन में घर के लोग कंचन के डॉक्टर के लगे ले गइले। देखला के बाद डाक्टर साहेब कहलें- 'खबर नीमन नइखे। कंचन के बच्चा त खराब हो गइल बा।' घर के खुशी के पाला मार देहलस। काल्ह ले बच्चा के आवे के इंतजारी अचानक

नाम: पूनम शर्मा 'स्नेहिल'
जन्म तिथि: 10 जनवरी 1981
स्थाई पता: 2513, कोरिएंडर, निअर मर्सी हॉस्पिटल, विजय गार्डन, जमशेदपुर
संप्रति: लेखिका, कवियत्री, टैरो कार्ड रीडर, न्यूरोलॉजिस्ट, वास्तु कंसलटेंट, मैजिकल औएल, स्पेल जार(एस्ट्रोलॉजर)

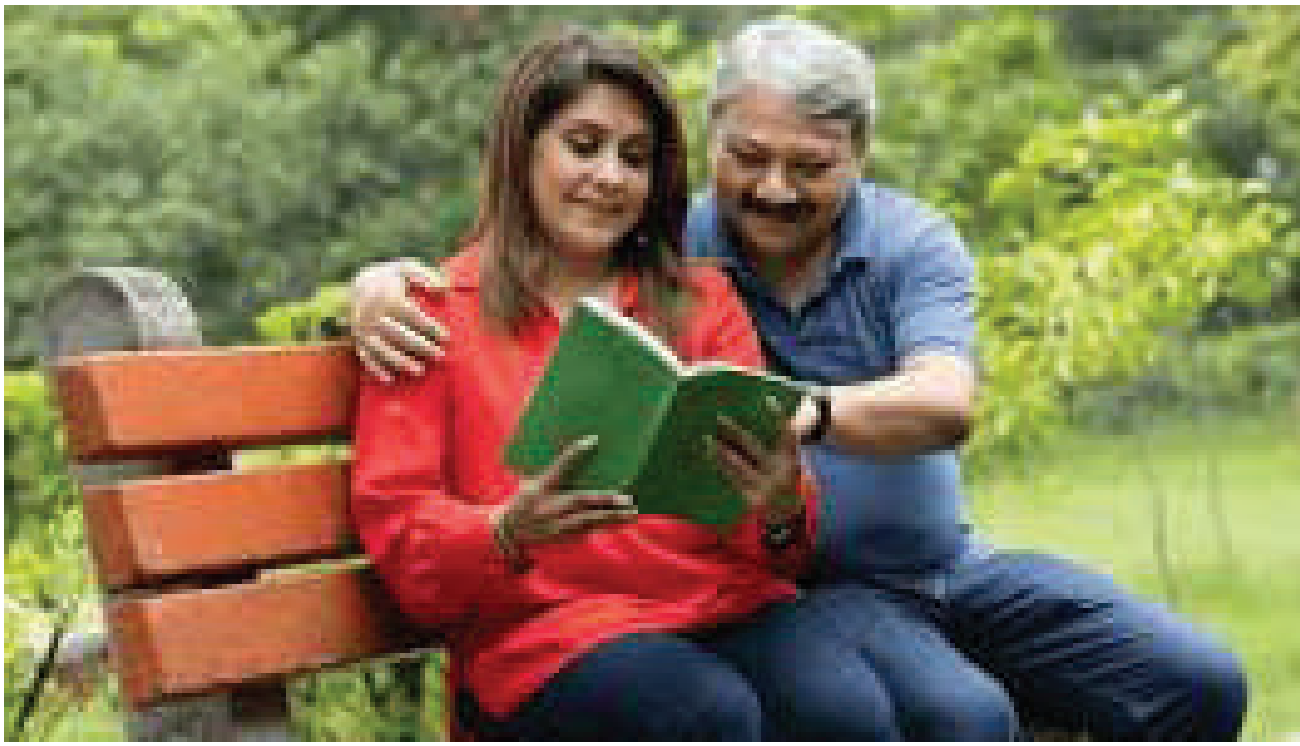

सन्नाटा में बदल गइल।

ओने अमन दिल्ली से पटना पहुंच गइले। डॉक्टर से मिलला के बाद उनका पता चलल कि कंचन के शरीर भीतर से बहुते कमजोर हो चुकल बा। अगर ऊ साल दू साल के भीतर माई बने के कोशिश करीहें त उनकर जान जाये के खतरा बा।

माई-बाबूजी से बात क के अमन अबकी बेर कंचन के अपना साथे दिल्ली ले गइले। कंचन बहुत उदास रहे लागल रहली। देखते-देखत तीन-चार महीना बीत गइल। बाकिर कंचन के हालत में कवनो सुधार ना बुझात रहे। अमन के बहुत कोशिश कइला के बादो कंचन के चेहरा पर ऊ मुस्कान वापस ना लवटल जवन पहिले रहत रहे।

एक बेर, अमन के एगो साथी के बहिन अनीता बैंकिंग के परीक्षा देबे खातिर दिल्ली आइल रहली आ अमन के घरहीं ठहरल रही। रात में अनीता के पढ़त देखि के कंचन के आंख में पढ़ाई के सपना फेनु करवट लेबे लागल।

अमन एह बात के महसूस कर चुकल रहलन। अमन आज कंचन के सामने पढ़ाई शुरू करे के प्रस्ताव रखलें त कंचन के चेहरा चमक उठल। ऊ आपन खुशी व्यक्त करत आगे पढ़े खातिर सहमति दिहली आ अमन के हाथ चूम लेहली।

कंचन के एडमिशन भइल त कंचन के तबियत में धीरे-धीरे सुधारो होखे लागल। देखते-देखत कंचन बी०ए० आ फेर बी०एड० के परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास कइली। समय के साथ वेकेन्सी निकलल आ कंचन सरकारी नोकरी खातिर आवेदन फार्म जमा क के जवाब आवे के इंतजारी करे लगली।

एही बीच कंचन के दोबारा माई बने के उमेद जागल। समय बीतल, सृष्टि के जन्म हो गइल। सृष्टि यानि अमन आ कंचन के बेटी। बेटी के जनम कंचन के नइहरे में भइल आ ओही दिन कंचन के नोकरियो के खुशखबरी मिलल। ओहू में ओही गाँव के स्कूल में जवना में कंचन पढ़ाई कइले रही। ऊ स्कूल ज्वाइन त क लीहली। घर में सभे बहुत खुश रहे बाकिर कंचन के बाबूजी आशंका जतावत अपना बेटी से कहलें - 'अतना छोट लइकी के लेके तू नोकरी कइसे करबू?' एह पर कंचन के माई हँसत लगली - 'आजु ले केहू एकरा के रोक पवले बा कि आज रोक पाई। लइकी के हम देखबि।' जब पहिला दिन कंचन स्कूल गइली त बाबूओजी साथे गइलें।

ई का स्कूल के त पूरा कायाकल्प हो गइल रहे आ हेड़ मास्टर साहेब बुढ़ा गइला के बादो पहिचानत बाबूजी से मुस्कात कहनी - 'हम कहले रहनी नू कि ई बेटी एक दिन जरुर राउर नाम रोशन करी।' एकरा बाद हेड़ मास्टर साहेब स्कूल के लड़िकन से कंचन के मिलवावे ले गइनी आ बड़ा गर्व से सबके बतावत कहनी कि कंचन एही स्कूल के विद्यार्थी रहल बाड़ी। आजु स्कूल में लइकीन के संख्या देखके कंचन बड़ा खुश भइली, उनका अइसन लागल जइसे आज सैकड़न कंचन स्कूल आवत बाड़ी। उनका लागल अंदर केहू धीरे से कहले होखे - 'ई सांच ह, एह संसार में समय के साथे सब कुछ बदलेला, चाहें आदमी होखे भा समाज आ एही बदलाव के नतीजा ह - हर दर कंचन। हर घर कंचन। ✷✷✷

www.bhojpurisahityangan.com

महिला रचनाकार अंक -7 / कहानी-संग्रह

लक्ष्मी सिंह 'रुबी'

प्रेरणा

आदित्य आ शिखा के 10 साल के बेटा अंशु के चित्रकला प्रतियोगिता में आज प्रथम पुरस्कार मिलल रहे। पुरस्कार देखके आदित्य के आपन बीतल दिन याद आ गइल। नौकरी ना मिलला के कारण हम कतना हताश-निराश हो गइल रहनी लेकिन शिखा से जब हम पार्क में मिलनी आ जतना ऊ हमरा के ढांढस बंधवली आ प्रोत्साहित कइली ऊ सब बात एक-एक कके बाइस्कोप लेखा आज हमरा आँख के सामने से गुजरता।

शिखा कइसे कहली आदित्य तू काहे ना चित्रकारी आ पोर्ट्रेट बनावे वाला काम शुरू करके अपना हुनर के आगे बढ़ाव तारऽ। तहरा ईयाद बानू कि तहार बनावल पेंटिंग आ पोर्ट्रेट जब कॉलेज के एग्जीबिशन में लागत रहे त लोग केतना पसंद करत रहे। हमार बात मान के तू फिर से आपन ई हुनर के आगे बढ़ावऽ। हम तहार मदद करेब। तू आपन पहिले वाला पेंटिंग के सब कलेक्शन निकाल ल आउर कुछ पेंटिंग बनावल शुरू करऽ। बाकी हम सब देख लेहब। हमरा पापा के बहुत बड़-बड़ लोगन से जान-पहचान बा। जब तहार पेंटिंग के एग्जीबिशन लागी त हम ओह समय सबका के इनवाइट करेब। तू देखिहऽ तहार पेंटिंग के चर्चा दूर-दूर तक ले जाई आ तू चित्रकला के क्षेत्र में जरूर प्रतिमान गढ़बऽ। तहरा हुनर पर हमरा पूरा भरोसा बा।

शिखा के प्रोत्साहन भरल बात सुन के हम आत्मविश्वास से भर गइनी आ एह क्षेत्र में भाग्य आजमावे के मन बना लेनी। शिखा हमरा के हिदायत देत कहली कि आदित्य काल्ह हम तहरा घरे आयेब। तोहरा संगे मिल के तोहार पेंटिंग निकालेब आउर सुनऽ हमरा लगे हमार आपन कुछ रुपेया बा, तू ओकरा से पेंटिंग के समान खरीदऽ आ फिर से तू पेंटिंग के काम में जी जान से जुट जा। तू कहबऽ त हमहूँ तोहरा साथे बाजार चलब। हम शिखा के चेहरा देखे लगनी आ कहनी शिखा बाजार त तोहरा चलहीं के पड़ी बाकी हम तोहरा से कवनो रुपेया पइसा ना लेहब, केतना एहसान तू हमारा पर करबू। शिखा हमार बात सुन के कहली- 'आदित्य हम तोहरा ऊपर एहसान नइखी करत। हम दोस्त के कर्जा देत बानी। जब तहरा लगे रूपेया होई लौटा दिहऽ। हमरा आँख में आँसू भर गइल।'

दूसरा दिन हम आ शिखा बाजार जाके पेंटिंग के सारा समान खरीद के ले अइनी सन। अब हम पेंटिंग के काम में जी जान से लग गइनी। अपना काम के शुरूआत शिखा के पोर्ट्रेट बनवला से कइनी आ शिखा के कहनी कि शिखा तोहार ई पोर्ट्रेट हरदम हम अपना पास राखेब अपना प्रेरणा स्वरूप।

नाम: लक्ष्मी सिंह 'रूबी'
जन्म तिथि: 28 अगस्त 1982
स्थायी पता: जमशेदपुर, झारखंड

हम दिन-रात मेहनत करे लगनी। एक से बढ़के एक पेंटिंग बनत गइल। दिवाली के अवसर पर शिखा के सहयोग से रविंद्र कला केंद्र में एग्जिबिशन लागल। एग्जीबिशन में शहर के सम्मानित व्यक्ति लोग आइल रहे। जब हम ओह लोग के पोर्ट्रेट बनवनी त उ लोग हमरा से बहुत प्रभावित भइल आ हमरा के काम देवे के आश्वासन दिहल लोग।

अब हमार काम के प्रशंसा दोसरा-दोसरा शहर में भी होखे लागल। अपना शहर से बाहर दोसरा शहर में भी हम चित्रकला के एग्जिबिशन लगावे लगनी। शिखा अपना समय में से समय निकाल के दोसरो शहर में हमरा साथे जाये के कोशिश करत रहली बाकी हर बार शिखा के अपना शहर से बाहर गइल संभव ना हो पावत रहे। बात दरअसल ई रहे कि शिखा एक N.G.O चलावत रहली जेकरा कारण उनका बार-बार शहर छोड़ के जाये में परेशानी होत रहे।

देखते-देखत हम भारत के शीर्षस्थ चित्रकार में गिनाये लगनी। कई कला संस्थान से हमरा के विजिटिंग फैकल्टी के रूप में आमंत्रण आवे लागल। हम आउर अधिक व्यस्त रहे लगनी। कुछ ही दिन बाद हमरा के देश के एक नामी कला संस्थान 'एफ.एम हुसैन मेमोरियल' के तरफ से उत्कृष्ट पेंटिंग खातिर सम्मान से सम्मानित करे के घोषणा कइल गइल। देश के प्रमुख अखबारन में ई खबर छपल। अखबार में हमार सम्मान के खबर देखके शिखा के खुशी के ठिकाना ना रहल। ऊ खुशी से उछल गइली आ तुरते अखबार लेके अपना पापा के दिखवली। ई खबर सुनके उनकर पापा भी बहुत खुश भइनी।

बधाई देवे खातिर शिखा के फोन आइल। ऊ कहली कि देखलऽ हम जे बात तोहरा से कहले रहनी आज ऊ पूरा भइल नू? हमरा तोहरा प्रतिभा प पूरा भरोसा रहे आदित्य। हम कहनी- 'हां शिखा सांचों अगर तू हमरा के प्रोत्साहित ना करतू त ई सम्मान कइसे मिलित? आ सुनऽ शिखा खाली बधाई देहला से काम ना चली, सम्मान समारोह में पापा के लेके तहरा आवे के बा। अगर तू ना अइबू त हम ई सम्मान ना लेहब।' शिखा आश्वासन देहली हमनी के जरूर आयेब।

देखते-देखत सम्मान के दिन आ गइल। हम, शिखा आ पापा तइयार होके सम्मान समारोह में पहुँचनी सन। हमार भव्य स्वागत भइल। सम्मान समारोह के हॉल हमार पेंटिंग आ पोर्ट्रेट से सजावल गइल रहे। शिखा ई सब देखके हमार क्षमता आ प्रतिभा प बहुत गर्व महसूस करत रहली। हॉल कला प्रेमी लोगन से खचाखच भर गइल रहे। शिखा आ पापा हमार गेस्ट रहे लोग एहसे आगे के पंक्ति में बइठावल गइल रहे।

सम्मानित होखला के बाद, हमार अब तक के यात्रा के विषय में कुछ कहे के कहल गइल त हम कला संस्थान 'एफ.एम. हुसैन मेमोरियल' संस्थान के आयोजन समिति के प्रति आपन आभार व्यक्त कइला के बाद कहनी कि हमरा आज जे ई सम्मान मिलल बा वास्तव में एकर असली हकदार केहू दुसर बा। हम त अपना जीवन से हताश-निराश हो गइल रहनी बाकी सही समय में जे हमरा के खाली प्रेरणा ना देहलस बल्कि हर समय आपन अनमोल सलाह आ सहयोग देलस ओह व्यक्ति के हम मंच पर बुलावे के चाहतानी।

हॉल में बइठल लोग उत्सुकता से स्टेज पर देखे लागल। हम सामने के पंक्ति में बइठल शिखा के ओर देखके बड़ी आदर के साथ आवाज देत कहनी हमार अनुरोध बा शिखा सिंह जी कृपा करके मंच पर आवस। शिखा खुशी के आँसू रोकत मंच पर अइली। सम्मान में मिलन आपन शॉल, मेमेन्टो आ सम्मान पत्र शिखा के हाथ में देके हम आपन उद्गार व्यक्त कइनी। हॉल ताली के आवाज से गूंज गइल। सम्मान समारोह के कार्यक्रम के बाद हमनी के होटल लौटनी सन। फिर हम सीधे शिखा के पापा के कमरा में गइनी आ पैर छू के आशीर्वाद लेहला के बाद पापा से कहनी कि पापा अब हम शिखा के हाथ मांगे लायक बन गइल बानी नू ? का रउरा शिखा के हाथ हमरा हाथ में दे सकतानी? शिखा के पापा हमरा के आपन सीना से लगा लेहनी आ हमार पीठ थपथपा के आपन मौन स्वीकृति दे देहनी। ✷✷✷

www.bhojpurisahityangan.com

महिला रचनाकार अंक -7 / कहानी-संग्रह

माया चौबे

ई कइसन सोच ?

जब सबके शादी बियाह माई-बाप के मरजी से होत रहे, ओही घरी महेश के बियाह उनकर आपन पसन से होखे के खबर गांव-जवार मे फइल गइल। ठही ठही मरद मेहरारू लोग बतिआवे लागल कि हई देखऽ हो सुधाकर के छोटका लइकवा महेशवा के बियाह ओकरे पसन के लइकी से होता।

आज तक गांव में ई कुल ना भइल रहे। बतावऽ ना इ त गांव-जवार के माहौल बिगाड़तारे स। केहू कहे लागल कि का कइल जा सकता, आज काल के केकरा मान में बा। असही केहू कुछ त केहू कुछ कहे लागल।

ई सब बात सुधाकर अउर सुधाकर बो के कान में गइल बाकि ऊ चुपचाप लगवले रहे लोग।

दिन नियराइल, महेशवा के बियाह खूब धूमधाम से भइल। पतोहि जब उतरल त मुंह देखे खातिर लोग के भीड़ लागे लागल।

सुधाकर बो आपन पतोहि के ओह दिन केहू के ना देखवली। कहली कि दोसरा दिन अइह लोग पतोहि थाकल बिया।

सुधाकर बो लगली आपन पतोहि के सिखावे पढ़ावे। सुन बढ़िया से पहिन ओढ़ि के रहिह। हमार दर देआद के पतोहि से उच्च लागे के चाहीं।

हतना बड़ आंगन बा हमनी के एसे ढेर मति निकलिह। ना त ढेरे काम करे के पड़ि जाई। अउर पतोहि बाड़ी लोग नू ! बस कबो-कबो निकलि के चाय पानी पूछ लिह। तू पढ़ल-लिखल बाडू ओहि हिसाब से रहिह।

सुधाकर के बड़हन आंगन रहे। उनकर एगो बड़ भाई रहले मधुकर। जिनकर तीन गो पतोहि उतर गइल रहली लो। काम भर पढ़ल-लिखल बाकी बड़ी कामकर्ता रहली लोग।

लकड़ी के चूल्हा से लेके गैस स्टोप सभ पर खाना बना लेत रहली लो। इहे ना बिआह शादी पर परोजन सभे सम्हार लेत रहली लोग। एही में दूनो सास के तेलो तासन कर देत रहली लो।

खाना बना के सबके खिया पिया के खात रहली। कबो केहू घरे आवत-जात रहे उहन लोग अनसात ना रहली, सबके खातिर भाव करत रहली।

महेशवा के कनिया के पढ़ा-लिखा के पक्का कर देले रहली उनकर सास सुधाकर बो। घर में केकरा से कइसे रहे के बा, कतना आ का बोले के बा, का छुपावे के बा, सब तरह से उनका के पढ़ा के आगर कर देली।

ओकरा बाद शहर ले गइली। सुधाकर बो के दूगो बिअहल बेटी रहली। घर में बेटिये लोग के राज रहे। जवन उहन लोग कहस लोग, उहे होखे।

दिन भर महेश बो के खटत-खटत जान निकल जाये। कबो चाय कबो पानी त कबो नास्ता खाना। उनका किहाँ खाये पिये के कवनो टाइम टेबुले ना रहे।

बेचारी पढ़ल-लिखल लइकी। घर के काम धाम में केहू हाथ ना बंटावे। ना कहीं मन बहलावे खातिर घुमइबे फिरइबे करस लोग। छोटी चुकी घर में सभ परिवार। दिन भर माथ प लुगा लेके काम करत रह।

बेचारी कबो-कबो महेश से कहस त ऊ कहे लागस कि जवन माई बहिन कह तारी लो ऊ चुपचाप सुन। ढेर आपन दिमाग मति लगाव। महेश बो चुप लगा जास बाकी बड़ी रोवत रहली अउर भितरे-भितरे परेशान रहत रली।

कबो राति-राति भर नीन ना लागत रहे। आ महेश नाक बजावत बेपरवाह सुतत रहलें।

दिन बीतल महेश बो के एगो लइका भइल। कुछ साल बाद ऊ महेश से कहली। चलीं एहिजा के आसपास के माहौल भी ठीक नइखे। घरो छोटहन गो बा। हमनी के कहीं अलग घर लेके लइका के पढ़ाइब-लिखाइब जा।

नाम: माया चौबे
जन्म तिथि: 20 जुलाई 1983
स्थायी पता: तिनसुकिया (असम)। मूल रूप से बक्सर (बिहार) शिक्षा-दीक्षा आसनसोल (पश्चिम बंगाल)

अतना सुनते महेश भड़क गइले। कहे लगलें कि ई कुल हमनी के घर में ना होला। हमार माई से तू अलगा करावत बाड़ू। मेहरारू जाति के हम बढ़िया से समझतानी।

रहि-रहि के इहे कूल बात से महेश अउर उनका मेहरारू में ताना तनि चले लागल। तले एगो बात जवन घर के लोग उनका से छुपवले रहे ओकरा बारे में महेश बो के पता चलि गइल। अब का अब त उनका अपना ससुराल के लोग से नफरत होखे लागल। ऊ ई सोचत कांपि जात रहली कि हमार परिवार के लोग के अइसन गिरल सोच बा। ई अतना भी गिर सकता लो।

एक दिन सुधाकर के भेंट बड़ भाई मधुकर से भइल।

भइया ठीक बाड़ऽ नू? - सुधाकर पूछलें।
हं सुधाकर हम ठीक बानी। - मधुकर कहलें।
तू कइसन बाड़? बड़ भाई मधुकर पूछलें।
हम्हू ठीके बानी, का कहीं। अतना कहि के सुधाकर रूकी गइलें।
का हो गइल। कुछ बात बा का? - मधुकर पूछलें।
ना कवनो बात नइखे, बस असहीं।- सुधाकर कहलें।

का असहीं! जरूर कवनो बात बा सुधाकर। ना त, तू बोलत-बोलत रुकतऽ ना। - बड़ भाई मधुकर कहलें।

सुधाकर पहिले कुछ सोचले, फेरू कहले- नवकी जवन हमार पतोहिया आइल बिया नू ओकरे से घर में सबका दिक्कत होता।

दिक्कत ! कइसन दिक्कत? ओकरा से काहे केहू के दिक्कत होखे जाउ। ऊ त शिक्षित संस्कारी व्यवहार कुशल लइकी बिया। नइहरो के लोग बड़ा बढ़िया बा। हमरा त नइखे लागत कि ऊ केहू के कवनो दिक्कत दे सकतिया- मधुकर कहलें।

अरे तू समझत नइऽख- सुधाकर कहले।

कुछ साल पहिले हमार बड़की पतोहिया ना मरी गइल रहे। ओकरे बारे में हमार नवकी पतोहिया के पता चल गइल बा।

पता चल गइल बा, त का भइल। ऊ एगो हादसा रहे।

अरे ना नू, तू ना समझऽब।

ना समझऽब ! तू का कहे के चाहतारऽ सुधाकर, तनी खोलि के बताव, तब नू समझब।

अरे का कहीं भइया। बड़की पतोहिया के हमार मेहरारू और लइकी मिलके बड़ी परेशान करत रहली हा लो। साथे-साथे बड़का लइकवो के भड़का के मार खियावत रहली हा लोग।

अतना बात सुनि के मधुकर के गोड़ के नीचे से जमीन खिसक गइल। आहो तहार लइकी त बिअहल बाड़ी लोग, तब कइसे परेशान करत

रहली लो। - कुछ देर बाद मधुकर कहले।

अरे फोन जवन ना करा दे। हमार बेटी आ मेहरारू दिन भर बतियावत रहेली लोग।

ओने से लइकिया माई के सिखावत रहे कि देखिहे माई इनकर पांखि मत लागे दिहे। ना त एक दिन तोर माथ पर चढ़ी जइहें। .. आ हमनियो के मान आदर ना करी। तीज त्योहारो ना भेजी। हमार भइयवा के सब पइसा पर एकरे राज हो जाई।

सुधाकर कहलें, का कहीं भइया, एही कुल से परेशान होके हमार बड़की पतोहिया जान दे देलस।

मधुकर त जइसे सन्न हो गइलें। सोचे लगलें- ओह, एतना गिरल सोच, जेकरा कारन एगो लइकी के जान चलि गइल।

मधुकर आपन मन के बात मने में राखि के सुधाकर के समझवले कि धीर धर, सब ठीक हो जाई।
आ फेर आगे बढ़ गइलें आ रस्ता में सोचे लगलें कि सहला पर अन्याय बढ़ते जाला। उनका पुरान दिन इयाद परल जब सुधाकर के परिवार उनका परिवार के सतावत रहे, लेकिन निश्छल, निष्कपट मधुकर अपने परिवार के डाँटस-बोलस।

हमेशा भाई के परिवार के सपोर्ट में आ दुख-सुख में खड़ा रहस। खैर, उनकर त कसहूँ कट गइल, निभ गइल। एह लइकी के का होई? महेश बो के का होई ? का इहो बड़की पतोहिया लेखां ... ना, ना। मधुकर के रूह काँप गइल।

रूह त महेश बो के भी काँप गइल रहे लेकिन ऊ कमजोर ना भइल रहे। ओकर चेतना जाग गइल रहे। ऊ बचपन में पढ़ले रही कि अन्याय के सहल पाप ह। आज ले ऊ लोक-लाज आ मान-मर्यादा खातिर सब कुछ सहत अइली बाकिर अब ना ! एह घुटन भरल जिंदगी से ऊ अपना के आजाद करिहें आ अपना बेटा के सकारात्मक माहौल दिहें। ✷✷✷

महिला रचनाकार अंक -7 / कहानी-संग्रह

डॉ. प्रतिमा

अधूरा सपना

गाँव के पूरुब छोर पर एगो छोट सा घर रहल - माटी के दीवाल, खपरैल के छत, अउरी आँगन में तुलसी के चौरा। एह घर में बसत रहे सुरेश अउरी ओकर बिटिया मुनिया। मुनिया जब जनम लिहलस, तबे से सुरेश के जिनगी के सगरी रोशनी ओकरे आँख में बस गइल। माई त मुनिया के जनमते दुनिया से चल बसल, एही से सुरेश बिटिया के माई-बाप दुनु बन गइल रहल। गावें के लोग सुरेश के बहुत कहलस की दुसर बियाह कर ल, जिनगी बहुत लाम बा, अउरी बिटियो पला-पोसा जाई, लेकिन सुरेश केहू के एक न सुनलस और बियाहे खाती साफ मना कर दिहलस, कहलस की आपन बिटिया के हम अकेले पाल लेब।

मुनिया बचपन से ही तेज अउर समझदार रहल। स्कूल में हर साल अव्वल आवे, मास्टर साहेब कहें की - 'ई लइकी गाँव के नाम रोशन करी'। सुरेश जब ई सुने त ओकर छाती गर्व से फूल जात रहल। ऊ दिन-रात खेत में मेहनत करे। बस एही सपना में कि बिटिया पढ़-लिख के कुछ बन जाव। 'बाबूजी, आगे के पढाई खातिर शहर जाये चाहतानी,' एक दिन मुनिया हिम्मत जुटा के कहलस। सुरेश थोड़ा चुप भइल, फेर मुस्कुरा के बोलल - 'जा बिटिया, तोहार उड़ान अब गाँव से बाहर बा। हमार दुआ तोहरा साथे बा।'

गाँव से जाये के बेरा मुनिया के आँख नम रहल, बाकि मन में सपना के चमक रहे। शहर लखनऊ .. ओकरे खातिर नयका दुनिया रहे। उहां कॉलेज, किताब अऊर नयका लोग। धीरे-धीरे ऊ पढ़ाई में रम गइल, समय आपन गति से आगे बढ़त रहल।

फोन पर रोज बाबूजी से बात होखे 'खाना खइला कि ना'? 'थक गइली त आराम करिहा।' सुरेश हर बात में ममता घोल देत रहे। हाँ बाबूजी तहार सपना के सच करे खातिर लगन लगा के पढ़त बानी ....आपन खयाल रखिहऽ.....हमार एके सपना बा की हमार बाबूजी के चेहरा पे हमेशा खुसी बनल रहे। लेकिन जिनगी हर बार सीधा रस्ता ना देला। इंसान सोचेला कुछ और होखेला कुछ।

एक दिन कॉलेज के प्रोजेक्ट, इम्तिहान, आ इंटरव्यू के बीच मुनिया एतना उलझ गइल कि फोन उठावे के फुर्सत ना मिलल। बाबूजी के कई मिस कॉल मुनिया देखलस.... लेकिन सोचलस की 'फ्री होके बाद में आराम से बाबूजी से बात करब।'

ओने गाँव में सुरेश के तबीयत धीरे-धीरे बिगड़त रहल। खाँसी बढ़ गइल, साँस फूलत रहे, बाकिर ऊ केहू से बतावत ना रहे। ऊ बस इहे सोचत रहे- 'मुनिया पढ़ाई में व्यस्त होई, परेशान काहे करीं?'

एक दिन पड़ोसी हरिनारायण फोन कइलें - 'बिटिया, तोहरे बाबूजी के तबीयत बहुत खराब बा। जल्दी आ जा।' ई सुनते मुनिया के हाथ काँप गइल। दिल धक-धक करे लागल। ऊ बिना देर कइले बस पकड़े खातिर भागल।

रास्ता लंबा लागे लागल। हर मिनट एक-एक साल जइसन लगे। मन में बस एके बात- 'हे भगवान, बस बाबूजी के देख लेई।' गाँव पहुँचत-पहुँचत सांझ हो गइल रहे। आँगन में भीड़ जुटल रहे। मुनिया के दिल बइठ गइल।

'बाबूजी...!' ऊ चीखत घर में घूसल।

लेकिन ओह आवाज के जवाब देवे वाला अब केहू ना रहल।

सुरेश खाट पर चुपचाप लेटल रहलें - जइसे गहरी नींद में होखस। चेहरा शांत, आँख बंद, आ होठ पर हल्का मुस्कान।

मुनिया फूट-फूट के रो पड़ल-

'बाबूजी, हम आ गइनी... उठीं ना... देखीं, हम आ गइनी...'

बाकिर अब ना कोई जवाब, ना कोई स्नेह भरल आवाज।

ओह दिन मुनिया के जिनगी में एगो खालीपन आ गइल, जवन कबो ना भर पाई।

ओहके सबसे बड़ा पछतावा ई रहल– ऊ अपने बाबूजी से आखिरी बेर बात न कर पवलस। दिन बीतत गइल, मुनिया पढ़ाई पूरा कइलस, नौकरी मिलल, शहर में सेट हो गइल। लोग कहे - 'देखऽ, केतना सफल हो गइल बिया।' बाकिर भीतर से ऊ हमेशा अधूरा रहल। समय के साथ घाव सूख जाला, बाकिर कुछ दर्द नासूर बन के जिनगी भर साथ चलेला।

मुनिया खातिर ई दर्द ऊ आखिरी मुलाकात के अधूरापन रहल।

आज मुनिया एगो अफसर बिया। लोग ओकरा से प्रेरणा लेता। ऊ बेटियन के पढ़ाई खातिर अभियान चलावेले, गाँव-गाँव जा के कहेले- 'अपने माई-बाप के समय दीहीं... काहे कि समय लौट के ना आवे।'

हर भाषण के बाद ऊ चुपके से आकाश के ओर देखेले, जइसे बाबूजी से बात करत होखो- 'देखीं बाबूजी, हम उहे मुनिया बानी... जवन तोहार सपना पूरा कइले बिया...

बाकिर एक बात आजो अखरत बा-

काश, हम तोहरा से आखिरी बेर मिल पइतीं!✷✷✷

नाम: डॉ. प्रतिमा
जन्मतिथि: 01 मार्च 1984
प्रकाशित किताब: आदिवासी महिलाओं की आवाज : संघर्ष से सम्मान तक (साझा संकलन), थारू से गोंड तक : उत्तर प्रदेश की आदिवासी सभ्यता का जीवंत दस्तावेज (साझा संकलन)
संपर्क: प्लाट नंबर - 31, महावीर नगर , मानस सिटी , सुगामऊ रोड, इंदिरा नगर , लखनऊ
संप्रति : असिस्टेंट प्रोफेसर

रूप-गर्विता

आजु एक बरिस पे घरे लौटत बानी। स्टेशन पे आवत-आवत गोड़ थिरके लगल बा। केतना अच्छा लागेला न! आपन घर आपन सहर आवल। हरेक राहता, गली, मोड़ आपन चिन्हल-जानल लागेला।

गाड़ी आपन समय से करीब आठ घंटा देरी से चलत बिया। माने साँझ के छव बजे चहुँपे वाली हमार गाड़ी राती के दु बजे चहुँप रहल बिया। हमार छोटका कस्बा आपन अधराती के नीन लेत बिया, बाकी तबो हमार लईकाई के दूनो संघतिया हमार बसंती के लिहले स्टेशन पे ठारा बाड़े सऽ। बसंती हमार पहिलकी मोटरसाइकिल, जेकरा जाने केतना गोड़-हांथ पड़ के बाबू जी से किनवइले रही।

भले आजु हम आपन कमाई के थंडर-बर्ड ले लिहले बानी बाकी तबो ओकरा से तिहरा कम दाम वाला एह बसंती प चले के आनन्दे दोसर बा। इहो कम साथ नइखे देले। फेन चाहे उ कालेज आ ट्यूशन के क्लास करे के होखे चाहे अपना पहिला प्रेम के पाछे-पाछे ओकरा घरे जायके होखे भा एही पे लद-लदा के संघतियन संघे अगल-बगल के सहरन में क्रिकेट खेले के होखे। इहां तक कि रात के अन्हरिया में मारल गइल सुट्टनो के एकमात्र गवाह - हमार बसंती।

बैग के राणा आ जिम्मी देने लगभग फेंकत हम घरे जाय के जल्दी में बसंती के एक्सलेरेटर मरोड़ दीहनी। एकदमे नीन मे मातल सहर के चिरत निकले के आपन अलगे मजा बा। पसीना से तर भइल देह में जखनी ठंडा हवा घुसेला त ओके आपने एगो नसा बड़ुए, हम ओहमे मदमतइती ओह से पहिलही कुत्तन के भूँके से नसा टूटल। आ झटका से ब्रेक लगते हम अपना के अपना घर के आगू पइनी।

माई-बाबू जी हरेक बेरी लेखा घर के बहरिये मिलले। केतना बारी समझइले बानी, लेट भइला पऽ सूत जायल करस लो। घर के दोसरका चाभी तऽ रहबे करेला हमरा भीरी, हम खाएक गरम करके खाई लेब। अकेला दोसरा सहर में रहत अब तऽ आदतो भ गइल बा बाकी इ लोग काहे के माने जास। अपन चंगु-मंगू दोस्तन के विदा कइके जसही घरे घुसनी माई जल्दी से हाथ मुँह धोवे के निहोरा करे लगली।

आ हमरा आवते माई टेबुल पे हमार पसंदीदा आलू सरसों के तरी वाला तरकारी, दही-चीनी आ गरम-गरम रोटी। साँच ह कि फाइव स्टार के खाएक एक देने आ माई के हाथ के एक देने।

'जगदंबा घरे दीयरा बार अइनी हे' कान में पड़त इ मीठ गीत के संगे हमार नीन खुलल आ हम आश्चर्य में पड़ गइनी। आँख मिचमिचा के आपन कमरा में नजर फेरनी, का साँचो हम अपने घर में बानी? जंहवा भोरे-भोर कबाड़ी वालन के चिचीआये से होखत रहे। ओही आवाज के पाछे-पाछे हम बालकनी तकले आ गइनी। अरे! इ का?

इ आवाज तऽ सामने वालू सिन्हा चचा के घरे से आवत बा, बाकी उनका घरे के गावेला? लतवा का? अरे ना! उ तऽ कहिये बिदेस चल गइल आ चाची के आवाज त कवनो जिनगी में अइसन ना होखी! तब के? नजर उठा के जसही चाचा के उपर की किता के खिड़की प देखनी त अँटकल के अँटकले रह गइल।

अहा! केतना मीठ आवाज बा, आ ओहूसे जादे सुन्नर। चेहरा त अइसन माने कवनो हीरोइन होखे। टटकी लागल आँख आ थथमल साँस साथे जाने कतना देर ओह के हम निहारत रहनी। निसा तब टूटल जब पाछु से माई आके एक थपड़ीं पीठ पे देलस। 'अरे तू एतना जल्दी कइसे जाग गइलस? चलऽ बढ़िए भइल, जल्दी से हाथ-मुँह धो के आ जो। संगे नस्ता कइल जाई। तहरे पसंद के चूड़ा-मटर बनवले बानी।'

नस्ता के टेबुल पे पता चलल, सिन्हा चचा लता भीरी विदेस चल गइल बाड़े आ अपना घर के उपरका तल्ला कवनो 'खन्ना जी' के भाड़ा पे चढ़ा देले बाडे। घर के देखभालो हो जाला आ तनिक पईसो आ जाला। माई के नपल-तुलल आ सपाट शब्दन में नवका परिवार बड़ स्वार्थी बा। ना केहू से लेनदेन, ना कवनों बोलचाल। एह पारिवारिक मोहल्ला में एगो इहे अपारिवारिक परिवार बा।

तबे एगो हाथ में कटोरा लिहले बगल के रमा चाची घर में घुसली आ हमनी के बात के बीच में कूद गइली, 'हूह! उहो कवनो परिवार ह जी! दु लो के कवन परिवार? फेन न केहू से टोका-टोकी, न केहू से भात-रोटी। बाप-बेटी के दुनिया ओही लो से सुरू आ ओही लो पे खतम। बेटी तऽ आपन रूप के घमंडे मरले जातिया -'रूप गर्विता'। खैर छोरऽ! हमनी के का? एतना दिन बाद बेटा आयल बा तऽ एकरे पसन के इस्टू लेके आयल बानी, भात साथे खिया देम हमार दुलरूआ के।' एतना कह के उहां के माथ पऽ हाथ फेरत चल गइनी।

नामः विजया शर्मा
जन्म तिथिः 30 अप्रैल 1988
स्थाई पताः चंदा हाउस, पंजाब नेशनल बैंक के दक्षिण, राजेंद्र नगर, आरा, भोजपुर, बिहार
प्रकाशित किताबः **एकल**- सच बुनती हूँ मैं, **साझा**- इन्नर, घुमक्कड़ी जिन्दाबाद, कठपुतरी, सदानीरा है प्यार
संप्रतिः डायमंड ब्लॉक ए 4, राजीव स्वगृहा, आनंद नगर, बंदलगुडा, नागोल, हैदराबाद, तेलंगाना

दुपहरिया में राणा आ जिम्मी दूनो लो आ गइले। जइसही हमनी के कैरम जमल, हम उ सामने वाला बात छेड़ दिहनी। बात अभी छिड़ले रहे कि जिम्मिया आपन स्वभाव के अनुरूप जल्दी-जल्दी सभ बात उड़ेलल सुरू कऽ दिहलस। 'सामने वाला अभी तनिक दिन पहिलही शिफ्ट भइल बाड़े। परिवार में दुईये लो बाड़े, मिस्टर रूप लाल खन्ना, जे आर्मी से रिटायर बाड़े आ उनके बेटी नंदिता खन्ना! इ लो के खाली नामे पता बा उहो नेमेप्लेट से। नंदिता तऽ एतना सुन्नर बिया कि पुछबे मत करऽ बाकी कखनियो घरे से ना निकले, छतो पे ना। कवनो काम पे खाली खन्ना साहेबे निकलले। उ खाली साँझ-भोर रियाज करे ले खिड़की पऽ।'

पहिले पहिल गली के सब लोफर-लफुआन ओकरा खूब तड़ले सऽ, बाकी उ केहू के भाव ना दिहलस। कवनो आउर जरियो तऽ ना रहे ओह तक आपन बात चहुँपावे के। न केकरो आवा-जाही, इहां तक ले कि कवनो दाइओ-लौंडी ना। मोहल्ला के कवनो लइकन के गेनो चल गइल तऽ बॉल बिहाने रोडे पऽ मिलल। बाकी ओखनियो दरवाजा ना खुले। तबे रानी के स्ट्राइक करत जिम्मी बोलल, 'अरे रूप के घमंड होखी महारानी के, रूप गर्विता!'

साँझ के ओके रियाज के गीत हमरा आउर बेचैन कर देलख। अब तऽ राते-दिन ओके अलापन के इंतजार रहे लागल। बेचैनी में नीनो भोरही खुले लागल आ ओके मधुर गीत हमरा पे ओसही शीतल बरसावे लागल जइसे तपत रेती पऽ बारिस के बून। अब त सायद ओकरो हमार अहसास भ गइल। कभो-कभार हमनी के नजरो टकरा जाला तऽ सायद उ हमार नजर में अपना खातिर प्रेम देख के तनिक लजा जाले आ आँख नीचे कर लेवे ले। अब त हमरा बस एगो मौका चाहत रहे ओह तक आपन संदेसा चहुंपावे के, बाकी उ कहीं से संभव लागत ना रहे।

असही एगो साँझ लइकन के गेना ओकरा छत प जात देखनी, फेन का? अगिले छन एगो प्लान आ गइल दिमाग में। हम पहुँच गइनी बॉल के दोकान पे। बॉल के किन के घरे पहुँचनी आ कमरा में घुस के कुण्डी लगा लेनी।

ब्लेड से बॉल के आधा काट के ओह में आपन प्रणय निवेदन एगो कागज पऽ लिख के डाल दिहनी। साँझ के रियाज घड़ी उनका से नजरी मिलल तऽ उनका के देखा के मय ताकत लगा के बॉल के उनका खिड़की देने फेंक दिहनी। अब त इंतजारे के उखीबिखी में मय रात कटल। मय रात नजर घड़िये प टिकल रहल।

बिहाने बिहान जब हाता में नजर घुमइनी त नजर सीधे बॉले प गइल। दिल के धुकनी सम्हारत बॉल लेके सीधा आपन कोठरिये में घुस गइनी। प्रणय निवेदन तऽ अस्वीकार भ गइल रहे बाकी दोस्ती खातिर सहमति भेंटा गइल रहे। हमहूँ एकरा प्रीत के पहिलका सीढ़ी मान के खुस हो गइनी। अब त हरेक दिन आपन भावना पन्नन पऽ लिखल जाय लागल आ बॉल के माध्यम एक दोसरा के हृदय तक चहूँपे लागल।

अब उनके रियाजो में भजन के जगहा प्रीत आ मिलन के गीत गूंजे लागल। सभ धीरे-धीर सहज होखे लागल रहे, बस एगो समय आपन तेज गति से भागत रहे। एक महीना के छुट्टी में से पनरह दिन बीत चुकल रहे। बाकी के पनरहे दिन में हम उनका के आपन जिनगी में उतारल चाहत रहनी। बस अब ढेर दिन ना! कल्हे उनका के कसहूँ परपोज कऽ देब, फेन चाहे जे होखे। कम से कम जिनगी में कवनो मलाल तऽ ना रह जाई।

बिहाने नस्ता के बाद जब बहरी तिकनी त देखत बानी खन्ना चाचा कहीं जात लउकले, हम तऽ जइसे एही ताक में रही। मोहल्ला वालन से नजर बचावत हम उनका घरे घुस गइनी। दरवाजा पे हल्का धक्का देते उ खुल गइल। सायद भीतरे से बंद ना रहे। बाकी जसही नजर पड़ल उहो अचका गइली आ हमहूँ। बड़ झटका लागल हमरो आ व्हील चेयर पऽ बइठल नन्दितो के। जाने सुन्न होके हम कखनी ले ओहिजा खाड़ रहनी फेन जब होस पडल तऽ उल्टे गोड़ भाग चलनी। उ पीछे से आवाज देत रहली बाकी हम तऽ बस भाग जाइल चाहत रहनी। ना! अइसन ना हो सकत रहली हमार - रूप गर्विता!

साँझ के अइसन लागत रहे जइसे ओके तान हमरे पुकारत होखे बाकी हमार गोड़ आगे बढ़ते न रहे। ना! हमार प्रेमिका अइसन होइए ना सकत रहे। अइसन अर्धांगिनी के कल्पना के कर सकत बा, जेकर आपने अंग काम न करत होखे। उ कइसे हमार शक्ति बन सकत बिया जे अपने शारीरिक रूप से असक्त होखे। एही उधेड़बुन में कसहूँ रात कटल। एको बार हमार नजर उनके खिड़की देने ना गइल। जे भइल उ कल्पनो से इतर रहे एहिसे ठेसो ढेर लागल रहे।

भोरकी उनके रियाजो आउर अधिका विचलित करे वाला रहल। हम आपन कान पे तकिया रखले कसहूँ सूते के नाटक करत रह गइनी। अब एको पल काटल मुस्किल रहे। माई के नस्ता के टेबुल पे बतइनी कि हम फुआ घरे जा तानी जे बगले के शहर में रहे ली। फुआ घरे जाय खातिर घर से निकलनी त हाता में एगो बॉल पड़ल मिलल, नजर चुरावत कसहूँ चिट निकाल के जेतना तेजी से भाग सकत रही भाग लेनी।

मय रास्ता आ फुओ के घरे चहुँपिओ के हमार सोच हमार पीछा ना छोड़लस। ओहिजो बेचैनी पीछा ना छोड़लस। लागत रहे कसहूँ उनका भीरी पहुँच जइती। दिन बितते बीतत बेचैनी आउर बढ़े लागल। एकदम शांत मन से चिंतन करे बइठनी त बेचैनी आउर बढ़े लागल। खुद से घिन बरे लागल। छी! कइसन बानी हम? जे ओकर सीरत से ना शरीर से प्यार कइलस। का गलती ह उनकर कि आपन आखिरी चिट्ठी में हमरा से ऊ माफियो मंगली?

उ त हमरा से प्रेम के हामियो ना भरले रही। हमरा बेर-बेर प्रपोजो कइले प उ खाली दोस्तिये खातिर तइयार भइल रही। उनकर शरीर जेतना उनका असहाय ना कइलस जेतना की हम! उ तऽ कभियो हमरा से कुछुउ ना कहले रही तबो हम उनकर केतना अपमान कर दिहनी! का भइल जे उ शारीरिक रूप से असक्त बाड़ी?

का होई जे हमही उनकर शक्ति बन जाई? हमार प्रेम अतनो कमजोर नइखे कि खाली शारीरिक कमजोरी के कारन धीम पर जाए। ना! अइसन नइखे हो सकत। हमनी एक संगे पूरा हो जाइब जा, ऊ अब अपूर्णा ना पूर्णा हो जइहे।

अगिला दिन भोरही घरे चहुँप के उनके रियाज से पहिलही बालकनी में खड़ा हो गइनी। हमरा देखते उनकर चेहरा पे गजबे ताजगी आ गइल आ आँखिन में चमक। हमहूँ मुस्कात एगो बॉल उनका खिड़की देने खूब जोर से फेंकनी। ओह पर्ची में हमार दिल के बात लिखल रहे। 'हम तहार बानी, रूप गर्विता! खाली तहार!' ✱✱✱

नेह के परदा

अपना बेटवा के हतास, मुरझाइल चेहरा देख के केतना ब्याकुल रहले पाण्डेय जी। चंद्र भूषण पाण्डेय बनारस जिला के छोट से गाँव के एगो बहुते गरीब किसान हउवें। वइसे समूचा गाँव उनके 'लल्लन काका' कहेला। उनकर तीन गो बेटा आ एगो बेटी..... पढ़ें में सब अव्वल।

जहां तक ले लागल अपना सामर्थ्य के अनुसार लल्लन काका सबके पढ़वलन-लिखवलन बाकिर केहू के भाग्य के बखरा केहू थोड़ही न होला।

वइसे त गांव में कई लोगन के आगे पढ़े बदे छात्रवृत्तियो मिल जाला बाकिर लल्लन काका के लइकन के ई सुविधा ना मिलल कारन एगो त ब्राम्हण, ऊपर से ना कवनों सोरस ना कवनो पैरवी।

हार पाछ के बड़का लइकवा नोकरी खातिर रोज भाग दउड़ करे लागल पर इहवों त उहे हालात बा, 'धोबी के कुकुर ना घर के ना घाट के।' नोकरी खातिर परीक्षा दीहलस एक जगे आरक्षण के कारन तनिके से रह गइल, दुसरा जगे घूस ना दे पवले के कारन मामला लटक गइल।

उहवें मोट घूस देके घूरहू के मझिला लइकवा नोकरी पा गइल। अदना सिपाही बा लेकिन एके साल में एगो टेकटर, एगो दू पहिया वाला फटफटिया कीन लिहलस। 'एतने ना चलेला त केतना रुआब से चलेला, लागेला जइसे कही के लाटसाहब ह'। काहे ना भाई सरकारी नोकरी आ ओहू में सिपाही ... रूआब त रहबे करी।

चनाराम के छोटका के भी त नोकरिया होइये गइल। ओकर त हाईटो घींच घाच के पांचे फूट होई। दउड़ में भी कवनो खास ना रहे, लेकिन सबसे बड़का बात बाप के गेठरी में पइसा, बड़-बड़ साहेब सुबहा के बीच उठल बइठल, आ ओकरा पर सबसे बड़हन बात सोना पर सुहागा आरक्षन .. ओकरो बेड़ा पार हो गइल, ऊ त रेल गाड़ी में जीआरपी की सीआरपी अइसने कुछो कहल जाला ओह में सिपाही हो गइल। सुने में त इहाँ तकले आवता रेलगड़िया में आवे जाये वालन के मोटरी-गेठरी चेक करेला अउर भुलिया-फुसला के खूबे पइसा टानेला।

'चलीं बिलाई के भागे सिकहर टूटल, एही के कहल जाला', नाहीं त भुटेलिया कवने लायक रहल ह। आज पांच महीना से रोजे लल्लन काका के बड़का लइकवा संतोषवा एह ऑफिस से ओह ऑफिस, एह दुआर से ओह दुआर, दउड़ लगावता लेकिन हर जगे निरशे हाथ लागता। सरकारी त सरकारी कवनों प्राइवेटो काम नइखे मिलत।

रोज सबेरे तइयार होके जाला, लागेला जइसे आज नोकरी लेइये के आई बाकिर जब साँझ के घरे आवेला त मुंहवा सुखल आ लटकल रहेला, जवना के देख के लल्लन काका के हियरा ब्याकुल

होके खीरनी नू काटे लागेला। आज हार पाछ के संतोष ई फैसला कइलऽ स कि अब ऊ सरकारी नोकरी के चक्कर में ना परी। अब दिल्ली चाहे पंजाब जाई। ओहीजा कमाई भले जवने काम मिली।

लल्लन काका चनाराम से एक हजार रोपेया पईंचा मांग के लईलन ह। ईहे रोपेया लेके संतोष दिल्ली जायेके तइयार भइलन ह। जइसही संतोष घर से बाहर जाये बदे तइयार भइलें लल्लन काका उनका आज के जमाना में रोज बेरोज घटे वाला हर एक घटना से अवगत करावे लगलें, हर एक ऊंच-नीच, सही-गलत, भला-बुरा से कइसे बाँचल जाय, बतावे लगलन।

अइसे त संतोष लल्लन काका के अपेक्षा अधिके पढ़ल बाड़े, तेज-तर्रार भी खूबे बाड़े बाकिर बाप त बापे होला ऊ अमीर होय या गरीब, कवनो भी जाती, सम्प्रदाय या समाज से होखे बेटा-बेटी के भविष्य, सुघर, सुनर जीवन यापन, स्वास्थ्य, भला-बुरा के प्रति हमेशा सजग रहेला।

आज के जनरेशन एह बात के बुरा भी माने लागल बा ई कहके कि काहे दिमाग के दही करतानी, हम अब लइका नइखीं, हम आपन भला बुरा खुदहीं सोच आ कर सकीला। ऊ अब आपन सत्ता सिद्ध कइल चाहेला

नाम: विभा पाठक
जन्म तिथि: 23 जुलाई 1995
स्थायी पता: बेली रोड, पटना
प्रकाशित किताब: बनारस की शाम, अहम का मोहरा

फिर भी बाप के मन सत्ता सिद्धि के लालसा से ना अपितु अपना बेटा-बेटी के सुघर भविष्य, स्वस्थ जीवन के मंगल कामना बदे बेचैन रहेला।

सत्ता सिद्धि वाला कीटाणु पहिले कुछ कम रहे आजकल जरूरत से जादा बा कारण आज के सामाजिक परिवेश पहिले के अपेक्षा कुछ जादा खुला खुला सा हो गइल बा। छोड़ी सबे हमहूँ ना जाने कवने बात में लाग गइनी।

ह त लल्लन काका अच्छा तरह से सबकुछ समझा के तब कहीं संतोष के दिल्ली जाये दिहले। दिल्ली में पहिले से हीं बहादुर काका के छोटका लइका रजुवा रहेला ई ओकरे पता लेके उहवाँ पहुंचल, दु-चार दिन के भाग-दउड़ के बाद संतोष के एगो कम्पनी में नोकरी मिल गइल।

एक महीना उनकर खर्चा राजू उठवले। पइसा मिलते राजू ऊ पइसा ईहवाँ के खर्च खोराकी छांट के लल्लन काका के नामे भेज दिहले। ई सिलसिला एही तरी चले लागल। धीरे-धीरे संतोष अपने दुसरका भाई बिनोद के भी दिल्लीये बोला लिहले। दूनो भाई पान छः साल खूब मेहनत से कमाके बहिन के बिआहे के तइयारी करे लगलन।

एक दिन संतोष अपना बहिन सीमा बदे केहू के बतावल जगह पर लइका देखे गइलन। लइका देखे में त ठीके ठाक रहे बाकिर रहे पक्का टिनहिया हीरो- जीन्स के पाईंट, हीरो छापदार वाला टी सरट, आँखी में लगावे वाला चश्मा, मूड़ी में खोसले रहे...।

ई लइका संतोष के फुटलियों आंखी ना सोहाइल, बिना कवनों बाते बिचार कइले ऊ वापस आ गइलें। आके सब बात अपना बाबूजी से बतवलें।

बाबूजी अपना बेटा के बात से बड़ा हर्षित भइलें। ऊहो त ई बतिया जानते रहलें कि हर एक भाई अपने बहिन के अच्छा से अच्छा घर बर देखि के हीं बियाहल चाहेला। जब बरे नीक ना त बिआह कइसन।

अब जहाँ-जहाँ लोग बतावे, उहाँ-उहाँ बाप-बेटा बरतुहारी करे जाय लोग। 'घर सुघर मिले त बर ना, आ बर सुघर मिले त घर ना', आ जहवाँ ई दूनों सुभइत मिले उहवाँ दहेज एतना मंगाय कि सुनते बाप-बेटा के झिनझीनी ऊपट जाय।

खैर कइसहूँ हीत-पाहुन के जोर जबरी एगो रिश्ता तय भ गइल, वइसे त ईहो रिश्ता संतोष के मन लायक नाहिये रहे पर करें त का करें, 'जईसन जाथा वईसने नु कथा होई'। जथा अनुसार बड़ा धूममधाम से सिमवा के बिआह भइल। सभ रिश्तेदार नेवतल गइलें। सबकर खूब खातिरदारी भइल। बिआह के दूसरे रोज सीमा के बिदाई हो गइल। संतोष एह जाल से मुक्ति पा गइलन।

देखीं सभे, कुरीति के दुष्परिणाम, एगो बेटी एगो बहिन जवन बाप भाई के हृदय के टुकड़ा होले, ई नामुराद दहेज के कारण समाज ओहके बोझ के संज्ञा देवेला, आखिर ई कहाँ ले जायज बा।

आज एही दहेज के कारण लोग भ्रूण के जांच कराके बेटियन के कोखे में मरवा देता। बेटी जवन कि लक्ष्मी होले, ओकरा जनमते जइसे सगरे घर में मातम पसर जाला, आखिर ई कहाँ तकले जाईज बा, जबकी माई-बाप के प्रति सबसे जादा फिकिर, बेटवन से भी जादा, बेटियन के ही रहेला।

समय बीतत गइल। संतोष आ बिनोद अपना कमाई के बलबूते अपना छोटका भाई जयप्रकाश के डाकटरी पढ़ा दिहलें। एही बीच एक नीमन लइकी देख संतोष बिनोद के बिआह कई दिहलें, बिआह होखते बिनोद के मेहरारू बिनोद के बाप-भाई से अलगा करा दिहलस, ई कहके कि कबले सबकर भूथरा भरत रहब, काल्ह जब आपन बाल-बच्चा होईहें त उनका के का देब घंटा।

जयप्रकाश के ई बात नीके लागल। ऊ संतोष से कहलन। संतोष कवनो आपत्ति ना कइलन। सबका सहमति से बिनोद अलग रहे लगलन। एने जयप्रकाश डाक्टर बन गइलें। उनकरो शादी बिआह हो गइल। कुछ दिन त सब कुछ अच्छे से चलल।

कुछ दिन बाद 'लल्लन काका' के स्वर्गवास हो गइल। अबहिन उनका काम किरीया के पाँचे-दस दिन बीतल रहे, जयप्रकाश के मेहरारू साफ-साफ शब्द में कह दिहली कि अगर भाईजी के तूं अपना संगे रखबऽ त हम तोहरा संगे ना रहेम। जयप्रकाश त मजबूरे रहलन, कारन ठूंठ पेड़ ना फले लायक ना छाया लायक।

जयप्रकाश संतोष से कह दिहलन तूं अब आपन खुदे चेत। अब हम आपने परिवार के सम्हाले में परेशान बानी, एह में तोहरो बोझ कइसे ढोई। ना होखे त तूं बिनोद भईया के संगे रह जा।

उनकर मेहरारू घरहीं नू रहेली। बनावल खिआवल ऊ कई लीहें, बाकिर हमार मेहरारू त नोकरी करेले, ऊ फ्री त बीया ना जवन तोहके बनाई खियाई। संतोष कुछ बोल त ना सकलें बस जीवन के परत दर परत उठत ई नेह के परदा से खुद के ठगल महसूस करत रहलन। उनकर आँख भर गइल। ✶✶✶

हमसफर

आई.सी.यू के बेड नंबर पांच पर 65 साल के राजकुमारी देवी भर्ती रहली। बिछावना पर ओठंगल राजकुमारी देवी के बूढ़ आँख दरवाजा के ओरी टकटकी लगइले रहे। अस्पताल के उजर देवार उनका के आउरी अकेला महसूस करावत रहे। घड़ी के सुइयो धीरे-धीरे चलत रहे, बाकिर उनका इंतजार के घड़ी कबो ना ओरात रहे। उनकर झुर्री से भरल चेहरा चिंता के लकीर से भरल रहे। डॉक्टर बतइले रहले कि उनकर पथरी के ऑपरेशन होखे के बा, बाकिर उनकर मन बेटा के इंतजार में बेचैन रहे। तीन दिन हो गइल रहे, बेटा राकेश के अस्पताल में भर्ती कराके गइला, बाकिर अबहीं ले ऊ वापस ना आइल रहले। 'अइहें... जरूर इहें, टाइम ना मिलल होई', ऊ अपना आप के समझावत रहली, बाकिर दिल में एगो अजीबे डर समाइल रहे। जब नर्स ब्लड प्रेशर चेक करे जास तब ऊ कहस 'अम्मा जी रउरा का सोचत बानी एतना, जे बीपी बढ़ऽले रहऽता रउरा टेंशन काहे लेत बानी, सगरी टेंशन के त्याग के सूत जाईं, काहेकि बीपी जब तकले कंट्रोल ना होई, तब तकले ऑपरेशन कइसे होई?' एतना सुनते राजकुमारी देवी के आंख से गंगा-यमुना के धार निकले लगात रहे। अपना लोर के पोछत ऊ कंपकंपात ओठ से कहली 'अरे बिटिया तू का जनऽबू ई बेबस लाचार माई के दिल के दरद, हमार बेटा अबहीं तकले ना अइलें, का जाने कहवां बाड़े' एतने कहत ऊ रोए लगली। नर्स कहली 'अम्मा जी हम बानी नू राउर ध्यान राखे खातिर। ई आईसीयू वार्ड हऽ, इहवां राउर बेटा रहते, तबो हम उनका के इहां रहे ना देती'। राजकुमारी देवी आपन लोर पोछत कंपकंपात कहली- 'ए बेटी हम एतना बेवकूफ नइखीं कि हम ई बात के ना समझी, बाकिर जब केहू आपन, अपना करीब रहेला तऽ वोसे हिम्मत मिलेला।'

नर्सिंग ऑफिसर सचिन राजकुमारी देवी के फाइल पर उनकर ब्लड प्रेशर रिपोर्ट नोट करत कहले- 'अम्मा रउरा तऽ बहुते बहादुर बानी, पहिले के खाइल-पीयल देह बा। रउरा सामने कवनो नौजवान छोकरी नइखे टिक सकत। एतना रउरा टाइट (स्ट्रांग) बानी तबो हिम्मत काहे हारत बानी। रउरा खिसियाई मत अम्मा, हम बानी नू रउरा खातिर। हम रउरा बेटा से कम थोड़े बानी। हमरा के देखीं, हम राउर ख्याल ना राखेनी का? अगर ना राखेनी तऽ बताईं कइसे ख्याल राखीं, जवना से रउरा खुश रहेम आ ब्लड प्रेशर नॉर्मल रही।' ई कहते लेडीज नर्स खुशी आ सचिन दूनू लोग उहां से जाते-जाते फेरू कहलस लोग - 'अम्मा रउरा सूते के कोशिश करी, सूत जाएम तऽ काल्ह ऑपरेशन हो जाई, अगर ब्लड प्रेशर कंट्रोल रही तऽ।' बाकिर राजकुमारी देवी के बेचैनी बढ़त जात रहे। उनकर आँख बार-बार दरवाजा ओरी ताकत रहे, शायद बेटा अइहें आ कहिहे - 'माई, हम आ गइनी!' बाकिर हर बेरी उहे सून्न देवार, उहे अजनबी चेहरा।

दिन भर इंतजार करे के बाद सांझी बेरी ऊ टहलत खुदे बड़बडात रहली- 'मेहरारू से टाइम मिली तब नू अइहें, हमार बहुरिया आवे ना देत होइहें।' लेफ्ट-राइट वाक करत ऊ धीरे-धीरे बुदबुदात अपना साड़ी के आँचर से आंख के लोर पोछली आ अपना बिछावना पर ओठंग गइली। आजो पूरा दिन बीत जाए के बाद अम्मा के बर्दाश्त ना भइल आ जाके सचिन के कहली- 'अरे बेटवा, तनी फोन लगाई दऽ तऽ हमरा सुपुत्तर के'। सचिन कहले- 'जवन एडमिशन फॉर्म पर नंबर बा, एही पर फोन करे के बा नू?' अम्मा बोलली- 'हां ए बबुआ ओही पर करे के बा।' राजकुमारी देवी अपना कांपत हाथ से सचिन के फोन के धइली। ऊ कए बेरी राकेश के फोन करवइली, बाकिर हर बेरी 'फोन स्विच ऑफ बा' के आवाज सुनके राजकुमारी देवी के आँख लोर से डबडबा जात रहे।

का भइल होई राकेश के? कहीं कवनो हादसा तऽ नइखे नू हो गइल? चाहे फिरू....... का हमार बेटा हमरा के जानबूझ के इहवां छोड़ देले बाड़े? ना-ना, अइसन नइखे हो सकत! हमार बेटा अइसन नइखन कर सकत! बाकिर मन के कोना में उनका एगो डर रहे, एगो अनकहल आशंका। तबे एगो नर्स कमरा में आ के कहली- 'अम्मा राउर ब्लड प्रेशर बहुते बढ़ल बा, रउरा टेंशन ना लेबे के चाही।' राजकुमारी देवी कमजोर आवाज में पूछली- 'बिटिया, हमरा बेटा राकेश के फोन आइल हऽ?' नर्स ना में मुड़ी हिलावत आगे बढ़ गइली। ढेर देरी के बाद आखिर में राकेश के फोन के घंटी बाजल। सचिन राजकुमारी देवी के आवाज लगावत कहले- 'ली

नामः कुमारी शुभम मिश्रा
जन्मतिथिः 5 फरवरी 1996
प्रकाशित किताबः तोहके हमार सलाम (काव्य संग्रह), सबका चाही दिल्ली (अनूदित काव्य संग्रह)
संपर्कः 79, तीसरा मंजिल, बालमुकुंद खंड, गिरी नगर, कालका जी, नई दिल्ली
संप्रतिः स्वतंत्र लेखन, कवयित्री आ लेखिका

अम्मा बातिया लीं, रउरा बेटा के लगे फोन लाग गइल।' अम्मा झझक के कहली- 'हमरा उनका से कवनो बात नइखे करे के, बबुआ खाली तू एतना पूछ लऽ कि ऊ कहवां बाड़े आ कब ले अइहें।' सचिन राकेश के फोन उठा के कहले- 'भाई साहब तहार अम्मा तहरा के खोजत बाड़ी आ पूछत बाड़ी कि तू कब ले अइबऽ आ कहवां बाड़ऽ अबहीं?' राकेश एतना सुनते तमतमा गइलें आ कहलें- 'हम दिल्ली में ही बानी आ अबहीं ना आ पाएम, आजकल बहुते बिजी बानी हम, जब फ्री होखेम तब आएम, माई के एतना बेचैनी काहे धइले बा, अस्पताल में कवनो दिक्कत थोड़े बा उनका' कहत फोन काट देलें।

सचिन फोन के स्क्रीन निहारत कहले- 'बड़ा विचित्र इंसान बाड़े राकेश, माई के भर्ती करा के गइलें तब से खोज-खबर भी ना लेलें आ आज एतना गर्मी के बोली.....हद बा!' राजकुमारी देवी अपना बेटा के बतकही सुनके निराश हो गइली। तले डॉक्टर साहेब अइनी, नर्स अइली, बाकिर जवना चेहरा के राजकुमारी देवी खोजत रहली, ऊ चेहरा कतहीं नजर ना आइल। बेड पर ओठंगल-ओठंगल ऊ अपना कांपत अंगूरी से चदर के कस के पकड़के कहली 'अबहीं हमार बुढ़ऊ बाड़े' ई कहते ऊ अपना आँचर के गठरी खोल के ओमे से एगो पर्ची पर लिखल नंबर सचिन के धरावत कहली- 'ए बबुआ तनी हमरा बुढ़ऊ के फोन कऽ के इहवां के पता आ अस्पताल के नाम बता दऽ आ कह दऽ कि हमार बीपी बढ़ले रहत बा, जवना से ऑपरेशन नइखे होत, आ राकेश के कवनो आता-पता नइखे। जेतना जल्दी होखे बुढ़ऊ हमरा लगे आ जास।' सचिन के फोन लगा के एतना बात कहते ओने से आवाज आइल- 'बुड्ढी तू चिंता मत करऽ, हम तुरंते आवत बानी!'

एतना सुनला के बाद अम्मा के एगो सुकून मिलल, एगो उम्मीद मिलल, अपना आदमी के आवे के आभास मिलल, जवन आंख लोर से सराबोर रहत रहे ऊ आंख में आज चमक दिखल। घंटो इंतजार के बाद आखिरकार....रात के 11 बजत होई तबे आईसीयू के दरवाजा खुलल आ एगो 72 बरिस के बुजुर्ग आईसीयू के भितरी अइलें, जेकरा के देखते अम्मा के चेहरा के मुस्कान बढ़ गइल आ ऊ उठके कहली - 'आ गइलें हमार बुढ़ऊ... कवनो परेशानी तऽ ना नू भइल हऽ आवे में?'

हांफत, पसीना में लथपथ उजर धोती-कुर्ता पहिनले मुड़ी पर लाल पगड़ी बंधले राम अवतार राजकुमारी देवी के ओरी बढ़े लगले आ कहले- 'बुढ़ी, देखऽ हम आ गइनी, अब सब ठीक हो जाई। जब तकले हम जियत बानी तब तकले तहरा कवनो चीज के टेंशन लेबे के जरूरत नइखे, हम बुढ़ऽ बानी तऽ का भइल हम तहरा खातिर हरमेसा खड़ा मिलेम।' एतना सुनते राजकुमारी देवी अपना पति के हाथ पकड़ के सुकून के सांस लेली आ दुनू आंख से राहत के लोर आपरूपी बहे लागल।

तबे डॉक्टर आनंद भितरी आवत कहले- 'आपको टेंशन लेने की जरूरत नहीं है, अब ऑपरेशन ठीक से हो जाएगा क्योंकि अब आपका ब्लड प्रेशर एकदम नॉर्मल है और शुगर भी नॉर्मल है।' ई सुनते राजकुमारी देवी के चेहरा पर एगो अलगे चमक रहे। अस्पताल के माहौल उहे रहे, कमरा में अबहिंयो सफेदी रहे, बाकिर अब राजकुमारी देवी के चेहरा पर सुकून लौट आइल रहे, काहेकि अम्मा के हमसफर आ गइल रहलें। ✶✶✶

मन के चौकठ

वंदना के बियाह भइले दस माह हो गइल रहे बाकिर एक दिन भी नसीब में अइसन ना रहे कि सभके संघरी एक कप चाय नसीब होखे। समय के खेल देखीं निराला ही होला। उहो एगो समय रहे जब वरुन के बियाहे के खूब हल्ला रहे बकिर केहू वरून से न पूछलस कि तोहार का मन बा ?

वरुन स्कूल डेज से ही वंदना के पसंद करत रहें। वंदना स्कूल के सबसे होनहार आ सुंदर लइकिन में एक रहली। एक नजर में एकदम धीरा पूरा त बास्केट बाल ग्राउंड में हवा नीयन तेज, डिबेट रूम में त कौनो जोड़ ही ना रहे।

क्षत्रधारी सुकुल के एकलौती बेटी वंदना के ट्रेनिंग खून में ही रहल। आर्मी से वीआरेस लेके सुकुल जी खेती बारी में रमके बिटिया पर पूरा धेयान दें त महतारी ओही स्कूल में संस्कृत के टीचर रहली जेहमें वंदना पढ़ें। महतारी अपने समय के स्कूल चैंपियन धावक रहली। कवनो बचवे ढींठई में धरा जाये पर भागे लगे त सुकुलाइन महटराइन अस दउड़ावें की बयारी के वेग सलामी ठोके। बार्डर वाली साड़ी और स्पोर्ट्स जूता के कंबिनेशन विमला सुकुल के बिल्कुल अलग बनावे। वंदना रूप से माई पर आ देह से बाबूजी पर गइल रहली।

वरूण ग्रामीण विधायक सूर्यभान मिसिर के छोट बेटा रहलें। वंदना जेतने तेज वरूण ओतने भोथर। एक क्लास से दूसरा क्लास में पहुंचिहें कि ना एह चिंता में डूबल मिसिर जी जस सुनें कि वरुण पास बाने जवार भर मिठाई बटवां दें। वंदना पचासी पर्सेंट नंबर पर रोवत रहें आ वरुण पैंतीस पर्सेंट नंबर पर खुसी से नाचत रहें।

सातवीं दर्जा में विमला मैडम वरुण के क्लास टीचर भइली। वंदना आठ में पढ़त रही। वरुण के रेमेडियल क्लास के जरूरत समझ के विमला मैम वरुण पर एक्स्ट्रा ध्यान देवे लगली। एक दिन लंच ब्रेक में वंदना देखली वरुण ग्राउंड में बइठ के गणित के सवाल हल करत बाने। ओहमे एक गलती पर वंदना के नजर ठहरल आ ऊ पेंसिल लेके ठीक क देहली आ चल देहली। वरूण वंदना के देखते रहि गइलें। रोज लंच ब्रेक में नजर कहीं न कहीं वंदना के खोजे। जब तक लउक न जांव तब तक बेचैनी रहे। देखते भर में एतना तसल्ली होखे कि दस सवाल हल हो जा। वरुण के पढ़ाई में तेज सुधार आइल। अबकी वरूण के पचहत्तर पर्सेंट नंबर से मिसिर जी एकदम गदगद रहलें।

वरुण के आठवीं क्लास आ वंदना के नौंवी क्लास बीतल। वंदना दसवीं में रहली आ वरुण नौवीं में। वरुण मन में वंदना के पसंद करें लेकिन ऊ जानत रहें कि कहे भर के हिम्मत न रहे। सोचलें कि पहिले कुछ अच्छा त करीं तब त कहब। दिन रात वरुण मेहनत करे लगलें। वरुण नौ में स्कूल में पहिला स्थान ले अइने आ वंदना जवार के नाम बोर्ड परीक्षा में

रौशन क देहली। वंदना ग्यारहवीं में गणित लेके पढ़े लगली आ वरुण के दसवी के परीक्षा रहे। थियरम संबंधित दुविधा लेके वरुण वंदना के क्लास में जाके उनसे पूछलन,वंदना सर्र देना दुविधा हल कर देहली, वरुण एकदम भौचक्का। वंदना वरुण खातिर प्रेरणा रहली, दिन रात वरुण एक क देहले रहें। केहू समझ न पावे कि वरुण एतना सीधा, मेधावी आ शांत कइसे हो गइने। वरुण वंदना के जेतना पसंद करें ओसे ढेर ऊ उनकर रोल मॉडल रहली। दसवी बोर्ड में वरुण स्कूल में दूसरा स्थान हासिल कइलन। वरुण के परिवार जेतना खुस रहे ओतना चकित रहे। मिसरा जी के मित्र खबर सुनलन त सुझाव देहलन कि वरुण के दाखिला दून स्कूल में करावल जाव। न चाहते हुये भी वरुण के दून स्कूल में जायेके पड़ल। वंदना के बारे में सोच के वरुण एक मिनट के एकदम अचेत महसूस करें त अगले मिनट खुद के बटोरें। साझा स्मृति के नाम पर ओह थियरम के सुलझावत वंदना के हैंडराइटिंग में कुछ फामूर्ला आ रफवर्क वरुण के साथ दून स्कूल के हास्टल में दाखिल भइल। समय बीतत वंदना आइआइटी भिलाई में पढ़े लगली आ वरुण यंग साइंटिस्ट के रूप में नासा के एगो प्रोजेक्ट में काम करे लगलें। फिर बीतत समय के बाद वंदना टाटा कंपनी में बहुत बड़े प्रोजेक्ट के मैनेजर

नामः डॉ. आकृति विज्ञा 'अर्पण'
जन्मतिथिः 23 जून 1998
स्थाई पताः रायगंज बाजार, खोराबार, गोरखपुर
प्रकाशित किताबः लोकगीत सी लड़की (हिन्दी प्रेम-पत्र संग्रह), सुनो बसन्ती (हिन्दी कविता-ग्रह), ललमुनिया (भोजपुरी कविता-संग्रह)
संप्रतिः अध्यापन

www.bhojpurisahityangan.com

के रूप में कार्यरत रहली आ वरुण एयर क्राफ्ट कंपनी में अच्छे पोस्ट पर रहलें। वरुण हरदम सोचें कि छुट्टी पाइब त वंदना के खोजब आ एहर वंदना ऋषि पाठक (अपने कलिग) के विवाह प्रस्ताव पर विचार करत रहली।

माई बाबूजी के सहमति के बाद वंदना अपने भविष्य के लेके बहुत प्रसन्न आ निहचिंत रहली।

जन्माष्टमी के रैली के बाद वंदना आ ऋषि बाइक से घरे जात रहलें, बदमाशन के झुंड सीटी मारे लगल। वंदना के महसूस भइल कि केहू उनके पीछे से अजीब तरह टच करत बा, अचके रीसि लगल ऊ बाइक से उतरि के एक मिला के एक झापड़ दे देहली। ऊ कुल उनके फूहर गारी देहने बस ऋषि हाथा पाई कर देहने। एतना देर में वंदना पुलिस के फोन क देहली। पुलिस मौके पर आइल आ बदमाश लोग धरा गइल।

बात बीतल,रात बीतल। अगले दिन खबर अखबार में रहे। ऋषि के घरे तहलका मचल रहे काहें कि अखबार में नाम त नाही आइल लेकिन बदमाशन में एक मिला ऋषि के पापा के कंपनी के पार्टनर के बेटा रहे। ऋषि के पिता जी ऋषि के विवाह ओही पार्टनर के बेटी से चाहत रहें बाकिर ऋषि के जिद से हारि के वंदना खातिर हँ कइले रहें। उनके भी मौका मिलल, कहे लगलें अब्बे से आफत के दुकान बाड़ी बादे में कवन दिन देखे के रही। बात के दूसरे तरह घूमा के वंदना के खिलाफ करल जात रहे, पहिले त ऋषि वंदना के बचाव करत रहें बाकि बाद में ऊ फ्रस्ट्रेशन में रहें लगलें। कवनो बाति पर एतना तनाव बढ़ल कि ऋषि कहलें कि गुंडा तोहके छेड़लें यानी कि तोहमें छेड़ाये लायक गुन बा, त वंदना कहली कि ईहे तोहरे बहिन संगे होत तब? ऋषि कहलें हमरे बहिन के बराबरी मत सोचिह। वंदना के ई बात मन पे लगि गइल।

बिना कारण खटास बढ़े लगल, आ एक दिन वंदना अलग होयेके निर्णय पर विचार करत ऋषि के चिट्ठी लिखली। भावुक आ लमहर चिट्ठी के जवाब एतने मिलल कि हमहूं आपन सगाई कहीं और सोच रहल बानी।

वंदना और ऋषि दूनो जानत रहें कि बेवजह के अलगाव बा लेकिन

अलगाव असहीं होला मति आ समय के गति के घनचक्कर में भाव भावना के जवन नुकसान होला ऊ कहे में कहां संभव?

वंदना घोर डिप्रेशन में रहली। नौकरी छोड़ के घर आवे के नौबत आ गइल रहे। बड़भागि रहे कि मेंटल हेल्थ के लीव मिलल रहे। वरुण घर आइल रहलें। पूरा गांव में वंदना आ ऋषि के रिश्ता टूटले के खबर हवा रहे काहेंकि इंगेजमेंट होखेके रहे त सबके बतावल गइल रहे बाकि समय बदलत देर कहां लगेला।

वरुण के रिश्ता के लाइन लगल रहे। वरुण वंदना के गांव जाके उनसे मिलल चाहत रहें। विश्वा उनके पूरा बात बतवले रहे। विश्वा आ वरुण वंदना के घरे पहुंचले। विमला मैडम वरुण के देखके खुस रहली। वरुण बात बात में पूछलन वंदना जी के का हाल बा? मैडम के चेहरा उतर गइल। विश्वा चुपचाप रहे। वरुण हिम्मत करके कहलें मैडम अगर आप मन बनाइब त हम वंदना जी के आजीवन खयाल रखब.....हम विवाह करल चाहत बानी। अगर आप न चाहेम त कौनो बात नाहीं अगर सहमति होई त आप हमें फोन करब। हम प्रतीक्षा करब। हमके दान दहेज न चाहीं बस हम वंदना जी के आजीवन खयाल रखब। एतना कहिके.....कागज पर वरुण आपन नंबर लिखके टेबल पर ध देहने आ घर से निकल अइने। मस्टराईन एकदम जस काठ मरले होखे ओस शांत देखत रहि गइली।

एहर विश्वा एकदम हैरान। वरुण के चेहरा लाल आ धड़कन तेज। एकदम मौन पसरल रहे।

वरुण बेर बेर फोन देखें। दुनिया से बेखबर वरुण के केहू के बात के फिकिर न रहे। दू दिन, तीन दिन हफ्ता बीतल। एक दुपहर वरुण आनलाइन वीडियो कान्फ्रेंस अटेंड करत रहलें फोन बजल। उनके इन्ट्यूशन रहे तुरंत कहलें ओ माय गाड इट्स टू इमरजेंसी..... वीडियो कट क देहलें। फोन उठवलें एकदम चुप रहलें। ओहर से आवाज आइल .....बाबू हम वंदना के मम्मी। हम का कहीं? एगो माई कहतिया कि आप के दामाद रूप में पाके हम धन्य होइब लेकिन एगो गुरु कहतिया कि आपके बार बार पुनः विचार करेके चाहीं। वंदना उबरल ना बाड़ी। पता न का होई?

वरुण कहलें बस ई बताईं कि ई लगन कि अगला लगन? मस्टराइन कहली, बाबू आप के जो ठीक लगे। वरुण कहलें बियाह बाहर रेसिडेंसियल होई, ज़िम्मेदारी पूरा हमार रही बाकि ई बात केहू जाने न। क्लोज रिश्तेदार लोग रही खाली। फोन एने स्पीकर पर रहे वंदना ठूंठ नीयन सुनत रहली। सुकुल सुकुलाइन उनके पकड़ि के रोवत रहलें।

अब वरुण के घरे बात करेके रहे।

वरुण सांझि बेरा अपने बाबूजी से कहलें पिताजी हमके कुछ कहेके बा। पिताजी एकदम खुस। कहलें अहोभाग्य। वरुण कहलें पिताजी हमके एक लड़की पसंद बाड़ी आ हमके विवाह करेके बा। पिताजी एकदम खुस होके पूछलें के हो?

वरुण ज्यों बतवलें उनकर बाबूजी के चेहरा त उतरल बाकिर वरुण समझा बूझा लिहलें। बाकिर वरुण के मम्मी कवनो कीमत पर राजी न

रहली। वरुण के जिद के नाते बियाह तय त हो गइल बाकिर घर के औरत लोग के मन में वंदना खातिर बहुत दुर्भावना रहे।

बियाह हो गइल, वंदना ससुरा आ गइली। वरुण के माई वंदना के आपन पतोह माने के तैयार न रहें। वंदना के चूल्हा छुआई रस्म के बिना ही वंदना रसोई संभार लेहली।

माह दू माह, करत करत दसवां माह बीते पर आ गइल बाकिर वंदना के सास संघरी संवाद न स्थापित रहे। वंदना सबके खाना परोस के खियाके किनारे कमरा में खाना खात रहें। वंदना के डिप्रेशन के दौर बीत चुकल रहे बाकिर सास के नाराजगी के कारण ऊ नौकरी फिर से न ज्वाइन क सकली।

सास उनकर बनावल त खात रहें लेकिन उनकर परोसल ना। सास देहिं छुआ जाये पर भी रिसियात रहें, एहसे वंदना दूर दूर रहें।

वरुण कहें मम्मी वंदना के आपन मानि लेतू त केतना सुख भरि जात, आंगन में।

वरुण के मम्मी कहें कि हम कहां कुछ कहत बानी, बस हम एतना खुसनसीब न बानी कि आपन पतोह के चौकठ छुआईं। जब हमार मन ही न राजी रहे त ढकोसला काहें करीं। हम मरि जाईं हमके जरूरत न पड़े केहू के, भगवान एतना बनवले रहें। वंदना मन में सोचें कि हम एतना खुसनसीब न बानीं कि सास चौकठ छुआवें, फिर मन मसोस के वंदना आपन काम में लग जाएं।

दूपहर के बेला रहे घर पर बस वंदना आ सासू मां रहली। अचानक सास के कमरा से तेज आवाज आइल, वंदना भागत गइली। देखली सास ढीमला के गिरल रहली। तुरंत वंदना समझि गइली, कुछ ठीक न बा। समय भांपत पहिले एंबुलेंस के फोन करके वंदना सास के लेके सिटी हास्पिटल निकर गइली आ फिर फोन करके सबके बोलवली। डाक्टर देखलन आ कहे लगलन कि तोहार पतोह के सही समय पर सही निर्णय से तोहार जान बचल बा।

सास चाहि के भी धन्यवाद न दे सकली। सब घरे आइल।

वंदना दिन रात एक करके सास के सेवा जतन करें। सास एकदम स्वस्थ हो गइली।

वंदना खैका बनाके सास लगे बइठल रहली। सास के चुप्पा स्थिति देखके वंदना के रहि ना गइल। अचानक ऊ सास के गले लगिके रोवे लगली। कहे लगली हम बाउर बानी बाकिर माई पर अधिकार त हवे नु? आप के कुछ हो जात त हम का जवाब देतीं? कवने चिंता में रहेलीं?

हमसे दुख बा त हम घर छोड़ के चल जाब, आप दूसर पतोह ले आईं लेकिन खुस रहीं बस।

सास एकटक देखत रहली, आंख झर झर झर झरे लगल। कहे लगली कि तुहरे में कमी न बा हम सुनलें रहीं कि तोहार बियाह टूटल बा एसे हमके बर्दास न होखे। बाकिर हम भुला गइनी कि लड़की भी संघर्ष करेले। हमरे वजह से तू नौकरी न करेके निरनय लेहलू हम जानिले लेकिन हम समझल ही न चाहत रहीं लेकिन अब सही समय बा फिर से शुरूआत के।

ए वरुण आज पतोह के घर में चौकठ छुआई होई। हमार पतोह अपने घर में अपने हिसाब से रही। तबले वरुण के पापा कहले ए वरुण के मम्मी हमरो बियाह टूटल रहे लेकिन अच्छा भइल नु!
न त तू हमके न मिलतू।

सब हंसे लगल। वरूण नारियर खरीदे बजार चल दीहने।

वरुण सोचत रहें स्त्री जीवन के अलगे कहानी बा। जवन कसूर ऊ न करे ओहू खातिर सजा भुगतेले। काठ के चौकठ से बड़ मन के चौकठ होला। वंदना के हिस्से ई दिन देर से आइल।

खैर नरियर लेके वरुण ठार रहने।

उनके मम्मी वंदना से कहें लगली... ए वंदना बबिया बोल तूहके का नेग चाहीं?

वंदना हंसे लगली। कहली मम्मी हमके बस मन के चौकठ पर हमेसा खातिर प्रवेश चाहीं। बेटी नीयन। हमार अच्छाई बुराई सब स्वीकार रहे।

वरूण के मम्मी वंदना के अंकवार धरिके रोवे लगली। चौकठ पर पीयर सेनूर से लिखल रहे वंदना के चौकठ, जेकर चमक में मन के सब झाल मोल घुलके पानी नीयर बहत रहे। ✱✱✱

महिला रचनाकार अंक -7 / कहानी-संग्रह
मंजरी मिश्रा

लेडी कंडक्टर

लाल एसी 522 नंबर के बस हरमेशा जइसन आजो खचाखच भरल रहे। कुल्ही सीट पर केहू ना केहू बइठल रहे आ 15-20 यात्री खड़ा रहले। जब हम बस में कदम रखनी, तऽ कुछ अलगे भइल। 'रउरा प्लीज खड़ा हो जाईं... ई मैडम इहवां बइठेम।' एगो विनम्र आवाज आइल। हम देखनी ऊ एगो महिला कंडक्टर रहली। उनका आँख में आत्मविश्वास आ आवाज में गरिमा रहे। ऊ अपना बगल वाला सीट पर बइठल अधेड़ उम्र के व्यक्ति से बड़ा अदब से आग्रह कइली। तनी अनमन मन से सही, बाकिर ऊ सज्जन उठ गइले। 'मैडम, आईं रउरा बइठ जाईं।'

उनका बात में अपनापन रहे। हम मास्क के पीछे से मुस्का के कहनी- 'थैंक यू, सिस्टर।' ऊ तनी देर शांत रहली, फेरू नया सवारी के टिकट देबे में व्यस्त हो गइली। बस रवाना भइल। एतने में ऊ कहली - 'मैडम, हम नया बानी .... सबका पर भरोसा नइखी कर सकत, एहिसे साथ के सीट पर सबका के ना बइठे देनी।' हम कवनो आउरी बात में उलझल खाली एतने कहनी - 'ई बहुते निमन बात बा।'

तनी देर में हम पूछनी- 'एकरा से पहिले कहवां काम करत रहलू।' ऊ कहली - 'मैडम सदर बाजार के एगो कॉस्मेटिक शॉप में, बाकिर इहवां बहुते अच्छा बा, उहां के तुलना में।' हम पूछनी काहे ? ...'उहां टारगेट बेस्ड रहे आ कोरोना में केहू मेकअप कहवां लगावेला।'

हम पूछनी- 'तू परमानेंट बाडू कि कॉन्ट्रेक्चूअल'? ऊ कहली- 'मैम अभी तऽ कॉन्ट्रेक्ट बेसिस ही बा, बाकिर ठीक बा जेतना दिन ड्यूटी ओतना दाम। कवनो टारगेट नइखे।' एतने में हमरा फोन के घंटी बाजल ..... हिटलर साहब के फोन रहे। फोन उठाके हम कहनी - 'सर, आई एम सीटिंग विद लेडी कंडक्टर, सी इज शेयरिंग हर एक्सपीरिएंस, आई विल कॉल यू लेटर।' सर के फोन आइल रहे, हमरा ऊहां से जरूरी कामो रहे, बाकिर ओ बेरा हमरा ऊ लेडी कंडक्टर के जानल ज्यादा जरूरी लागत रहे। हम फेरू उनका से बतियावल शुरू कइनी।

एतने में जे एल एन स्टेडियम पर बस रुक गइल। अब आधा रास्ता बाचल रहे। जेमें हम उनका के आउरी जानल चाहत रहनी। ऊ कहली - 'डेली के जोड़के मिलेला, बाकिर हम अबहीं एको छुट्टी ना लेबेनी, नया नौकरी बा एतना छुट्टी लिहल ठीक ना लागेला।' हम उनका से पूछनी - 'दोकान आ बस कहवां तहरा शांति लागेला।' ऊ कहली- 'मैडम बस में भीड़ बा बाकिर ई भीड़ दिमागी भीड़ के हिस्सा नइखे। हम बस में आराम से बइठल रहेनी बाकिर जवन पहिले के भीड़ रहे दोकान वाला, ऊ दिमागी भीड़ रहे जेमे रोजो ग्राहक आवत तऽ रहले बाकिर खरीदारी ना करे के चलते टारगेट बढ़ा के जात रहले।'

हम उनकर मुंह निहरनी। ऊ लेडी के बात में समझदारी साफ झलकत रहे। हम पूछनी- 'तू मैरिड बाडू' ऊ कहली - 'अरे मैडम हमार दूगो बच्चो बा।' हम मुस्कुरइनी आ कहनी- 'वाह तहरा के देखके तनको नइखे लागत कि तू दू बच्चा के माई बाडू।' ऊ मुस्कुरइली। उनकर मुस्कान एतना सहज रहे कि उनका माथा पर सजल सिंदूर आउरी चमक उठल। हम पहिलका बेरी उनका माथा पर बिंदी देखनी जवन उनकर सुंदरता के आउरी बढ़ावत रहे। हम फेरू पूछनी - 'सिस्टर सुबेरे कब से होला तहार शिफ्ट।' 'मैडम कबो सात, कबो साढ़े सात बजे फोन में मैसेज आ जाला। फेरू आधा घंटा में टिकट-ऊकट संभार के निकल जानी।'

हम फेरू पूछनी- 'आठ घंटा के ड्यूटी होत होई।' ऊ कहली- 'हां मैडम शिफ्ट चेंज होत रहेला बस के का बा कि अबहीं रोजो बदलता ड्यूटी बाकिर एक अप्रैल से तीन महीने खातिर फिक्स हो जाई।' हम कहनी - 'उहे ठीक रहीं।' ऊ कहली 'हां मैडम।' 'केतना तकले पढ़ले बाडू तू' हमरा पूछे पर ऊ कहली - 'मैडम बारहवीं तकले ही। 2012 में शादी हो गइल, फेरू दू बार कोशिश कइनी ग्रेजुएशन करे के बाकिर कबो एगो आ दूगो एग्जाम ही दे पइनी। हम विश्वविद्यालय के लगे रहेनी। बहुते मन करेला ऊ भीड़ के देखके, ओकर हिस्सा बने के बाकिर हालात ऊहां तकले जाए नइखे देत।' हम ई सुनके उनका से कहनी- 'तू इग्नू से काहे नइखू कर लेत, उहां रजिस्ट्रेशन तहार छह साल तकले वैलिड रही आउरी उहां हर साल हर छह महीना पर एग्जाम होला।'

'एकर तहरा ई फायदा होई कि तू दूगो पेपर ही अगर दे पइबू, तऽ ऊ बेकार ना जाई तहार नेक्स्ट एग्जाम में बाकी दूगो दे सकेलू आ तीन साल के बी. ए. साढ़े चार साल में भी पूरा कर पइबू, तबो कवनो दिक्कत ना रही।' हम सगरी बात एके सांस में कह देनी, ऊ हमरा के खाली सुनत गइली आ कहली - 'मैडम घर - बच्चा - नौकरी - पढ़ाई संभारल बहुते मुश्किल बा। बाकिर इग्नू के बारे में जानके हमरा एगो नया शक्ति मिलल बा। अब हमूं ग्रेजुएशन कऽ लेम मैडम। खाली छोटका बेटा तीन साल के बा, ओकरा के तनी टाइम दे दी फेर करेम।' हम कहनी- 'तू जॉइंट फैमिली में बाडू।' 'ना मैम जॉइंट होके भी नइखी, बच्चा के उनकर बाबूजी देखे ले। ऊ 10 बजे जाले फेरू लंच करे आवेले, एतने में हम पहुंच जानी।

नाम: मंजरी मिश्रा
जन्म तिथि: 19 मार्च 2000
स्थाई पता: 79, तीसरा तल, बाल मुकुंद खंड, गिरी नगर, कालका जी
प्रकाशित किताब: अनिताज हार्ट (भोजपुरी), परतें (हिंदी)
संप्रति: निदेशक (रेडियो) एवं मुख्य नोडल अधिकारी

हम कहनी 'बहुते मुश्किल होत होई?' 'हां मैम, बाकिर सब मैनेज करत बानी।' एतने में हमरा सामने खड़ा एगो लइका आके बोलऽलस - 'हमार पांच रुपिया।' ऊ अपना सूट के ऊपर बिखरल टिकट के बीच सिक्का खोजे लगली। सारा सिक्का 10-20 के रहे। ऊ कहली - 'नइखे।' ऊ लईका चल गइल, फेरू वोजे जहां खड़ा रहे। लेडी कंडक्टर पूछली - 'कहवां तकले जाएम रउरा' 'जनपद' लईका जवाब देहलस। डीटीसी के झोरा टटोर के ऊ हमरा ओरी देखके पूछली- 'रउरा लगे दूगो पांच के सिक्का बा? हम कहनी 'ना.... सिक्का तऽ नईखे' ऊ उनका के पांच रुपिया देबे चाहत रहली। एतने में नेशनल म्यूजियम आ गइल। ऊ लइका फेरु आइल टिकट लेके' रउरा एकरा पीछे लिख दी, कए बेरी सांझ के सेम बस मिल जाला।' ऊ लिखे लगली - 'पांच रुपिया बाकी।'

हम ऊ लइका के निहारते रह गइनी। 5 रुपए खातिर ओकर छटपटाहट आ वापसी में सेम बस मिले के आस ना जाने का-का बयां करत रहे। ऊ अभिलेखागार उतर गइल। हमरा लगे वक्त बहुते कम बाचल रहे। हम उनका से कहनी- 'सिस्टर केतना एज होई तहार' '30 के हो जाएम दू जून के' सुनके हम कहनी- 'सरकारी नौकरी खातिर अबहीं उम्र बा, तू कोशिश करऽ हो जाई, एलडीसी भी हो जाई तऽ 45 हजार से शुरूआत होई।' ' मैडम मुश्किल होत होई', हम कहनी - 'ना, खाली तनी मेहनत करऽ.. बस में बइठल-बइठल तू पढ़ सकत बाडू।' ऊ कहली- 'हम कोशिश करेम, मैम, रउरा पता बा 2012 में कोर्स करे के बाद अब जाके डीटीसी में लागल बानी, अब तऽ बस में सरकारी ना होखेम तबो हम इहां से हाफ डे के बाद मॉल में हाफ डे कर लेम तऽ निमन से जिंदगी चली। बच्चा के पढ़ावे के बा।' हमार स्टैंड वेस्टर्न कोर्ट आ गइल, हम जाए लगनी आगे गेट ओरी उतरे के बाद हमरा के ऊ 'बाय' कइली।

हम उतर गइनी हजार सवाल के साथे। ऊ औरत के सलाम करे के मन करत रहे। हमरा ना पता चलल ऊ नौकरी मजबूरी में करत बाड़ी कि बेहतर भविष्य खातिर। हम बस ई जान गइनी कि ऊ बहुते अलग, बोल्ड, ईमानदार, मेहनती आ बहुते निमन माई बाड़ी। ऊ दोसर महिला नियन शादी के करियर के पूर्ण विराम ना मानेली। ऊ मेहनत पर यकीन करेली। अपना साथे बइठल जेंट्स के उठावल जानेली, ऊ सबका पर भरोसा ना करेली। ऊ ओ लइका के पइसा लौटावे चाहेली। ऊ डबल ड्यूटी करे चाहेली ताकि उनकर बच्चा निमन स्कूल में पढ़े। ऊ बहुते निमन माई बाड़ी खाली अपने आ अपना पढ़ाई के बारे में ना सोचेली। ड्यूटी से घरे जाके ऊ सारा वक्त अपना बच्चा के देबे चाहेली।

एगो बात तऽ साफ रहे– ऊ खाली एगो महिला कंडक्टर ना रहली। ऊ महिला कार्मिक रहली, एगो पत्नी रहली, माई रहली, संतुलित रहली। ऊ महिला खास रहली, उनकर जज्बा उनकरा के आउरी खास बनावत रहे। अब जब हम लिखते बानी तऽ एके अफसोस बा,

काश...
काश हम उनकर नाम जनती।
काश...! ✷✷✷

महिला रचनाकार अंक -7 / कहानी-संग्रह
भारती सिंह/घाना

साग

माघ के धूप आँगन के नवकी बहुरिया लेखा लजात सकुचात आइल रहल। अम्मा खटिया प भर खटिया साग के ढेरी लेके बइठल रहली। बगल में बेटा के दिहल रेड़ियो जइसन कुछो रहल,ओह पर 'सैंया ले गयी जिया तेरी पहली नजर' सुनत रहली। साथे उहो कबहूँ सुर मिला देत रहली। धूप तनी तेज लागे लागल त अम्मा साल उतार एक ओरी रख दिहली आ साग बीने में मगन हो गइली। एक-एक खर पतवार चुन बिछ के अम्मा अपने दुनिया मे भुलाइल रहली। अम्मा के याद आवे लागल आपन बचपन। बचपन वाली जानकी के एक-एक गो बात।

जानकी हाथ मे बांस के डलिया लेले गेंदा फूल चुन चुन के राखऽतारी। काकी पूछली 'बबुनी साग तुड़े ना गइलू ह बहुत दिन से।' जानकी बूझ गइली काकी के साग खाए के मन भइल बा। बगल के आँगन से सखी के आवाज लगावे लगली। - 'सखी हो! चल तनी गांव जवार घूम आईं।'

सखी के नाम ह मीना।

दुनो में सखी लागल बा त एक-दूसरा के नाम ना लेला लोग। सखी कहके बुलावेला। दुनों लोग में एतना अंतरंगता बा कि मन के सब बात आपस में साझा करेला लोग। सखी के आंगन में दुनो चाची के लड़ाई चल रहल बा। दुनो एक दूसरे के मायके के गुण के बखान करऽतारी। सखी तुरंते साल लपेट के बहरी आ गइली। 'चल हो, गेहूं खेत ओरी, बथुआ के साग भरल होई।'

एक ओरी चना में छीमी लग गइल बा। अब चना के साग ना बन सकल ह। खेसारी के नीला नीला फूल अन्तरदेसी जइसन दिखता, जे में सखी के गवना के दिन धराइल बा। अब सखियो चल जइहें। - जानकी मने मन सोचत रहली। दुनो साग चुनते चुनत कच्चे खेसारी साग खाए लगली। जानकी घर से तनी हरियर मिरचाई आ नून लेके आइल रहली। खेसारी के खट्टा पत्ता नून मिरचाई संग,आ हा हा! बथुआ भी ढेर तुड़ा गइल। थोड़ा चोरी से आजी के भी दे दिहल जाई। बेचारी बिना बेटा पतोह वाली बाड़ी। उनका ले साग के तुड़ दी? - जानकी कहली आ फेर सोच में डूब गइली।

सखी थोड़े दिन में ससुराल चल जइहें। हमार त अबले कुंडलिये नइखे मिलल। हम मांगलिक बानी। मांगलिक लईकी खातिर मांगलिक लड़िका चाही। हमरा उम्र के सब लईकी के बियाह हो गइल। सब बाल बच्चा वाला हो गइली सन। सखी ससुराल के केतना बात बतियावेली आ हम ? जानकी के मन थोर हो गइल। सखी त गजबे बाड़ी। सास के ताना, ननद-देवर के ठिठोली अउरी लजात-लजात फौजी मरद के सब बात बता देवेली। जानकी खातिर त ई सब एगो अनबूझ दुनिया बा, तिलस्मी।

सखी राज के सब बात बता देवेली। इहाँ तक कि फौजी पति के चिठ्ठी भी पढ़वा देली आ दुनो जानी मिलके चिठ्ठी के जबाब लिखेली। अचानक जानकी के तन्द्रा भंग भइल आ ऊ मुस्कुरा देली।

लेकिन बचपन के याद पीछा छोड़ते ना रहे। जानकी के मन परल कि सखी आपन मरद के कहले रहली गौना के दिन नियरे धरे के आ गवना खातिर छुट्टी में परदेसी बाबू अइलें त सखी केतना बेकल रहली मिले खातिर। जानकी के ई बात के दुख भी रहल कि बचपन के सखी उनका के छोड़ के उ मोछियल सङ्ग जाए खातिर एतना उतावला बाड़ी।

दुनो सखी मिल के घर के लोग के नजर से छुपा के चादर में फूल काढत रहली। तकिया पे स्वागत लिखत रहली आ चादर पे पिया मिलन भी। उहे चादर लेके सखी ससुरा गइली। जानकी आ सखी एक दिन भोरे निकल गइली साग खोंटे। थोड़े देर बाद जानकी कहली- 'ढेर साग हो गइल हो सखी! अब चल तनी नदी नहा लिहल जाए। फेर कब गंगा जी के दर्शन होखी।'

दुनो चल दिहली ओढ़नी में साग बांधके। घाट के किनारे साग रखके दुनो घाट पर से छपाक से कूद गइली। एतना भोरे ई ओरी केहू ना आवे। नदी के गर्म पानी मे जाड़ भी नइखे लागत। - जानकी कहली। दुनो पानी के मछली लेखा पानी मे डोले लगली। 'हम ना जइबो गवनवा हो, गुनगुनात, नहा धोके बाल सुखावत दुनो कभी ठठा के हँस देली, कबहूँ गले मिलके रोवे लगली। पिछले फागुन जानकी के बियाह लगभग तय रहे,सब सट्टा बयान तय रहे, कुंडली भी मिलान हो गइल। कौनो जलनखोर जा के लड़के वाला के कह आइल लड़की के चाल चलन ठीक नइखे। जरूर बनेसर वाली भउजी के काम होई। उनके भाई जब तब आके जानकी के इहां ताक झांक करेलन।

सखी के ससुराल में एक ही दिक्कत बा, जब फौजी बाबू घर आवेले, घर के लोग उनका के कवनो काम से कही ना कहीं भेजत रहेले। काहे की घर भर में सबसे होशियार इहे बाड़न। माँ बहिन से छुपा के खूब चीज लाके मेहरारू के दिहन, फेर खूब आगे पीछे लट्टू बनल रहलें। ... सखी के नौ साल के बेटा आ दु गो बेटी भी हो गइल। अब कहाँ भेंट नसीब बा।

आँगन के तेज धूप से जानकी के ध्यान फेर टूटल आ ऊ लौट अइली अपना दुनिया में। कुंडली मिलान के चक्कर में केतना देर से भइल उनकर शादी। जानकी तसला में साग चढ़ा के तुलसी जी के एक लोटा जल चढ़ावे गइली, तले बेटा के फोन आइल - 'माई रामलाल के हाथे साग भेज दिहे। इहाँ बंगलोर में साग ना मिलेला।'✷✷✷

नाम: भारती सिंह
जन्म तिथि: 16 जनवरी 1978
वर्तमान पता: आक्रा, घाना, पच्छिम अफ्रीका

सरनामी कहानी

बारह सिंग वाला हरिन आ घमंड के सीख

एक बहुत बड़का आ हरियर-भहराइल जंगल में एगो हरिन रहत रहल। उ जंगल बहुत सुंदर रहल-ऊँच-ऊँच पेड़, हरियर घास, ठंडा पानी के नदिया आ तरह-तरह के जानवरन से भरल। ओह जंगल में हरिन, खरहा, बंदर, हाथी, लोमड़ी आ बहुत अउर जीव-जन्तु आपस में मिल-जुल के रहत रहलन। सब आपन-आपन काम करत, खात-पियत आ चैन से जिनगी बितावत रहलन।

बाकी ओही जंगल में एगो खास हरिन रहल। ओकर बारह गो सिंग रहल। उ हरिन देखे में बहुत सुंदर आ बलवान रहल, बाकिर ओकरा में एगो खराब आदत रहल बहुत घमंड। उ अपना सिंग के देख-देख के गर्व से भर जाला। हर रोज पानी में आपन परछाईं देख के कहे लागे 'हमार जइसन केहू ना बा। हम त इ जंगल के राजा बानी। बाकी सब जानवर हमसे छोट बा।'

एह घमंड के कारण उ धीरे-धीरे सब से दूर हो गइल। उ ना त दोसरा हरिनन से दोस्ती रखत, ना कवनो अउर जानवर से बात करत। जब बाकी जानवर ओकरा के देखत, त उ लोग डर के मारे दूर हट जात। कुछ जानवर त आपस में कहत 'घमंडी से दूरी ही ठीक बा, काहे कि घमंड इंसान आ जानवर दुनो के बिगाड़ देला।'

हरिन के कवनो फर्क ना पड़त रहे। उ अकेले जंगल में घूमत, खात-पियत आ आपन राज समझ के जीयत रहल। ओकरा लागे कि उ सबसे ताकतवर आ सबसे बुद्धिमान बा।

एक दिन सांझ के समय, जब सूरज ढल रहल रहे आ जंगल में हल्की अन्हरिया छा रहल रहे, हरिन आराम से नदी किनारे पानी पी रहल रहे। ओही समय ओकर कान में कुछ अजीब आवाज पड़ल, आदमी लोग के बोल-चाल, हँसी-मजाक आ बच्चन के खेल के आवाज।

हरिन पहिले त सोचल 'ई कवन आवाज बा?'
बाकिर उ जादा ध्यान ना दिहलस।

थोड़ी देर बाद अचानक 'धाय!' बन्दूक के जोरदार आवाज गूंजल।
एह आवाज सुनते हरिन के देह काँप उठल। ओकर दिल तेजी से धड़के लागल। अब ओकर सारा घमंड गायब हो गइल, आ दिमाग में बस एके बात रहे

'जान बचा के भागे के बा!'
उ बिना देर कइले तेज दौड़े लागल। जंगल के झाड़ी, पेड़, पत्थर सब पार करत उ भागत रहल। पीछे से फेर आवाज आइल, शिकारी लोग अब ओकर पीछा करत रहल।

हरिन दौड़त-दौड़त थक गइल, बाकिर डर के मारे रुक ना पावत रहल। उ सोचत रहल

'अगर रुक गइनी त जान चली जाई!'

भागत-भागत अचानक ओकर बारह गो सिंग घना झाड़ी में फँस गइल।
अब हालत बहुत खराब हो गइल। उ छूटे के बहुत कोशिश कइलस, बाकिर सिंग उलझ गइल रहल।

ओह समय हरिन के आँख में डर साफ दिखत रहल। ओकर साँस तेज हो गइल, आ उ सोचल

'हे भगवान! जवन सिंग पर हम घमंड करत रहीं, आज उहे हमार जान के दुश्मन बन गइल। हम त हमेशा अपना सिंग के सुंदरता देख के खुश होत रहीं, बाकिर आज समझ में आ रहल बा कि असली ताकत त हमार पैर रहल जे हमके बचावत रहल।'

बहुत कोशिश आ जोर लगावे के बाद आखिरकार उ सिंग झाड़ी से छूट गइल। हरिन तुरन्त फुर्ती से भाग के दूर निकल गइल आ आपन जान बचा लिहलस।

ओ दिन के बाद हरिन के सोच बदल गइल। अब उ ना घमंड करत रहे, ना अकेले रहत रहे। उ धीरे-धीरे दोसरा जानवरन से मिलल, दोस्ती कइल आ सबके इज्जत करे लागल।

अब उ समझ गइल रहे ''जिनगी में घमंड कबहूँ ना करे के चाहीं, काहे कि जवन चीज आज गर्व के कारण बनत बा, उहे काल मुसीबत भी बन सकेला।''***

(ई लोककथा ह। हम बचपन में सुनले बानी। सूरीनाम से जब ई कहानी आइल त हम लेखिका से कहबो कइनी कि ई कथा हम बचपन में पढ़ले-सुनले बानी। खैर, एह कहानी के शामिल करे के पीछे मनसा बा कि रउरा जानी कि उहाँ भोजपुरी कवना रूप में बा। दोसर ई कि सूरीनाम में भी प्रोत्साहित होके लोग भोजपुरी लिखल शुरू करे।- संपादक)

नामः सान्द्र लुटावन शादी गनेश (Sandra Loetawan married Ganesh)
जन्म तिथिः 19 फरवरी 1971
स्थाई पताः Lizelan # 12 (Suriname)

BHOJPURI JUNCTION-DELBHO/2021/81811

Title Code - DELBHO00011

http://humbhojpuria.com/ https://twitter.com/bhojpurijuncti2/ https://www.facebook/com/bhojpurijunct2

पाक्षिक पत्रिका | 1 मई - 30 जून, 2024 | मूल्य - ₹ 20

भोजपुरी जंक्शन

महिला रचनाकार अंक

कहानी-संग्रह (भाग-1)

नारी-चेतना के प्रणाम !

www.bhojpurisahityangan.com

वर्ष :4, अंक : 17-20| 1 मई - 30 जून, 2024

भोजपुरी जंक्शन

पाक्षिक पत्रिका

अध्यक्ष आ प्रधान संपादक
रवीन्द्र किशोर सिन्हा

संपादक
मनोज भावुक

उप संपादक
अखिलेश्वर मिश्र, अनिल कुमार दुबे 'अंशु'
मनीषा श्रीवास्तव, परिधि जैन

कला अउर सज्जा
ज्योति सिन्हा

सोशल मीडिया
सुमित रावत

विपणन विभाग

सहायक उपाध्यक्ष
विशाल सिन्हा (मो.- 8853531208)
जनसंपर्क अधिकारी: संदीप द्विवेदी (मो. 9868317507)
क्षेत्रीय प्रबंधक : बिहार-झारखंड
मनीष किशोर (मो.-9334919888)

संपादकीय कार्यालय
ई-1, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली- 110065
editor.humbhojpuria@gmail.com

पंजीकृत कार्यालय
ई-1, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली- 110065
http://humbhojpuria.com/
https://twitter.com/bhojpurijuncti2
https://www.facebook.com/bhojpurijunct2/

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक रवीन्द्र किशोर सिन्हा द्वारा ई - 1, ईस्ट ऑफ़ कैलाश, नई दिल्ली - 110065 से प्रकाशित अमर उजाला लिमिटेड, सी - 21/22, सेक्टर - 51, नॉएडा 201301, गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित । संपादक - रवीन्द्र किशोर सिन्हा ।

लघुकथा

सुस्मिता मिश्रा / माया.....19
डॉ० पूनम सिन्हा श्रेयसी / सियासी आग.....39
रजनी श्रीवास्तव 'अनंता' / खल्ली.....43
सविता गुप्ता / बेना.....76

कंटेंट डिस्क्लेमर: पत्रिका मे सकलित सभ रचना मे व्यक्त विचार रचनाकार के आपन विचार ह। ओहसे भोजपुरी जक्शन परिवार के सहमत भइल आवश्यक नइखे।

एह अंक में

सुनीं सभे

भाजपा के पता बा गठबंधन सरकार के धर्म.....8

भारत

राधिका देवी श्रीवास्तव (दिवंगत)/ धरती के फूल.....10
स्नेहप्रभा श्रीवास्तव (दिवंगत)/ बतिया ना बिसरे.....12
सुधा वर्मा (दिवंगत) / देहदान.....17
डॉ. आशारानी लाल / करिया कोट.....20
डॉ० उषा वर्मा / राधा.....22
डॉ. शारदा पाण्डेय / ओह दिन.....25
डॉ. प्रेमशीला शुक्ल / गांवे जाए के बा.....28
मंजूश्री / पटरानी.....31
श्यामा सिंह / ठकुराइन मइया.....35
प्रज्ञा पांडेय / लजाधुर.....37
डॉ. सीमा स्वधा / रानी दिदिया.....40
बिम्मी कुँवर सिंह / पचरूखिया वाली.....44
माया शर्मा / काकी के दरद.....46
डॉ. दिवा / निसानी.....48
नीतू सुदीप्ति 'नित्या' / छहिरा.....51
डॉ. रेनू यादव / पइया.....54
डॉ. रंजीता तिवारी / सी गोबिन.....61

मॉरीशस

लक्ष्मी जयपोल / कीर्ति औरू करण.....63

सूरीनाम

कारमेन सुयश्वीदेबी जानकी / रामू और सरदार.....65
लैलावाती लालाराम हरद्वारसिंह / जसवंत छात्र.....67

फिजी

डॉ. सुभाषिनी लता कुमार / बदलाव.....69

नेपाल

वीणा सिन्हा / आधुनिक द्रौपदी.....71
डॉ.श्वेता दीप्ति / कशमकश.....75

एम्स्टर्डम, नीदरलैंड

पुष्पा पाण्डेय (मूल रूप से रांची से) / आपन करनी.....77

वर्जीनिया, अमेरिका

चंद्रकला त्रिपाठी (मूल रूप से बनारस से) / माई जब गइलीं बिदेस.....78

हलचल

गिरमिटिया कार्यक्रम, पटना.....82
मॉरिशस सरकार द्वारा आयोजित अंतरराष्ट्रीय भोजपुरी महोत्सव.....84

श्रद्धांजलि

स्मृतिशेष प्रोफेसर हरिकिशोर पांडेय.....90

प्रकाशित किताब

दिवंगत डॉ. राजेश्वरी शाण्डिल्य के 15 गो भोजपुरी किताब..... 2
कुछ दिवंगत महिला साहित्यकारन के भोजपुरी किताब.....4
डॉ. आशारानी लाल के 12 गो भोजपुरी किताब..... 99

संपादकीय

नारी-चेतना के प्रणाम !

भोजपुरी भाषी महिला के हाथ में खाली छोलनी आ छनौटे नइखे, कलमो बा। ... आ कलम बा त अपना बात के कहे के सहूरो बा, साहसो बा।

हम खाली अतने निहोरा कइले बानीं, आ इहाँ लोग हमार बतिया मनलहूँ बानी कि कबो-कबो, कहीं-कहीं अपनो बोली बोलीं लोग। बोलीं लोग ऊ भाषा जवन करेजा के छुएला। जवन कान में पड़ते अपना केहू के ई एहसास दियावेला कि अरे, ई त आपने केहू ह। केतना चीज ओढ़ब जा नोकरी-चाकरी, रोजी-रोजगार, मजबूरी-लाचारी भा हवा-देखावा में। आपन सब त मेटवले जात बानीं जा। पैतृक घर छोड़ के जे जहाँ कमाता, ओहिजे बसे लागत बा आ धीरे-धीरे गाँव से कटे लागत बा। गाँव से कटल माने जड़ से कटल। ऊ बूझत बा जे हम शहर में बसत बानी बाकिर साँच त ई बा कि ऊ भीतर से उजड़त बा। खोंखड़ होत बा। कंगाल होत बा। गाँव से कटते देशी मुर्गी बिलायती बोल हो जात बा। शादियो-बिआह शहरे में होखे लागत बा त अपना संस्कृति-परंपरा से, रीति-रिवाज से कटे लागत बा। फेर उनका बबुआ-बबुनी लोग के बुझाते नइखे कि अलुआ जमीन में होला कि छान्ही प। धीरे-धीरे हमनी के आर्टिफिशियल होत जात बानीं जा-जड़विहीन। पहचानविहीन। ई ठीक नइखे।

पूरा दुनिया में कादो हमनी के तीस करोड़ बानी जा त का ई तीस करोड़ खाली मरदे लोग बा कि मेहरारुओ लोग बा! अरे, मोटा-मोटी आधा पॉपुलेशन महिलो लोग के होई नू ? ... आ ऊ लोग खाली फ्रेंच, क्रियोल भा हिंदी-अंग्रेजी त बोलत ना होई। पन्द्रह करोड़ महिला लोग में पाँच करोड़ लोग देश-विदेश जाके भुलाइयो गइल होई तबो दस करोड़ लोग बोलत होई नू? दस करोड़ में से कुछ लोग पढ़लो-लिखल होई। लिखतो-पढ़त होई। तबो, पूरा दुनिया से सइ गो भोजपुरी लेखिका खोजे में हमरा नानी इयाद आ गइली ह।

अब सवाल ई बा कि केहू भोजपुरी काहे लिखी? का मिली? अंग्रेजी स्टेटस सिम्बल बा। रोजी-रोजगार खातिर जरूरियो बा। हिन्दियो से काम चल जाता बाकिर भोजपुरी?

त भोजपुरी में पागले आ सनकी लोग नू लिखी। एम्मे त खाली देवे के बा। मिले के कुछ नइखे। तबे नू हमार बाबूजी गरमाइल रहलें कि रे भीख माँगे के पड़ी। तब कॉलेजे के टाइम भोजपुरी में लिखे के कीड़ा ध लेले रहे हमरा। बाद में जब लंदन छोड़ के अइनी भोजपुरी-भोजपुरी करे तब त साल भर बोलबे ना कइलें बाबूजी। कहलें, जवना बात के डर रहल ऊ होइए गइल। ससुर पगला गइल बाड़न। त हमार ससुरो जी मने मन कहलन, बेटी के बिआह त इंजीनियर से कइले रहीं आ ई ...

अब बताईं, कवन लइकी भा मेहरारू भोजपुरी लिखी जी! ... ना ससुरे में नाम होई, ना नइहरे में। दाम के बात त छोड़िए दीं। अंग्रेजी लिखी-बोली त दुलहो बढ़िया मिली। भोजपुरी से ?

शहर में बाड़ी त सभा-सोसाइटी भा पार्टियो-सार्टी में हिन्दिए-अंगरेजी में कुछ सुनावे के बा। भोजपुरी में कुछ कढ़वली त भोजपुरी के नेशनल एंथम 'लॉलीपॉप लागेलू' आ भोजपुरी के तथाकथित सुपरस्टार लो के याद ताजा हो जाई काहे कि आम आदमी के ध्यान में, कान में, जेहन में आ जुबान पर त उहे सब बा।

अब बेचारी करस त का करस? कहेली कि मैं तो इतने साल से दिल्ली में, बम्बे में, गोहाटी-गुजरात में भा अमेरिका-यूरोप में आ गई हूँ तो भोजपुरिए भुला गया है।

अब एकरा के चोन्हा कहीं, लाचारी कहीं भा हीन भावना बाकिर ई एगो कड़वा सच्चाई बा। सच्चाई बा कि लोग अपना माइयो के माई नइखे कह पावत भा कहे में लजाता। साँचहूँ, बहुत मुश्किल बा भोजपुरी लिखल!

बाकिर, एह मुश्किल काम के जे अंजाम देले बा, ओह सब लेखिका लोग के हम सैल्यूट करत बानी। देश आजाद भइल त जे-जे शहीद भइल, देश ओकरे ना रहे। देश सभकर रहे बाकिर क्रांति सबका बूता के बात ना होला। कुछ लोग के सनकी आ पागल बनहीं के पड़ेला। जीवन के अंतिम समय में हमार बाबूजी हमरा से खुश रहलें। कहलें, तू ठीक रस्ता प बाड़S।

भोजपुरी हमनी के मातृभाषा ह। हमनी के ना लिखब जा त के लिखी? लिखे खातिर कवि-साहित्यकार भइल जरूरी नइखे। कविते-कहानी लिखल,

लिखल ना ह। ज्ञान, विज्ञान, तकनीकी–राजनीति, अनुभव, टीस–खीस, फीस–हिरीस, फिलिम–सिलिम, पढ़ाई–लिखाई, समस्या–समाधान, गेहूँ–धान ....जवन धराव, धरीं आ जइसे बोले–बतियावेनीं ओइसहीं उतार दीं कागज पर भा मोबाइल के नोट पैड में। हो जाई लेखन।

लिखीं, रउरा लिखला से भोजपुरी समृद्ध होई। हम जानत बानी कि जेतना महिला लोग ''महिला रचनाकार अंक'' में शामिल भइल बा, बस उहे लोग लिखनिहार नइखे। बहुत नाम छूटल बा। एह में त बस उहे लोग शामिल बा, जेकर रचना हमरा पास आइल बा। कई गो बड़का भा स्थापित भा नवोदितो नाम छूटल बा काहे कि ओह लोग के रचना ना मिलल। संभव बा कि अइसन तमाम भोजपुरी लेखिका लोग छूटल होई जेकरा के हम नइखीं जानत भा ओकरा तक सूचना ना पहुँचल। ...त कवनो बात नइखे, सिलसिला अबहीं जारी बा। अभी त ''महिला रचनाकार अंक'' के कहानी–संग्रह (भाग–1) रउरा हाथ में बा। कहानी–संग्रह (भाग–2, 3...) पर भी काम शुरू बा। एकरा बाद ''महिला रचनाकार अंक/ कविता–संग्रह'' आ ''महिला रचनाकार अंक/ लेख–संग्रह'' के योजना बा। त रउरा सभे आपन रचना भेजीं, अगर अब तक नइखीं भेजले त। दुनिया के सब भोजपुरी लेखिका लोग के एक मंच प ले आवे खातिर ई कमवे होता।

हमरा खुशी बा कि बहुत लोग हमरा आग्रह प पहिला बार भोजपुरी में लिखले बा। ओह सब लोग के प्रति आत्मिक आभार व्यक्त करत विनती बा कि खाली सिलापट्ट पर नाम लिखा के अलोत मत हो जाइब। नाखून कटा के शहीद नइखे बने के। लिखीं, रेगुलर लिखीं। के जानत बा रउरा कलम से का निकले? आ खाली लिखबे मत करीं, पढ़ीं ताकि पता चले कि का लिखे के बा आ का नइखे लिखे के, ताकि पता चले कि अभी कहाँ बानी जा हमनी के।

लिखीं, मातृभाषा के कर्ज उतारे खातिर लिखीं। लिखीं, अपना भाषा में आपन बात कहे खातिर लिखीं। लिखीं कि राउर देखा–देखी अगिलो पीढ़ी लिखो। लिखीं कि पढ़े खातिर भोजपुरियो में हर क्षेत्र के चीज आ जाव। लिखीं, आ अइसन लिखीं कि नयका पीढ़ी के एने रुझान बढ़ो। लिखीं, कि जवन आज ले लिखाइल बा, ऊ हेनबेना मत होखे। ओकरा के पढ़े वाला, सहेजे वाला आ आगे बढ़ावे वाला पीढ़ी होखे। ना त एतना समृद्ध भाषा के समृद्ध भंडार अनादर आ उपेक्षा में घुट–घुट के स्वाहा हो जाई।

ई भोजपुरी के दिवंगत साहित्य–सेवी के जिनिगियो के सवाल बा आ ओकर जबाबदेही महिलो लोग पर बा। एह से हे देवी, रउरो लोग लिखीं। रउरा लोग त साक्षात सरस्वती हईं। पुरुष पर त सरस्वती के कृपा के जरूरत बा। उठाईं कलम। स्वागत बा।

महिला रचनाकार अंक (कहानी-संग्रह/ कविता-संग्रह/ लेख-संग्रह)

लगभग साल भर से अभियान जारी बा अउर अब तक भोजपुरी के डेढ़ सौ से ऊपर लेखिका लोग के सूची बन गइल बा।

ई भोजपुरी लेखिका लोग के समस्त सूची ना ह। ई त खाली ओह लेखिका लोग के सूची ह जेकर भोजपुरी रचना भोजपुरी जंक्शन के 'महिला रचनाकार अंक' में प्रकाशनार्थ मेल आदि माध्यम से हमनी तक पहुँचल बा।

भोजपुरी लेखिका से हमार मतलब खाली कथा, कहानी, कविता आदि विभिन्न साहित्यिक विधन के महिला रचनाकार से नइखे। हमार आशय विश्व के ओह सब महिला लोग से बा जे भोजपुरी भाषा में लिखे में समर्थ बा आ लिखे के चाहत बा, भलही ऊ हिंदी, अंग्रेजी, फ्रेंच, क्रियोल, ...कवनों भी भाषा में काहे ना लिखत होखे।

हमरा ओह सब लेखिका लोग के तलाश बा जेकरा अंदर छटपटाहट बा अपना मातृभाषा भोजपुरी में लिखे–पढ़े खातिर। लिखले से लिखाई, चाँद पर से केहू ना आई।

भोजपुरी एह देश के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, लोक सभा स्पीकर आ तमाम सांसद यानी कि देश के अगुआ लोग के भाषा रहल बा आ बा। भोजपुरी क्षेत्र आईएएस–पीसीएस देवे में भी अग्रणी बा। देश के बाहर भी झंडा गड़लही बा। तबो पता ना काहे एह भाषा के लेके कुछ लोग में हीन भावना बा। सिनेमा वाला त भोजपुरी के नोकर–चाकर आ दूध वाला, सब्जी वाला के भाषा बनाइए देले बा लोग।

अइसन समय में हमनी के जागल–चेतल जरूरी बा। भोजपुरी में बोलला–बतियवला के साथे लिखलो–पढ़ल जरूरी बा। लिखलके रही। महिला लोग के आगे आइल अउर जरूरी बा। देश के भविष्य ओही लोग के गोदी में पलेला। मातृभाषा के महत्व त अब सरकार भी समझत बिया। हमनी के कब समझब जा!

हम फेर कहत बानी। लिखे खातिर कवि–कथाकार भा साहित्यकार भइल जरूरी नइखे। रउरा ज्ञान–विज्ञान, खेल–कूद, राजनीति, सिनेमा, टेक्नोलॉजी, व्यापार, कानून भा चिकित्सा कवनों विषय पर लिख सकेनी।

एही से महिला रचनाकार अंक के तीन श्रेणी में बाँटल गइल बा– **कहानी-संग्रह, कविता-संग्रह आ लेख-संग्रह**। लेख-संग्रह में हर ढंग के लेख के स्वागत बा।

साँच कहीं त भोजपुरी भाषा खातिर लेखिका लोग के तलाश बा आ ''महिला रचनाकार अंक'' एह भाषा में लेखिका लोग के एगो सशक्त टीम बनावे के मुहिम बा। इहाँ ओह

संपादकीय

लेखिका लोग खातिर एगो प्लेटफार्म तइयार करे के उद्देश्य भी शामिल बा जे हिंदी-अंग्रेजी के साथ-साथ अपनो मातृभाषा भोजपुरी में कुछ लिखे के चाहत बाड़ी।

हमार अनुभव बा कि भोजपुरी भाषा के विकास में महिला रचनाकार लोग भी सिद्दत से सक्रिय बा, एह से इहाँ एक प्लेटफॉर्म पर ले आवे के कोशिश प्रमुख बा।

हम त मॉरीशस, फिजी, गुयाना, सूरीनाम, त्रिनिदाद जइसन गिरमिटिया देश, नेपाल आ अन्य देशन के एनआरआई भोजपुरी भाषी तक भी पहुँचे के अनवरत कोशिश करत बानी आ एह में कुछ हद तक हमनी के सफलतो मिलल बा बाकिर अभी त ई अँगड़ाई बा, आगे बहुत लड़ाई बा।

हमनी के पॉपकॉर्न का फेरा में मकई के लावा भुला गइल बानी जा। सूप राइस का आगे माड़-भात उपेक्षित बा। उपेक्षित भाषा के आदमियो उपेक्षिते रहेला। भाषा खाली बोलल-बतियावल ना ह ए भाई। भाषा, संस्कृति ह, संस्कार ह, जीवन शैली ह, पहचान ह। ना सचेत भइला पर लोग हमनिए के चिजवा कोदो के भावे लेके हमनिए के सोना के भावे बेंच दी। ..आ चिजवा माने खाली सामान ना, कथा-कहानी, साहित्य, जानकारी सब। बात बूझे के होई ना त "ट्विंकल ट्विंकल लिटिल स्टार" में लुटात रहब जा।

महिला रचनाकार अंक / कहानी-संग्रह (भाग-1)

महिला रचनाकार अंक के श्रीगणेश महिला रचनाकार लोग के 'कहानी-संग्रह' से करत बानी। अभी तक लगभग पचहत्तर गो महिला कथाकार के कहानी के चयन भइल बा। दस-पनरह गो कहानी छँटलहूँ बानी। पचहत्तर गो कहानी के एक अंक में अँटावल संभव नइखे। एह से 'कहानी-संग्रह' तीन भाग में ले आवल जाता। एह तीनों भाग में भारत, नेपाल, फिजी, मॉरीशस आ सूरीनाम आदि देशन के दिवंगत, वरिष्ठ, कनिष्ठ आ नवोदित भोजपुरी लेखिका शामिल बाड़ी।

'कहानी-संग्रह' (भाग-1) में पचीस गो महिला कथाकार के प्रतिनिधि कहानी शामिल बा। शेष कहानी अगिला अंक महिला रचनाकार अंक / **'कहानी-संग्रह' (भाग-2, 3)** में।

आगे के अंकन में दिवंगत महिला साहित्य सेवी, वर्तमान में सक्रिय महिला रचनाकार, नेपाल आ मॉरीशस के महिला रचनाकार आदि पर केंद्रित लेख भी शामिल करे के प्रयास होता।

धरोहर के रूप में दिवंगतो महिला कथाकार के कहानी शामिल कइल गइल बा। खोज-खोज के भूलल-बिसरल लेखिका लोग के फोटो आ परिचय, रचना मिल गइल त रचनो छापे के कोशिश बा। कोशिश बा कि जे शुरूआत कइल, जे बिरवा रोपल, जे भोजपुरी साहित्य के समृद्ध करत रहल ओकर चर्चा होखे। ई सिलसिला आगे कइएक अंक ले चली। ई बहुत दुखद बा कि ओह महिला कथाकार के बारे में भी साहित्यकार लोग नइखे जानत जेकर कहानी के किताब छप चुकल बा भा जेकर कहानी अपना समय में लोकप्रिय भइल बा।

राधिका देवी श्रीवास्तव, सुधा वर्मा, मधु वर्मा, बिन्दु सिन्हा, स्नेहप्रभा श्रीवास्तव, बच्ची देवी, विभा सिन्हा, चन्द्रमुखी वर्मा, शांति देवी, इलारानी गुप्ता, रूपश्री आ आशा श्रीवास्तव जइसन स्थापित साहित्यकार के खोजे में हमरा 20-20 लोग के फोन, मैसेज आ कई गो फेसबुक पोस्ट करे के पड़ल तबो सब लोग के पता-ठेकान अभी मिलल नइखे। फोटो आ परिचय के साथ ओह लोग के कहानी छापे के पीछे मनसा इहे बा कि भविष्य में भोजपुरी कथा-कहानी पर शोध करे वाला के हमरा लेखा छिछियाये के ना पड़े। जब साहित्यकारे लोग साहित्यकार के नइखे जानत त आम आदमी का जानीं !

फिलहाल, महिला रचनाकार अंक / 'कहानी-संग्रह' (भाग-1) रउरा सभे के हाथ में बा। एह में 25 गो कहानी के अलावा कुछ लघुकथा भी शामिल बाड़ी स। एह सब पर रउरा सभ के सुझाव आ बेबाक प्रतिक्रिया के इंतजार बा। एह से हमनी के मार्ग प्रशस्त होई आ हौसला मिली। रचनात्मक सहयोग से भोजपुरी गम-गम गमकी। 'कहानी-संग्रह' (भाग-2,3...) खातिर उम्दा कहानी के अभियो स्वागत बा, भेजीं। कविता आ लेख (शोध, आलोचना, समीक्षा, संस्मरण, इतिहास, फीचर आदि) के भी स्वागत बा काहे कि कहानी अंक के बाद ओकरे नंबर बा।

एह अंक में डॉ. रंजन विकास जी के सौजन्य से मिलल दिवंगत डॉ. राजेश्वरी शाण्डिल्य के 15 गो भोजपुरी किताब, कुछ अन्य दिवंगत महिला साहित्यकारन के 12 गो भोजपुरी किताब आ वरिष्ठ महिला साहित्यकार डॉ. आशारानी लाल के 12 गो भोजपुरी किताब के कवर पृष्ठ भी सूचनार्थ प्रकाशित कइल गइल बा। महिला साहित्यकारन के भोजपुरी किताब के कवर पृष्ठ छापे के सिलसिला आगहूँ जारी रही। आग्रह बा कि किताब के कवर पृष्ठ भेजल जाय।

हमनी के इच्छा अउर कामना बा कि पूरा विश्व में फइलल भोजपुरिया लोग, खास करके महिला लोग आपस में संवाद करे। कला-साहित्य आ संस्कृति के साझा करे। पूरा विश्व के भोजपुरी एगो आँगन, एगो गाँव हो जाय। नारी लोग आपस में जुड़ी त पुरुष लोग त जुड़िये जाई काहे कि नारी के जुड़ला से रिश्ता दुआर ले ना, माई के रसोई आ आँगन के तुलसी चौरा ले पहुँच जाला।

नारी शक्ति आ नारी-चेतना के प्रणाम !

मनोज भावुक

***

BHOJPURI JUNCTION-DELBHO/2021/81811

Title Code - DELBHO00011

http://humbhojpuria.com/ https://twitter.com/bhojpurijuncti2/ https://www.facebook/com/bhojpurijunct2

पाक्षिक पत्रिका | 1 जुलाई - 31 अगस्त, 2024 | मूल्य - ₹ 20

भोजपुरी जंक्शन

महिला रचनाकार अंक

कहानी-संग्रह (भाग-2)

स्त्री के खुदबयानी

कहानी में जिंदगी : जिंदगी में कहानी

www.bhojpurisahityangan.com

वर्ष : 4, अंक : 21-24| 1 जुलाई - 31 अगस्त, 2024

भोजपुरी जंक्शन

पाक्षिक पत्रिका

अध्यक्ष आ प्रधान संपादक
रवीन्द्र किशोर सिन्हा

संपादक
मनोज भावुक

उप संपादक
अखिलेश्वर मिश्र, अनिल कुमार दुबे 'अंशु'
मनीषा श्रीवास्तव, परिधि जैन

कला अउर सज्जा
ज्योति सिन्हा

सोशल मीडिया
सुमित रावत

विपणन विभाग

सहायक उपाध्यक्ष
विशाल सिन्हा (मो.- 8853531208)
जनसंपर्क अधिकारी: संदीप द्विवेदी (मो. 9868317507)
क्षेत्रीय प्रबंधक : बिहार-झारखंड
मनीष किशोर (मो.-9334919888)

संपादकीय कार्यालय
ई-1, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली- 110065
editor.humbhojpuria@gmail.com

पंजीकृत कार्यालय
ई-1, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली- 110065
http://humbhojpuria.com/
https://twitter.com/bhojpurijuncti2
https://www.facebook.com/bhojpurijunct2/

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक रवीन्द्र किशोर सिन्हा द्वारा ई - 1, ईस्ट ऑफ़ कैलाश, नई दिल्ली - 110065 से प्रकाशित अमर उजाला लिमिटेड, सी - 21/22, सेक्टर - 51, नॉएडा 201301, गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित । संपादक - रवीन्द्र किशोर सिन्हा ।

हलचल

राम के नगरी अयोध्या में भोजपुरी जंक्शन के संपादक मनोज भावुक सम्मानित.....70

कंटेंट डिस्क्लेमर: पत्रिका में संकलित सभ रचना में व्यक्त विचार रचनाकार के आपन विचार ह। ओहसे भोजपुरी जंक्शन परिवार के सहमत भइल आवश्यक नइखे।

एह अंक में

सुनीं सभे

हाथरस हादसाः कब हमनी के आई भीड़ नियंत्रित करे के लूर? 6

भारत

चन्द्रमुखी वर्मा (दिवंगत) / बड़का दोना.....8
डॉ. मधु वर्मा / नेह के धार.....11
छाया प्रसाद / सुखिया के माई 14
डॉ. सुशीला ओझा / गोदिया में चनरमा 17
डॉ. उर्मिला सिन्हा / आपन घर.....20
माला वर्मा / महातर्पण.....23
पार्वती देवी 'गौरा' / दगाबाज बलमा 26
मंजुला श्रीवास्तवा / ए अम्मा ! 27
मीरा श्रीवास्तव / अछूत के अंत 28
डॉ. ज्योत्स्ना प्रसाद / पटाक्षेप 30
मणि बेन द्विवेदी / बड़का गो इज्जत 34
सुमन झा 'माहे' / अहम.....35
मीनाघर पाठक / आखिर कबले जगिहें हलकू ?.....36
किरण सिंह / डिस्को बाबा 39
डॉ. संध्या सिन्हा 'सूफी' / दिदिया 41
डॉ. शिप्रा मिश्रा / अन्हरिया में अँजोरिया 45
सरोज सिंह / दलित के ?.....47
प्रियम्बरा / चूंटा लेबऽ की चूंटी...?.....51
डॉ. सुमन सिंह / मरून कलर सड़िया 53
डॉ. यश्वी मिश्रा / बहुरिया 56
शालिनी कपूर / रंग कत्थई 59
डॉ. कुमारी अंजलि / परभौतिया के महतारी.....61

मॉरीशस

डॉ. संध्या अंचराज कीनू / इश्वरवा के माँ.....63

सूरीनाम

गयाप्रसाद सीमा / सुंदर बाल घर 65

नेपाल

पूजा 'बहार' / आलू परोठा 67

राउर पाती

प्रो. (डॉ.) उषा वर्मा, श्यामा सिंह, चंद्रेश्वर, मार्कण्डेय शारदेय, उदय नारायण सिंह, विष्णुदेव तिवारी, डॉ. शारदा पाण्डेय, डॉ. दिवा शुक्ला, गोपाल जी राय, गयाप्रसाद सीमा, मीरा श्रीवास्तव, कारमेन सुयश्वीदेवी जानकी, देव किस्सूंदोयाल, किरण सिंह, डॉ. नीलम श्रीवास्तव, डॉ. विनय कुमार सिंह, नीतू सुदीप्ति 'नित्या', हरेन्द्र पाण्डेय, कनक किशोर, डॉ. कादम्बिनी सिंह, संगीता मिश्रा, मंजुला श्रीवास्तवा, डॉ. उर्मिला सिन्हा, उमाशंकर राय, संध्या सिंह, साधना शाही, मोहन पाण्डेय 'भ्रमर', आरती श्रीवास्तव, पद्मा मिश्रा, शालिनी कपूर, रेखा भारती मिश्रा, अवधेश सिन्दूरिया, माया शर्मा, सीमा स्वधा, सुरेश गुप्त, सरिता सिंह, रचना झा, डॉ. सुनील कुमार उपाध्याय, राय यशेन्द्र प्रसाद, रामरक्षा मिश्र विमल, अनीता मिश्रा सिद्धि, डॉ अन्नपूर्णा श्रीवास्तव, डॉ. ज्योत्स्ना प्रसाद, लैलावाती लालाराम-हरद्वारसिंह, विजय चंद्र पाठक, लक्ष्मी जयपोल, सरिता कुमारी.....71

श्रद्धांजलि

स्मृतिशेष बिमलेंदु भूषण पांडेय.....91

संपादकीय

स्त्री के खुदबयानी

कहानी में जिंदगी : जिंदगी में कहानी

जिंदगी एगो कहानी ह। कहानी के समझल माने जिंदगी के समझल। जिंदगी के समझल आसान ना होला। जिंदगी के संगे रहलो पर जिंदगी से भेंट ना होला। जब तक आदमी एह जिंदगी के एगो चेहरा स्केच करेला तब तक, दोसरे चेहरा उभर के आ जाला। सब आउँज-गाउँज हो जाला। कवनो मुकम्मल तस्वीर बनबे ना करे। बस; चिचरी परात रह जाला।

खुद के देखे खातिर द्रष्टा बने के पड़ेला। अपना जिंदगी से अपना के अलग कके अपना सफर के सचेतन होके देखे के पड़ेला अउर ईमानदारी से ओह सफर के कहानी कहे के पड़ेला, ओह किरदार के गढ़े के पड़ेला। खुद में रह के खुद के कहानी कहल बड़ा कठिन बा।

दोसरा के कहानी कहल त अउरो कठिन बा। अरे, जब रउरा अपने के ना बुझनी त दोसरा के का बूझब ? ओकरा के त बहरी से देखत बानी। ओकरा भितरी का चलत बा, केतना तेजी से चलत बा, ई रउरा का पता? बात-बात पर अक्सर हँसे-मुस्काए वाला आदमी जब पंखा से लटक जाता, तब बुझाता कि अरे! ओकरा भितरी त कवनो अउरी कहानी चलत रहे। आन्ही-तूफान चलत रहे।

एगो मुकम्मल कहानी लिखे वाला के चेतना जागल रहेला। ऊ दुआर पर के सोनहुला धूपे ना देखे, अँगना में बरिसत सावनो-भादो देख लेला ..आ साथे-साथ ओह में भिंजबो करेला। तब जाके पकड़ाले कवनो कहानी, पकड़ाला कवनो किरदार। कहानीकार के काम गोताखोरी के ह, नदी के किनारे बइठ के सृजन ना होखे। ..एतना कुछ के बादो कहानीकार जवन कहता, ऊ ठीके-ठाक कहता, ई कवनो जरूरी नइखे। ई ओकर आपन ऑबजर्वेशन ह। आपन दृष्टि ह। एह से कवनो कहानी से सहमति आ असहमति दूनों हो सकेला।

एगो समय रहे जब हमार नोकरिये रहे कहानी पढ़े के। तब हम जी टीवी के लोअर परेल, मुंबई ऑफिस में बतौर लेखक काम करत रहीं। उहाँ कंटेंट इंजिन टीम के हिस्सा रहीं त कामे रहे सीरियल खातिर कहानी सुनल आ ओह पर आपन फीडबैक दिहल। सीरियल खातिर उपन्यास के पृष्ठभूमि के जरूरत होला। ..अउर टीवी चैनल में फीडबैक मार्केटिंग के ध्यान में रख के देबे के पड़ेला। कहे के मतलब कि उहाँ कहानी एगो प्रोडक्ट होला।

बाकिर साहित्य में कहानी त आत्मा के रिफ्लेक्शन ह। इहाँ मिलावट आ जोड़-गाँठ ना चले। दिमाग ना चले, दिल चलेला। दिमागी कसरत से लिखाइल कहानी दिल के ना छूवे।

महिला रचनाकार अंक/ कहानी-संग्रह (भाग-1) में 25 गो महिला कथाकार के कहानी रउरा सभे पढ़नी, साथे चार गो लघुकथा भी। भारत, नेपाल, मॉरीशस, सूरीनाम, फिजी, यूरोप आ अमेरिका ..हर जगह के कथाकार के कहानी। दिवंगत, वरिष्ठ, कनिष्ठ आ नवोदित ..हर श्रेणी के कथाकार के कहानी। एह अंक यानि कि कहानी-संग्रह (भाग-2) में भी विविध रंग के कहानियन के परोसे के कोशिश कइले बानी जा।

हमनी के त सोचले रहनी कि बस; एगो महिला रचनाकर अंक निकालब जा जवना में महिला रचनाकर लोग के भोजपुरी कविता, कहानी आ लेख शामिल रही। बाकिर जब हमनी के दिल से लगनी जा त पूरा दुनिया से रचनन के बरसात होखे लागल। जब दस गो कहानी आ गइल त सोचनी जा कि खिंचड़ी ना पकाएब जा। कहानी अलग, कविता अलग आ लेख अलग।

बाकिर धीरे-धीरे लगभग सौ गो कहानी आ गइल आ अबहीं ले आवते बा। गुणवत्ता के खयाल करत पंद्रह-बीस गो कहानी छाँटियो दिहल गइल बा, तबो चुनल गइल सब कहानियन के अँटावे में चार अंक त लागिये जाई। एह से कथाकार लोग के थोड़ा धीरज राखे के पड़ी। धीरे-धीरे सभकर कहनिया आई, अइबे करी। हम त आभार मानत बानी कि देश त देश, सात समुंदर पार से भी महिला कथाकार लोग के उत्साहजनक रचनात्मक सहयोग मिलल। हम ओह सबके दिल से धन्यवाद देत बानी।

अरे! जहाँ दस-पंद्रह गो महिला कथाकार के नाम गिनावल मुश्किल रहल ह, (नाम सुरते प ना चढ़त रहल), उहाँ लगभग सौ गो महिला कथाकारन के सूची आज उपलब्ध बा त ई कम खुशी के बात थोड़हीं बा। कुछ नया लोग में त गजब के प्रतिभा बा। ई बात ना ओह लोग के पता रहल ह, ना हमनी के। लिखला-लिखववला से नू पता चलेला। एह लोग के कहानी से भोजपुरी कथा-संसार के भविष्य के प्रति एगो आश्वस्ति बनत बा।

चूकि ई अंक भोजपुरी स्त्री-लेखन प केन्द्रित बा त एगो बात कहल चाहब कि आदमजाद भइला के बावजूद आदमी आ औरत के जीवन-अनुभव के धरातल एकदम से एके सरिस ना होखे। एक बात ईहो कि द्रष्टा आ भोक्ता के अनुभव में भिन्नता जरूर होखी। एह मायने में स्त्री के लेके स्त्री के खुदबयानी बेशक अधिक महत्त्व के वस्तु बा। स्त्री के चारू ओर जवन लोक बा, ओकरा प्रति उनकर आपन नजरिया से रूबरू भइल एह विशेषांक के संयोजन के पूर्वपीठिका ह।

महिला अंक के हर भाग में 'धरोहर' स्तम्भ के अंतर्गत ओह दिवंगत महिला कथाकार के कहानी दिहल जा रहल बा, जेकरा से भोजपुरी कथा-कहानी (महिला लेखन) के शुरूआत भइल। भारत के बाहर नेपाल, मॉरीशस, सूरीनाम आ फिजी आदि देशन के भोजपुरी कहानी के भाषा में कवनो छेड़छाड़ नइखे कइल जात ताकि ओकर रस बनल रहो। बनारस में बनारस, आरा में आरा, मॉरीशस में मॉरीशस आ सूरीनाम में सूरीनाम के लय, लहजा, टोन, उच्चारण, शब्दावली आ मिजाज के जस के तस रखे के कोशिश कइल गइल बा। ई मानल तथ्य ह कि कवनो विस्तृत भाषा-समाज के भीतर बोलल जाए वाली भाषा के गठन में अंतःसूत्रता के बावजूद बारीक रूपभिन्नता मौजूद होला, जेकर पहचान आ संरक्षण ओह भाषा-समाज के जवाबदेही ह।

कहानी-संग्रह (भाग-2) रउरा हाथ में बा। ई नारी शक्ति आ नारी-चेतना के स्वर ह। अभी ई संख्या कम बा। उम्मीद बा अउर लोग आगे आई आ अपना मातृभाषा में लिखी।

उम्दा रचना के हमेशा स्वागत बा।

प्रणाम।

मनोज भावुक

***

BHOJPURI JUNCTION-DELBHO/2021/81811

Title Code - DELBHO00011

http://humbhojpuria.com/ https://twitter.com/bhojpurijuncti2/ https://www.facebook/com/bhojpurijunct2

पाक्षिक पत्रिका | 1 सितम्बर - 31 अक्टूबर, 2024 | मूल्य - ₹ 20

भोजपुरी जंक्शन

महिला रचनाकार अंक

कहानी-संग्रह (भाग-3)

स्त्री : पुरुष के सहभागिनी, सहधर्मिणी आ सहचारिणी

www.bhojpurisahityangan.com

वर्ष : 5, अंक : 1-4| 1 सितंबर-31 अक्टूबर 2024

भोजपुरी जंक्शन

पाक्षिक पत्रिका

अध्यक्ष आ प्रधान संपादक
रवीन्द्र किशोर सिन्हा

संपादक
मनोज भावुक

उप संपादक
अखिलेश्वर मिश्र, अनिल कुमार दुबे 'अंशु'
मनीषा श्रीवास्तव, परिधि जैन

कला अउर सज्जा
ज्योति सिन्हा

सोशल मीडिया
सुमित रावत

विपणन विभाग

सहायक उपाध्यक्ष
विशाल सिन्हा (मो.- 8853531208)
जनसंपर्क अधिकारी: संदीप द्विवेदी (मो. 9868317507)
क्षेत्रीय प्रबंधक : बिहार-झारखंड
मनीष किशोर (मो.-9334919888)

संपादकीय कार्यालय
ई-1, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली- 110065
editor.humbhojpuria@gmail.com

पंजीकृत कार्यालय
ई-1, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली- 110065
http://humbhojpuria.com/
https://twitter.com/bhojpurijuncti2
https://www.facebook.com/bhojpurijunct2/

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक रवीन्द्र किशोर सिन्हा द्वारा ई - 1, ईस्ट ऑफ़ कैलाश, नई दिल्ली - 110065 से प्रकाशित अमर उजाला लिमिटेड, सी - 21/22, सेक्टर - 51, नॉएडा 201301, गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित, संपादक - रवीन्द्र किशोर सिन्हा

हलचल

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय भोजपुरी संगोष्ठी..... 78
बिहार, झारखंड आ पूर्वांचल परिवार, बैंगलोर द्वारा आयोजित 'पुरवइया जलसा' 80
भोजपुरी कवि सम्मेलन, बेलसंड, गोपालगंज 85

कंटेंट डिस्क्लेमर: पत्रिका में संकलित सभ रचना में व्यक्त विचार रचनाकार के आपन विचार ह। ओहसे भोजपुरी जंक्शन परिवार के सहमत भइल आवश्यक नइखे।

एह अंक में

सुनीं सभे

नर्स लोग के चेहरा पर मुस्कान बनल रहे !.....9

भारत

बिन्दु सिन्हा (दिवंगत) / लाल निशान.....11
डॉ० कविता वर्मा / कलजुग के चमक ! 14
रूपश्री / खोंता से बिछुड़ल 15
आशा श्रीवास्तव / दवाई के रिएक्शन 18
बच्ची देवी / चिटुकी भर सेनूर 21
ज्योत्सना अस्थाना / बेबसी 23
डॉ० मंजू सिन्हा / ओठगन 27
ऋचा वर्मा / आपन हारल अउर मेहरी के मारल 29
डॉ० पूनम सिन्हा 'श्रेयसी' / बुल्लू छतरी 33
सीमा मिश्र / बड़की भउजी 35
इंदु उपाध्याय / खाकी 40
विमला राय / कलपातो फुआ 42
तनुजा सिन्हा / भाग्यविधाता 44
पद्मा मिश्रा / बदलाव 50
डॉ० पूनम आनंद / बेली-चमेली 52
साधना शाही / रहस्यमय गाँव 54
माधवी उपाध्याय / कृष्णा ! 56
रीना सिन्हा 'सलोनी' / पोस-पूत 58
सारिका भूषण / सरसों के खेत 60
रजनी श्रीवास्तव 'अनंता' / अँजोर हो गइल 62
डॉ. कादम्बिनी सिंह / सूरजमुखी 64

मॉरीशस

वंदना धनपत / अधूरी इच्छा 66

सूरीनाम

शर्मिला रामरतन / सरनाम के सरनामी.....67

नेपाल

प्रिया मिश्र 'मन्नु' / विश्वासघात.....68

लंदन

आरती श्रीवास्तव 'विपुला' (मूल रूप से जमशेदपुर से) / पश्चाताप.....70

राउर पाती

रेखा भारती मिश्रा, हिमकर श्याम, डॉ. आशारानी लाल, कल्पना मनोरमा, डॉ. मधुबाला सिन्हा, ज्योत्सना अस्थाना, कृष्ण मुरारी राय, श्यामा सिंह, डॉ. किरण सिंह, प्रज्ञा पाण्डेय, डॉ. कादम्बिनी सिंह, डॉ. ज्योत्स्ना प्रसाद, डॉ. शंकर मुनि राय.....81

प्रकाशित किताब

डॉ. शारदा पाण्डेय, डॉ. आशारानी लाल, डॉ. राजेश्वरी शांडिल्य (दिवंगत)
पद्मश्री विंध्यवासिनी देवी (दिवंगत), कुछ अन्य दिवंगत महिला साहित्यकार 87

स्त्री : पुरुष के सहभागिनी, सहधर्मिणी आ सहचारिणी

स्त्री पुरुष के सहभागिनी, सहधर्मिणी, सहचारिणी होली। स्त्री पुरुष के सम्पत्ति ना होली। कुछ पुरुष लोग स्त्री के आपन सम्पत्ति बूझेला। स्त्री के फजीहत के सबसे बड़का कारण इहे बा। असली सम्पत्ति पर स्त्री के कवनो अधिकार ना रहे। आगे चलके ई अधिकार कुछ हद ले मिलबो कइल, तबो पुरुष के ऊ संस्कार अभी जात नइखे। के बड़ आ के छोट? आ काहे? दूनू पहिया बराबर रही त गड़िया ठीक से नू चली, सरकार! गृहस्थी के गाड़ी त भरोसा, समझदारी आ एक-दूसरा के सम्मान के फ्यूल से चलेला। नेह-दुलार के लुब्रिकेशन यानी चिकनाई पाके दउड़ेला। एह सबके बिना त गड़िये ओवरहीट होके डैमेज हो जाला।

टेलीविजन खातिर लिखल हमार कहानी 'लक्ष्मण रेखा' के एगो संवाद ह - "खाना बनावे में यूट्रस (गर्भाशय/बच्चेदानी) के जरूरत पड़ेला का? तब काहे औरते खाना बनाई?"

हमार इशारा स्त्री-पुरुष में काम के लेके भेद-भाव पर रहे। रउरा जानत बानी कि भोजपुरिया क्षेत्र में आ तकरीबन समूचे भारत में चूल्हा-चउका-बर्तन के काम औरत के जिम्मे बा। मरद चुहानी में घुसते घरघुसना, सिमसिमाह भा जोरु के गुलाम कहा जालें। पुरुष के बर्तन मँजला पर ना जाने केतना मजाक (जोक्स) बनल बा। माई के रसोई, भउजी के रसोई, चाची के रसोई सुनले होखब। एह पर कइगो टीवी शो बनल। बाकिर; केहू बाबूजी के रसोई भा चाचा के रसोई सुनले बा ?

हॉस्टल, लॉज या अकेले कमरा लेके रहे वाला अधिकांश स्टूडेंट खाना बनवले बाड़न, बाकिर बिआह के बाद एक कप चाय बनावे के कह दीं त उनकर आँह-उँह शुरू हो जाई। पत्नी बेमार पड़ गइली त होटले के आस बा। ई बात समयाभाव के चलते नइखे, सोच के चलते बा। ई सोचे ह कि आज अधिकांश कामकाजी महिला के डबल ड्यूटी खटे के पड़त बा। बाहर के नोकरी आ घर के किचन, बाल-बच्चा, कपड़ा-लत्ता, साफ-सफाई सब उनके जिम्मे। पुरुष आ स्त्री के बीच काम के ई भेद, ई बँटवारा कब आ कइसे भइल, स्पष्ट नइखे। लेकिन ई मेंटल ब्लॉकेज त बड़ले बा।

कहल जाला कि परिवार प्राथमिक पाठशाला ह। बाल-बच्चा घर में जवन देखेला, उहे सिखेला। त बचपने से ईहे सब देखत-देखत बबुआ लोग के दिमाग में ई बात बइठ गइल कि भोजन बनावल, कपड़ा धोअल आ घर के साफ-सफाई ..ई सब काम महिले लोग के ह, भले ऊ वर्किंग वूमन काहे ना होखस। एक गिलास पानी देबे के होखे त बेटी दी, बेटी से माँगल जाई, बेटा से ना। बेटा-बेटी में ई भेद काहें ?

अतने ना; कुछ लोग बेटी के सराहत ई कहेला कि ई हमार बेटी ना, बेटा हई। एकर माने बूझीं। माने ई बा कि बेटा सुपीरियर होला, जबकि केतना घर अइसन बा, जेकरा के बेटिए-बहू सम्हरले बाड़ी, बेटा-दामाद निठल्ला पड़ल बा। अइसनो उदाहरण बा कि जेकरा बेटी बिया, ओकर बुढ़ापा बढ़िया से कटत बा आ कुछ लोग बेटे से तबाह बा।

संपादकीय

महिला जब तक घर से बाहर निकलत ना रही, पढ़ल-लिखल ना रही भा चिट्ठी-चपाठी भर पढ़ल रही, तब तक त ई ठीक रहे। तब बिआह खातिर ईहे देखलो जात रहे कि लइकिया पाक कला में निपुण बिया नू !

बाकिर अब, जब लइकियो लोग लइकन लेखा पढ़े-लिखे लागल आ उहो पइसा कमाए वाली पढ़ाई- प्रोफेशनल कोर्स, त टकराहट शुरू हो गइल बा आ ई टकराहट मध्य वर्ग में ज्यादा शुरू भइल बा काहे कि इहाँ बात-बात में इज्जत आ नाक आ जाला। पहिले पति के नाम लेला से इज्जत जात रहे। धीरे-धीरे पत्नी पति के आप के बदला तुम कहे लगली त इज्जत जाए लागल। दरअसल पति के श्रेष्ठताबोध के बेमारी जाते नइखे। बराबरी भा दोस्ती वाला भाव जागते नइखे। पहिले त पति लोग परमेश्वर रहे, देवता रहे। अब धीरे-धीरे लेवल तनी डाउन होता। आदिमानव काल में जंगल में लँगटे घुमला से लेके वर्तमान के लिविंग टुगेदर युग तक के शादी-बियाह के इतिहास देखब त अजीबोगरीब कहानी आ बदलाव-यात्रा देखे के मिली।

देखीं; हर युग में स्त्री के स्थिति अलग-अलग रहल बा। जे लोग गार्गी, मैत्रेयी, घोषा, गोधा, विश्ववारा, अपाला, अदिति, इंद्राणी, लोपामुद्रा, सार्पराज्ञी, वाक्क, श्रद्धा, मेधा, सूर्या आ सावित्री जइसन विदुषी के कहानी जानता, ऊ स्त्री-शिक्षा के गौरवपूर्ण व स्वर्णिम परिपाटी के जानता। ऊ त मध्यकाल में मुगल आ ओकरा बाद अंग्रेज के गुलामी के दौरान स्त्री के घर के भीतर लुकवा दिहल गइल। जाहिर बा पढ़ाई-लिखाई चौपटे हो गइल। आ आज जब शुरू भइल बा त अत्याधुनिकता आ पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण आ ऊपर से हई सिनेमा, इंटरनेट आ विज्ञापन स्त्री के भोग्या के रूप में प्रस्तुत करत बा। मतलब पढ़ाई से डिग्री आ जनरल नॉलेज त भेंटाता, बाकिर संस्कार के बीजारोपण ना भइला से महिला लोग के खिलाफ अनेक नृशंस वारदात आ कांड होता। आजो माई-बाप के जीव धक-धक करत रहता, लइकी पढ़े जातिया तब आ चाहे नोकरी करे जातिया तब। लेकिन; ई साँच बा कि मन से भा बेमन से महिला लोग घर-आँगन से बहरी निकल गइल बा आ जब निकल गइल बा त घर-बाहर के समीकरण भी बदल गइल बा। त एह बदलल समीकरण में आज के हिसाब से सब देखे के बा कि कइसे ठीक रही ...

'पुनर्नवा' में आइल आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के ई कथन एकदम से प्रासंगिक बा – "अगर निरन्तर व्यवस्थाओं का संस्कार और परिमार्जन नहीं होता रहेगा तो एक दिन व्यवस्थाएँ तो टूटेंगी ही, अपने साथ धर्म को भी तोड़ देंगी।"

सत्य के समझल ओतना सहज नइखे। जवन सत्य दिखत बा, ऊ निजी हो सकेला, समय सापेक्ष हो सकेला, बाकिर ऊ सार्वकालिक आ सार्वभौमिक होखे, ई बात दावा से ना कहल जा सके।

स्त्री-पुरुष आ खास क के पति-पत्नी के लेके हमेशा कहानी बदलत रहल बा। स्थिति बदलत रहल बा। पति-पत्नी का ह? दू गो देह आ दू गो मन के मिलन। अब दू गो मन के एक पिच पर ले आवे खातिर अध्यात्म आ साहित्य से जुड़ल जरूरी बा। ऊ प्रोफेशनल कोर्स से ना होई। प्रोफेशनल कोर्स त पइसा देता, बाकिर साथ ही घर में टकराहट, तनाव, अहंकार आ विवाद भी ओतने देता। पइसा सुख खातिर होला कि विवाद आ तनाव खातिर जी ?

अरे, बेटी के सही शिक्षा आ संस्कार दिआई त ऊ खराब बहू कइसे बन जाई? बेटा के सही शिक्षा आ संस्कार दिआई त ऊ खराब दामाद कइसे बन जाई? .. आ व्यापक अर्थ में बेटा-बेटी खराब नागरिक कइसे बन जाई? सही शिक्षा आ संस्कार एक-दूसरा के दबावे के ना, उठावे के सिखावेला। ऊ शब्द आ काम-धंधा से परे प्रेम तक पहुँच जाला।

काम के का लेले बानी ! पहिलहूँ राजा-महाराजा किहाँ रसोइया अउर आजो फाइव-सेवन स्टार हॉटेल में सेफ अधिकांश मरदे बाड़न। एकर मतलब ई कहल गलत बा कि मेहरारुए कुकिंग के एक्सपर्ट होली। दरअसल जहाँ धन-लाभ के बात होला, उहाँ काम पुरुष-प्रधान हो जाला। जहाँ सेवा-भाव होला ऊ स्त्री के सउँपा जाला। एही से स्त्री खातिर आर्थिक स्वावलंबन आ पहचान के संकट हमेशा चुनौती रहल बा।

साँच कहीं त गजब के फितूर दिमाग में घर कइले बा। आजो बहुते घर अइसन बा, जहाँ पत्नी के गरियावल-पीटल मर्दानगी ह। अब ओह घर के पढ़ल-लिखल डिग्रीधारी लइकनों के उहे सोच आ एटीट्यूड बा। बाकिर; ई फ़ॉर्मूला आगे चलत नइखे। पढ़ल-लिखल, नौकरी-पेशा वाली लइकी जब बहू बनके एह घर में आवत बिया, त पतिदेव महोदय के एह एटीट्यूड के ललकार देतिया आ पतिदेव के ना समझला-सम्हरला पर बात कोर्ट-कचहरी ले पहुँच जाता। नौबत पूरा खानदान के जेल जाए के आ जाता, तब पतिदेव के बाबूजी के समझ में आवता कि ऊ घर में कइसन माहौल देत रहलन ह, ऊ आज ले केतना अनेत करत रहलन ह आ उनकर पत्नी केतना जुलुम सहत रहली ह? त का हर बात के समझे-समझावे खातिर पुलिस आ कानून के डंडा जरूरी बा ? .. आ जे सीधा बा, विरोध ना करे, लोक-लाज का चलते भा डेपेन्डेन्सी का चलते सहे, ओकरा के सतावत रहल मर्दानगी ह?

मर्दानगी के अजब-गजब परिभाषा गढ़ाइल बा अपना इहाँ। घर के कवनो फैसला औरत लेवे लगली त मर्दानगी पर सवाल। अगर कवनो औरत कमा के घर चलावे लगली आ पुरुष घर में बइठल बाड़न त मर्दानगी पर सवाल।

ई बात काहें नइखे समझ में आवत कि पुरुष आ स्त्री भा पति आ पत्नी एक-दूसरा के पूरक ह। .. दुन्नो मिलके एक ह। जब दुन्नों एक्के बा त सब जिम्मेवारी दुन्नों के बा। दुन्नो के जिम्मेवारी बा कि घर में खुशी आ आनंद बरकरार रहो। आ ई तब्बे संभव बा जब दुन्नो के बीच स्ट्राँग बान्डिंग होखे, एक-दूसरा के प्रति प्रेम आ सम्मान होखे।

संपादकीय

केहू कवनो काम करे, ओह में कवनो दिक्कत नइखे, बाकिर हई काम हउहे करिहें, एह में दिक्कत बा। ईहे विवाद के जड़ बा। केतना पत्नी लोग फिजूल खर्च करत रहेला आ पति के कपार प चढ़ल रहेला कि कहाँ से आई, हम नइखीं जानत। कमाइल राउर जिम्मेवारी बा। काहे भाई ? ओही तरे केतना पति लोग पत्नी से नोकरी आ पइसो के आस करेला आ चाहेला कि उनका एक बोल पर ऊ दस बेर चाय लेके खड़ा रहस। बाल-बच्चा, हीत-मीत, सास-ससुर, चूल्हा-चउका, बर्तन-बासन सब सम्हारस। अरे ऊ औरत हई कि मशीन ? पतिदेव महोदय के ई समझे के पड़ी कि औरतो इंसान होले। ... आ पतिदेवे ना सासो-ननद के। बहुत घर में औरते औरत के दुश्मन बाड़ी। ऊहे लोग ढेर अकरहर करता।

परिवार के खुशहाली आ शुभ सपना के साँच होखे में जवन सबसे सहायक बात बा, ऊ ई बा कि एक-दूसरा के भावना के समझल आ ओकर कद्र कइल, एक-दूसरा के सपना के फले-फूले के पर्याप्त अवसर दिहल आ ओह में यथासंभव सहयोग कइल।

अगर कवनो महिला नेत्री, अभिनेत्री, खिलाड़ी, लेखिका भा गायिका बने के चाहत बाड़ी त उनका सपना के चूल्हा-चउका में झोंकल ठीक नइखे। उनकर पाँख कुतरल ठीक नइखे। कई दशक से त ऊ लॉक डाउन में बड़ले बाड़ी। आँगन आ किचन में कैद बड़ले बाड़ी। उड़े दिहीं महाराज, उड़े दिहीं।

एक तरफ त उनका के लक्ष्मी, सरस्वती, देवी, दुर्गा कहल जाता आ दूसरा तरफ सेकेण्ड सेक्स यानी द्वितीय श्रेणी के नागरिक। माने उनका ना त देविये वाला प्रतिष्ठा भेंटाता आ ना आदमिये वाला अधिकार। आजो नइहर में बाप-भाई आ ससुरा में पतिदेव उनकर परिचय-पहचान बाड़ें। उनकर आपन कवनो वजूदे नइखे। अरे महाराज ! पति-पत्नी, भाई-बहिन, बाप-बेटी ..एह सारा रिश्ता, सारा बंधन के बावजूद हर आदमी एगो स्वतंत्र इकाई बा, इंडिविजुअल बा आ ओकरा अपना सपना के साकार करे के अधिकार बा। ... आ एह में सबसे पहिला सहयोग भा सहयोग के उम्मीद परिवार से होला। परिवार ऊहे, जहाँ सभे सभका भावना के समझे आ आदर करे।

हम लंदन में प्लांट मैनेजर रहीं। हमरा फैक्ट्री के मालिक डेविड रोज फजीरे गाड़ी से आवस आ हमरा घर के बाहर कूड़ादान से कूड़ा-कचरा लेके चल जास बीगे। नौकर त हम रहीं। उनका इहाँ नौकरी करत रहीं। कूड़ा ऊ फेंकस। उनका अंदर कवनो मेंटल ब्लॉकेज ना रहे। इहाँ त साहेब लोग अपना कर्मचारी से तरकारी मंगवावे आ आपन लइका खेलावे तक के काम ले लेला। ऊ बेचारा ऑफिसे के नौकर ना, साहेब के घरो के नौकर बन जाला। बात बस सोच के बा। समय कबो पलटी मार सकेला। हर इंसान के इज्जत करे के चाहीं। हर रिश्ता के कद्र करे के चाहीं। हम लंदन में मालिक आ मेहतर के एक संगे चाय पीयत देखेले बानी। उहाँ लिंग-भेद कम बा। डेविड अपना तिसरका मेहरारू के पहिलका मरद के बच्चा के भी ओतने मानस, जेतना अपना बच्चा के।

त समय में बहुत तेजी से बदलाव आइल बा। धीरे-धीरे मरद लोग घरेलू काम में मदद करता। बाकिर; ज्यादा लोग अभी कन्फ्यूज बा। आ कुछ लोग एतना मुलायम भइल बा कि खुदे पीड़ित हो गइल बा। ओकर आपन स्वतंत्रता खतरा में बा। संतुलन जरूरी बा। पति-पत्नी में केहू केहू पर हावी मत होखे। केहू केहू के गुलाम मत बूझे।

दिक्कत बन्हले में बा। जबरदस्ती बान्हीं मत। बन्हले में तू-तू मैं-मैं बा। रिश्ता में अगर प्रेम बा त एक-दूसरा के दुख-सुख में अनसोहातो मन अझुराइल रहेला। जरूरी बा रिश्ता में बराबरी के भाव राखल आ एक-दूसरा के सुख-दुख बेकहले महसूस कइल। एकरा खातिर प्रेम आ समर्पण जरूरी बा। हालांकि कालक्रम से उन्नति अवनति के झेलत आज के स्थिति ई बा कि गाँव से महानगर ले सहयोग के भावना बढ़ल बा। तब्बो; अखबार के पन्ना स्त्री पर अत्याचार के खबर से भरल बा। हालांकि; कहीं-कहीं पुरुषो पीड़ित बाड़ें। एही से कहत बानी कि आज जरूरत बा पुरुष आ स्त्री दुन्नो के अपना पुरातन सोच से बहरी निकले के अउर परस्पर एक-दोसरा के बेहतर तरीका से समझे-समझावे के।

जरूरत बा, धीरज के साथ परिवार आ परिवेश के संस्कार लेके चले के। अचके कुछु करेम त झटका लागी। आदमी में इनर्शिया होला, जड़त्व होला। बदलाव के स्वीकारे में समय लागेला। दोसर बात कि पुरुष आ महिला के शारीरिक संरचना अलग बा त इमोशन आ चिंतन थोड़ा अलग होखबे करी। त मूल बात बा कि थोड़ा प्यार-पुचकार से एडजस्टमेंट कके परिवार के परिवेश खुशनुमा रखीं। कवनो भी स्थिति में ओकरा के विषाक्त मत होखे दीं। संयुक्त परिवार बा त सबका साथे घुलल-मिलल जरूरी बा। अइसन ना कि पति महोदय अपना परिवार में भुला जास आ पत्नी अकेला आ उपेक्षित महसूस करस।

शादी के बाद कुछ महिला लोग के लागेला कि परिवार ही उनकर सब कुछ बा आ उनकर व्यक्तिगत जीवन कुछ नइखे। माने; अपना शादिए खातिर ऊ आपन जीवन सँवरले होखस। दोसर पक्ष ई बा कि कुछ महिला लोग आकाश में दीया बारे के चाहता, अपना जूती के नोंक पर सबके राखे के चाहता आ तनिको ऊँच-नीच होता त तुरत बात तलाक तक पहुँच जाता।

साँच कहीं त भोजपुरी समाज आ संस्कृति के बनावट श्रम-कर्म के बँटवारा का जमीन पर खड़ा बा। हमनी का कृषक समाज में, आँगन-दुआर के मेल समाज में समरसता के शक्ति-पीठ रहे। भौतिकवादी सोच आ अपना संस्कृति का चरमरइला से बहुत कुछ चरमराइल बा। गाँव से शहर पलायन के भी असर बा। विकास के नाम पर अकेलापन आ फ्रस्ट्रेशन आमद भइल बा। स्त्री-विमर्श में स्त्री के पीड़ा, शोषण आ सशक्तीकरण के शोर बा, बाकिर दरद खाली औरते लोग का ना होखे, मरदो का होला। .. आ के मरद बा जे आपन दरद कह दी ? अपना इहाँ त कहावतो बा कि सभा के हारल आ मेहरी के मारल ना कहाय!

संपादकीय

जिनगी के तबाह करे में मियाँ-बीवी दुन्नो के हाथ बा रे भाई! संतुलन बनावे के पड़ी .. परिवार आ कैरियर के बीच, फैशन आ परिवेश के संस्कार के बीच, इच्छा आ सामर्थ्य के बीच। समय आ परिस्थिति के हिसाब से बदलाव के स्वीकारे के पड़ी। आ ई तब्बे होई जब मेंटल ब्लॉकेज टूटी।

अंत में, तुलसी बाबा के बतिया गँठियाइ लिहल जाय-

जहाँ सुमति तहँ सम्पति नाना; जहाँ कुमति तहँ बिपति निधाना

त प्रेम-सद्भाव दुन्नो तरफ से बनल रहे। नर-नारी के मन मिलल रही त नारायण रहिहें उहाँ। लइकवो खुशनुमा वातावरण में पलइहन स आ देश-समाज के सुंदर भावी पीढ़ी मिली।

त रहीं अइसन कि टेंशन जाये पेंशन लेवे। कबो-कबो साथे बइठ के दूनों बेकत मटर छिल लिहल करीं। एक-दूसरा के रूप-गुन गा लिहल करीं। गाँव में बानी आ जाड़ा के दिन बा त सब शिकवा-शिकायत बोरसी में डाल दीं। शहर में बानी त कवनो कपल पॉइंट पर जाके बतिया-छतिया लीं। मन में माहुर मत कूचीं। तनी शिकवा-गिला क लीं। मन करे त तनी टेपुना चुआ लीं। रूसी-मनाईं। कस के चिउंटी काट लीं। बाल झटक लीं। दाँत काट लीं। आँख मिला के मुस्किया लीं। मुस्की में त केतना गम हवा हो जाला। कहे के मतलब कि पति-पत्नी के बीच झगड़ा सुलझावे के छिहत्तर गो उपाय बा। ... अनुभवी लोग ई पढ़ के मुस्कियात होई। ओह लोग के केतना-केतना बात आ खुरापात मन पर गइल होई। ...त बात अतने बा कि गाँठ के कैंसर बने से रोकल जा सकेला। ...कवनो बात के एतना मत बढ़े दीं कि लौटल मुश्किल होखे। लागे कि गलती भइल बा त सॉरी बोलके भा एहसास दिला के मामला तुरत सेटल क लीं। हमरा आपन कुछ शेर मन परता। बहुत गायक लोग गवले बा -

बात के त लगा लेलें दिल से
दिल लगावे ना आवेला उनका

साध लागेला हमरो की रूसीं
पर मनावे ना आवेला उनका

दिल चोरावे ना आवेला उनका
गुल खिलावे ना आवेला उनका

गुल खिलाईं महाराज ! जीवन आनंद आ मस्ती खातिर बा। आनंदमय रहल हमनी के मूल स्वभाव ह।

महिला अंक/ कहानी-संग्रह (भाग-3)

ऊपर एतना कथा-कहानी एह से भइल ह कि बहुत महिला कथाकार लोग हमरा से कहल कि नइहर में खूब लिखत-पढ़त रहनी, ससुरा में छूट गइल। हमरा सपना के, हमरा कला के, हमरा शौक के, हमरा पैशन के केहू मोले ना दिहल आ हम चूल्हा में झोंका गइनी। त हमरा लागल कि खाली लिंग-भेद के चलते देश के केतना प्रतिभा- नेत्री, अभिनेत्री, खिलाड़ी, लेखिका, गायिका, वैज्ञानिक, प्रशासक चूल्हा में झोंका जाता, ई ठीक नइखे। ई देश आ समाज के नुकसान बा। समय के साथे खुद के अपडेट करे के पड़ी।

अब तक भोजपुरी जंक्शन के महिला अंक / कहानी-संग्रह के दू भाग में रउरा देश-विदेश के पचास गो महिला कथाकार के लेखन-कला आ प्रतिभा से परिचित हो चुकल बानी। एह अंक में भी विश्व के दिवंगत, वरिष्ठ, कनिष्ठ आ नवोदित पच्चीस गो महिला कथाकार के कहानी परोस रहल बानी जा। ई सिलसिला अभी चली। पूरा विश्व से 100 गो महिला कथाकार के भोजपुरी कहानी छापे के संकल्प बा। ओकरा बाद लोकभाषा अंक बा, जवना में भोजपुरी के संगे मैथिली, मगही, अंगिका, अवधी, कन्नौजी, ब्रज, बुंदेलखंडी आ छतीसगढ़ी के महिला कथाकार लोग के कहानी भी शामिल कइल जाता। एकरा बाद लेखिका लोग के कविता आ कथेतर गद्य के संग्रह के नंबर बा। दू साल से लागल बानी जा। खोजाई-जोहाई चालू बा। जे लिख-पढ़ के भगवान जी किहाँ चल गइल बा, ओकरो के खोज-खाज के सबका सोझा ले आवे के, नया पीढ़ी से परिचित करावे के प्रयास जारी बा। जारी बा एह से कि नयको लोग जाने कि पुरनका लोग किचन से फुर्सत निकाल के लिखल-पढ़ल आ लिखे-पढ़े के राह गढ़ल। चुनौती आ संघर्ष केकरा जिनगी में नइखे। ओही में से रास्ता निकाले के पड़ी। भगवान अगर कवनो हुनर देले बाड़ें त ओकरा के मारल भगवान के अपमान ह। लिखे के जुनून बा त लिखीं सभे आ अपनों भाषा में लिखीं। अपना मातृभाषा में लिखे में बेसी धार होला। लिखलके रही। रउरा चल जाएब रामजी किहाँ, तबो रही। राउर रचना रउरा के मरे ना दी। बाकिर हँ; ओह लायक लिखे के पड़ी। पढ़े लायक, पढ़ावे लायक, दिल में धँस जाये लायक, दिमाग में फँस जाये लायक लिखे के पड़ी। खाली लिखे खातिर अखोर-बखोर लिखला से कवनो फायदा नइखे।

भोजपुरी के साहित्यिक समाज में बहुत लंबा समय से अधिकांश पुरुषे लोग महिला मन के लिखत आ गावत रहल बा। अब जब महिला लोग के हाथ में कलम बा, अवसर बा त ओह लोग के तरफ से भी बात होखे के चाहीं। हम त सितार के तार छेड़ देले बानी। अब देखे के बा कि कइसन-कइसन धुन निकलत बा। अपना-अपना दुख, पीड़ा, संघर्ष, चुनौती, अनुभव, एहसास, अवलोकन, हँसी-खुशी, प्रेम आ यात्रा के गाईं सभे। गाईं कि गीत गूँजत रहे। घर-आँगन आ खेत-खलिहान में त रउरे लोग के गीत गूँजत रहल बा त साहित्य में काहे ना ? उम्दा रचना खातिर आह्वान करत, पलक बिछवले -

प्रणाम!
मनोज भावुक

BHOJPURI JUNCTION-DELBHO/2021/81811

Title Code - DELBHO00011

http://humbhojpuria.com/ https://twitter.com/bhojpurijunctl2/ https://www.facebook/com/bhojpurijunct2

पाक्षिक पत्रिका | 1 नवंबर - 31 दिसम्बर, 2024 | मूल्य - ₹ 20

भोजपुरी जंक्शन

अब तक 100 कहानी

महिला रचनाकार अंक

कहानी-संग्रह (भाग-4)

जइसन मन, ओइसन कहानी

www.bhojpurisahityangan.com

वर्ष : 5, अंक : 5-8| 1 नवंबर - 31 दिसंबर 2024

भोजपुरी जंक्शन

पाक्षिक पत्रिका

अध्यक्ष आ प्रधान संपादक
रवीन्द्र किशोर सिन्हा

संपादक
मनोज भावुक

उप संपादक
डॉ. कादम्बिनी सिंह
मनीषा श्रीवास्तव, परिधि जैन

कला अउर सज्जा
ज्योति सिन्हा

सोशल मीडिया
सुमित रावत

विपणन विभाग

सहायक उपाध्यक्ष
विशाल सिन्हा (मो.- 8853531208)
जनसंपर्क अधिकारी: संदीप द्विवेदी (मो. 9868317507)
क्षेत्रीय प्रबंधक : बिहार-झारखंड
मनीष किशोर (मो.-9334919888)

संपादकीय कार्यालय
ई-1, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली- 110065
editor.humbhojpuria@gmail.com

पंजीकृत कार्यालय
ई-1, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली- 110065
http://humbhojpuria.com/
https://twitter.com/bhojpurijuncti2
https://www.facebook.com/bhojpurijunct2/

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक रवीन्द्र किशोर सिन्हा द्वारा ई - 1, ईस्ट ऑफ़ कैलाश, नई दिल्ली - 110065 से प्रकाशित अमर उजाला लिमिटेड, सी - 21/22, सेक्टर - 51, नॉएडा 201301, गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित, संपादक - रवीन्द्र किशोर सिन्हा

श्रद्धांजलि

भोजपुरी लोक संगीत के दीया बारे वाली 'माई' चल गइली.....71
'गाजियाबाद के भोजपुरी के जंक्शन' अशोक श्रीवास्तव.....85
भाई अशोक श्रीवास्तव जी के अंतिम प्रणाम !.....99

कंटेंट डिस्क्लेमर: पत्रिका में संकलित सभ रचना में व्यक्त विचार रचनाकार के आपन विचार ह। ओहसे भोजपुरी जंक्शन परिवार के सहमत भइल आवश्यक नइखे।

एह अंक में

सुनीं सभे

शारदा सिन्हा के छठ गीत सदियन तक गूँजत रही.....7

भारत

पुष्पा वर्मा / मजूरी 9
गरिमा बंधु / ललाइन बुआ 11
सरिता कुमारी / घर 14
डॉ. उषा राय/ मसखरी.....16
गायत्री कुमारी / सच्चाई सपना के घर के.....20
गीता दुबे / बुढ़वा पगला गइल बा.....21
शशिलता पाण्डेय / माई के आँचर.....23
डॉ. प्रतिभा कुमारी पराशर / सुगनी.....26
अनीता मिश्रा 'सिद्धि' / मोह के बंधन.....28
राजकान्ता राज / संतान 30
वीणा पाण्डेय 'भारती' / कन्यादान 32
डॉ. वृन्दा पाण्डेय / चिरैया कs बसेरा.....34
सुमन सिंह / छँगुरी.....36
वागेश्वरी पांडेय / दुलारी.....39
डॉ. अर्चना पांडेय / मुट्ठी में अबीर.....41
रजनी रंजन / जिद्द पर जीत.....44
वसुंधरा / लोर के समुंदर.....46
रेखा भारती / सुबह के भूलल 48
प्रगति त्रिपाठी / बियाह के लहंगा 52
संगीता मिश्रा / अँखिया बोलत रहे.....55
आकांक्षा राय / चोट 57

आयरलैंड

रीति मिश्रा / आयरलैंड अउर बनारस के बीच में 59

मॉरीशस

अनुपमा चमन चोमू / हमार मोटर सायकल यात्रा 61

सिंगापुर

प्रतिमा सिंह / मोनी अउर गुड़िया 63

नेपाल

नीतू अग्रहरी / बेटी.....65

गीत

दूगो छठ गीत / जागे यूपी-बिहार / उगीं ना सुरुज हमरो अँगना.....69
दिल बा दियरी भइल, देह बाती भइल.....70

प्रकाशित किताब

महिला साहित्यकारन के 101 प्रकाशित किताब.....74

हलचल

गोरखपुर विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय भोजपुरी संगोष्ठी.....88

जइसन मन ओइसन कहानी

कहानी ऊ ना ह, जेकरा के खाली कान सुने। कहानी ऊ ह, जेकरा से रोआँ-रोआँ स्पंदित-पुलकित हो जाय। सुनला के बाद कुछ होखे। आँख झरे लागे। होठ प मुस्की आ जाय। बेचैनी बढ़ जाव। आराम मिले। सवाल उठे। समाधान मिले। जड़ता टूटे। तब बूझीं कि कहानी में कुछ जान बा। ना त कहानी शब्द के कंकाल मात्र बा- निष्प्राण। अच्छा कहानी ऊ ह कि जब ऊ खतम होखे त पाठक भा श्रोता के भीतर एगो कहानी शुरू हो जाय।

भावना का ह?
विचार ह? शब्द ह? ज्ञान ह? शारीरिक-मानसिक प्रतिक्रिया ह? अनुभूति ह? .....? का ह ?

काहे ई ठीक-ठीक अभिव्यक्त ना हो पावेला? शब्द से भी ना...।

भर जिनगी भावना लहर मारत रहेला। ओह लहर के उफान दिलोदिमाग झेलत रहेला, बाकिर ओकरा के ठीक-ठीक शब्द में बान्हल, छंद में बान्हल, कविता-कहानी में बान्हल भा अभिव्यक्ति के कवनो विधा में बान्हल पानी पर पानी लिखला जइसन असंभव बा।

शब्द से बात ना फरियाला त संकेत, इशारा, भाव-भंगिमा से काम लिहल जाला; तबो बहुत कुछ अनकहल रह जाला। जीभ बेचारी के औकात सीमित बा। आँख में जुबान नइखे, बाकिर ऊ केतना-केतना बात कह देला। बाकिर कहानी में आँख कइसे बोली ? उहाँ त शब्दे के शासन चलेला। हँ, अगर कहानी कैमरा से कहल जाता त बाते अलग बा। सिनेमा वाली कहानी में त बहुत तरह के इफेक्ट्स रहेला।

बाकिर; किताब में त सारा इफेक्ट्स शब्दे से पैदा करे के होला। इहाँ पाठक के विजुअलाइज करे के स्कोप होला। सिनेमा में ऊ स्कोप खतम हो जाला।

खैर; विषयांतर होता। मूल बात पर आवल जाव कि भावना के कहानी में कइसे उतारल जाय! कहानी के ट्रीटमेंट बहुत कुछ कह देला। ट्रीटमेंट मनःस्थिति के बतावेला।

देखीं; मन में माहुर रही त कइसन शब्द निकली, मन में करुणा रही त कइसन शब्द निकली आ कुछुओ ना रही, खाली कहानी लिखे खातिर मेंटल एक्सरसाइज होई त कइसन शब्द निकली! शब्द आ शब्द के इंटेंसिटी मनःस्थिति तय करेला।

कुछ अउर अनुभव देखीं। बहुत आनंदित भइला प अँखिया बन हो जाला। बहुत खूबसूरत सुगन्ध के आनंद लीं, आँख अपने

संपादकीय

आप बन! कहीं संगीत सुनत में भाव विभोर भइनी, आँख बन! स्पर्श में आनंद आवे लागल, आँख बन! ई अनुभूति कहानी में अगर ट्रांसलेट होखे लागल त कहानी जीवंत हो जाला।

कहानी ऊ ना ह, जेकरा के खाली कान सुने। कहानी ऊ ह, जेकरा से रोआँ-रोआँ स्पंदित-पुलकित हो जाय। सुनला के बाद कुछ होखे। आँख झरे लागे। होठ प मुस्की आ जाय। बेचैनी बढ़ जाव। आराम मिले। सवाल उठे। समाधान मिले। जड़ता टूटे। तब बूझीं कि कहानी में कुछ जान बा। ना त कहानी शब्द के कंकाल मात्र बा- निष्प्राण। अच्छा कहानी ऊ ह कि जब ऊ खतम होखे त पाठक भा श्रोता के भीतर एगो कहानी शुरू हो जाय।

उम्र बढ़ला के साथे पढ़ला-लिखला आ देखला-भोगला से बहुत तरह के इनफॉर्मेशन आ अच्छा-बुरा, खट्टा-मीठा अनुभव मन-मस्तिष्क में रिकॉर्ड हो जाला। अब जवन खोपड़ी में बा, ओकरे आधार पर कहानी लिखाला। जवन सोच में बा, उहे कहानी में परिलक्षित होला, अगर विचार एने-ओने से कॉपी-पेस्ट नइखे कइल गइल त। मौलिक कहानी में आपन मनवे रिफ्लेक्ट होला। माने; जइसन मन, ओइसन कहानी।

त बूझीं जे महिला अंक के बहाने पूरा विश्व से 100 से बेसी महिला कथाकार के मन टटोले के कोशिश कइल गइल बा। ओह लोग के दिलोदिमाग के स्कैन कइल गइल बा। भोजपुरी भाषी महिला का सोचत बाड़ी, कहाँ तक सोचत बाड़ी, उनकर छटपटाहट का बा, ऊ चाहत का बाड़ी ...भा सोच के कवना गहन गुफा में फँसल बाड़ी ...एह सब के थोड़-बहुत अंदाज उनकर कहानी दे देता। साथ ही, महिला-लेखन में भोजपुरी कहानी के दशा-दिशा के भी पता चलत बा।

ए भाई! हमरा मन में फितूर उठल। काम नाध देनी। ईश्वर के कृपा भइल। रउरा सभ से भरपूर सहयोग मिलल आ पूरा विश्व से 100 गो कहानी के प्रस्तुति हो गइल। 100 गो महिला कथाकार। बाप रे बाप! जब शुरू कइनी तब 10 गो कथाकार के नाम ना सूझत रहे। ठीक कहल गइल बा-कुहासा होखे तबो, ढेर दूर ले ना लउके तबो, दू दू कदम बढ़त रहीं, रास्ता साफ होत जाई, सफर तय कर लेम।

हम नइखीं कहत कि हम सफर तय कर लेनी। ई सब उतजोग त खाली लहर उठावे खातिर कइल गइल बा। हमरा खुशी बा कि हमरा आग्रह पर बहुत लोग पहिला बार भोजपुरी में लिखे खातिर कलम उठा लेहल आ उहो कहानी ...आ मजा के बात ई कि ओह लोग के कहानी पढ़के कई गो विद्वान लोग ई कहल कि ए लोग के पहिला भोजपुरी कहानी त कई गो कहानी-संग्रह लिखे वाला लेखको प भारी बा। त हमरा बुझाइल कि जिलेबी छनला लेखा रोज-रोज गीत-गजल-कविता-कहानी छनला भा साले-साले दर्जनों किताब छाप देला से ना होला। क्वालिटी एगो चीज ह, उहे बोलेला। उहे रचना के प्राण-तत्त्व ह। ओही से प्राण-प्रतिष्ठा होला। बाकिर; कुछ गिरोहबाज लोग धकाधक बिना प्राण के मूर्ति गढ़त बा, सेटिंग-गेटिंग के बल पर अवार्ड लेता आ अपना-अपना गोल, गुट, गिरोह के ओह लेखक के महान होखे के सर्टिफिकेट बाँटता। मगर साँच त ई बा कि अखोर-बखोर आ बेजान कहानी (रचना) के समय नकार देला।

समये निर्णायक होला। बाकी त भगवान जानऽतारें ...आ का जाने उहो जानऽतारें कि ना !

हमार भाव इहे बा कि संख्या पर ना, गुणवत्ता पर फोकस कइल जाय। ओकरे पूछ होला। समय दियाव। बढ़िया-बढ़िया रचना होखे। रचना पर साफ मन से विमर्श होखे। आपन भोजपुरी समृद्ध होखे। ...एही भावना से ई सब अंक निकालल गइल बा।

ए सब अंक में एकदमे अलग-अलग क्षेत्र से अलग-अलग जीवन जीयत महिला लोगन के आपन अनुभव त बड़ले बा, साथे-साथ ओह क्षेत्र-विशेष के भोजपुरी, विचार, लोक, रीति-रिवाज सबसे साक्षात्कार होता। मतलब पूरा विश्व के भोजपुरी आ भोजपुरिया लोग के जीवन-शैली, सोच, दुख-दर्द, सुख-समृद्धि आ समस्या-समाधान भोजपुरी जंक्शन के आँगन में पसर गइल बा, उतर गइल बा।

हाँड़ी के एक्के गो दाना बता देला कि भात तइयार बा कि ना! इहाँ त 100 गो कहानी बा। लगभग हर भोजपुरिया देश से कहानी बा। हर उम्र के कथाकार के कहानी बा। जे महिला, भोजपुरी में कथा-लेखन के शुरूआत कइल आ आज एह दुनिया में नइखे, ओहू लोग के कहानी बा त हमरा बुझाता कि शोध खातिर ...पी-एच०डी० खातिर ...पर्याप्त सामग्री बा।

एह अंक के साथ 100 के संकल्प पूरा भइल बाकिर सिलसिला रुकल नइखे। बुझाता अभियान सवा सौ ले जाई। एकरा बाद महिला अंक / कहानी-संग्रह (भाग-5) भी आ रहल बा। ओकरा बाद महिला अंक / कहानी-संग्रह/ मातृभाषा विशेषांक के नंबर बा जवना में मगही, मैथिली, अंगिका, बज्जिका, ब्रज, अवधी, कन्नौजी, बुंदेलखंडी आ छत्तीसगढ़ी भाषा के कहानियन के शामिल कइल जाई।

अउर आगे, सामान्य अंकन में भी ई सिलसिला चलत रही। फिलहाल निहोरा बा कि महिला अंक पर अपने सभे लिखीं-पढ़ीं, चर्चा-परिचर्चा करीं आ अंतिम भोजपुरिया तक एह सब कंटेंट के पहुँचाईं, ताकि भोजपुरी लेखन के दिसाईं अउर लोग जागरूक होखे, कलम चलावे आ आपन भोजपुरी दिनोंदिन समृद्ध होखे।

प्रणाम।
मनोज भावुक

BHOJPURI JUNCTION-DELBHO/2021/81811

Title Code - DELBHO00011

http://humbhojpuria.com/ https://twitter.com/bhojpurijuncti2/ https://www.facebook/com/bhojpurijunct2

पाक्षिक पत्रिका | 1 जनवरी - 28 फरवरी, 2025 | मूल्य - ₹ 20

भोजपुरी जंक्शन

महिला रचनाकार अंक-5 / कहानी संग्रह

मातृभाषा विशेषांक (भाग-1)

अब तक

- 100 भोजपुरी
- 10 मैथिली
- 4 मगही
- 3 अंगिका
- 1 बज्जिका
- 2 नागपुरी

मातृभाषा के कवनो विकल्प नइखे

www.bhojpurisahityangan.com

वर्ष : 5, अंक : 9-12|1 जनवरी - 28 फरवरी 2025

भोजपुरी जंक्शन

पाक्षिक पत्रिका

अध्यक्ष आ प्रधान संपादक
रवीन्द्र किशोर सिन्हा

संपादक
मनोज भावुक

अतिथि संपादक
डॉ. बिभा कुमारी (मैथिली)
डॉ. किरण कुमारी शर्मा (मगही)
'मीनू' मीना सिन्हा (अंगिका)
डॉ. भावना (बज्जिका)
डॉ. शकुंतला मिश्र (नागपुरी)

उप संपादक
डॉ. कादम्बिनी सिंह
मनीषा श्रीवास्तव, परिधि जैन

कला अउर सज्जा
ज्योति सिन्हा

सोशल मीडिया
सुमित रावत

विपणन विभाग

सहायक उपाध्यक्ष
विशाल सिन्हा (मो.- 8853531208)
जनसंपर्क अधिकारी: संदीप द्विवेदी (मो. 9868317507)
क्षेत्रीय प्रबंधक : बिहार-झारखंड
मनीष किशोर (मो.-9334919888)

संपादकीय कार्यालय
ई-1, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली- 110065
editor.humbhojpuria@gmail.com

पंजीकृत कार्यालय
ई-1, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली- 110065
http://humbhojpuria.com/
https://twitter.com/bhojpurijuncti2
https://www.facebook.com/bhojpurijunct2/

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक रवीन्द्र किशोर सिन्हा द्वारा ई - 1, ईस्ट ऑफ़ कैलाश, नई दिल्ली - 110065 से प्रकाशित अमर उजाला लिमिटेड, सी - 21/22, सेक्टर - 51, नॉएडा 201301, गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित,
संपादक - रवीन्द्र किशोर सिन्हा

कंटेंट डिस्क्लेमर: पत्रिका में संकलित सभ रचना में व्यक्त विचार रचनाकार के आपन विचार ह। ओहसे भोजपुरी जंक्शन परिवार के सहमत भइल आवश्यक नइखे।

एह अंक में

सुनीं सभे

काहे करोड़ो श्रद्धालु लोग जुड़ेला कुंभ से ?.....7

मैथिली

पद्मश्री डॉ. उषा किरण खान (दिवंगत)/ सदति यात्रा.....9
डॉ. शेफालिका वर्मा / साइकिलक पहिया.....12
हिमाद्रि मिश्र 'हिम' / स्वाभिमान.....15
विभा रानी / मॉडल मीनाक्षी.....17
बिभा कुमारी / हीरा सन बेटी.....21
अनुराधा सिंह / दुलरी बेटी.....24
डॉ. चित्रलेखा अंशु / एकटा छल ताई.....26
दीपिका झा / अएना.....29
मुन्नी कामत / उत्तीर्ण.....31
सोनी नीलू झा / उगह सुरुज देव.....33

मगही

डॉ. किरण कुमारी शर्मा / ललका बस.....35
सोनिया अनंत / नयकी शुरूआत.....38
वर्षा वसी / कुलच्छिनी नञ, लछमी.....39
स्निग्धा सिंह / बड़का बड़.....42

अंगिका

'मीनू' मीना सिन्हा / पटरी.....44
काश्मीरा सिंह / क्रान्ति के बीज.....46
डॉ. आरती स्मित / गरम बूँद.....48

बज्जिका

डॉ. भावना / लाडो 51

नागपुरी

डॉ. कुमारी बासंती / कबीर.....54
डॉ. शकुंतला मिश्र / पँयरी.....56

भोजपुरी - 100 कहानी

महिला रचनाकार अंक / कहानी-संग्रह 1 – 25 कहानी.....60
महिला रचनाकार अंक / कहानी-संग्रह 2 – 25 कहानी.....62
महिला रचनाकार अंक / कहानी-संग्रह 3 – 25 कहानी.....64
महिला रचनाकार अंक / कहानी-संग्रह 4 – 25 कहानी.....66

हलचल

विदेश में भारत के भाषा आ संस्कृति : विशेष संदर्भ गिरमिटिया देश.....68
स्वर शारदा इंटरनेशनल अवार्ड 2025.....70
स्वास्थ्योपनिषद बा आशुतोष कुमार सिंह के किताब.....71
सम्मान.....72

संपादकीय

मातृभाषा के कवनो विकल्प नइखे

आदमी जब अछुधाह होके रोवेला, गावेला, हँसेला भा ढेर खीस-पीत में चीखेला, चिल्लाला, सपनाला, बउआला, चाहे मौत के करीब होला, मौत से बतियावेला, त ऊ अपना मातृभाषा में बतियावेला, आन कवनो भाषा में कब्बो ना, कत्तो ना। कहे के मतलब कि आदमी जब सुख आ दुख के पराकाष्ठा पर होला, भावना के उफान पर होला त मातृभाषा में ही अपना के जाहिर करेला। मन के बात जवना भाषा में उगेला, उपजेला, तवन भाषा ह मातृभाषा। मातृभाषा के रिश्ता महतारी से होला, रक्त आ अस्थि-मज्जा से होला। जनम के साथ सीखे वाली भाषा ह मातृभाषा। माई के कोरा में के भाषा ह, घर के अपनापा के भाषा ह, दादी-नानी के लोरी के भाषा ह, सामाजिक पहचान के भाषा ह, संस्कार आ व्यवहार के भाषा ह, अपना संस्कृति से जोड़ के रखे आ धरोहर के आगे बढ़ावे वाली भाषा ह। एही से भाषायी आ सांस्कृतिक विविधता के बढ़ावा देवे खातिर हर साल 21 फरवरी के अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनावल जाला। यूनेस्को से भी एकरा स्वीकृति मिल चुकल बा।

दरअसल, मातृभाषा में बुद्धि फट से खुलेला आ बात झट से बुझा जाला। मौलिक चिंतन आ रचनात्मक लेखन अधिकांशतः एही मातृभाषा में संभव हो पावेला। अर्जित भाषा में त कवनो कल्पना के लिपिबद्ध करे में दिमागी कसरत करे के पड़ेला। एह से मातृभाषा के कवनो विकल्प नइखे।

नेल्सन मंडेला कहत रहलन कि "यदि आप किसी से ऐसी भाषा में बात करें, जो वह समझ सकता है तो वह उसके मस्तिष्क में जाती है। लेकिन यदि आप उसकी मातृभाषा में बात करते हैं, तो वह सीधे उसके हृदय को छूती है।"

महात्मा गांधी कहत रहलन कि "राष्ट्र के जो बालक अपनी मातृभाषा में नहीं, बल्कि किसी अन्य भाषा में शिक्षा पाते हैं, वे आत्महत्या करते हैं। इससे उनका जन्मसिद्ध अधिकार छिन जाता है।"

मातृभाषा के महिमा सरकारो के समझ में आइल ह, तबे भारत के राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रावधान कइल गइल कि प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में ही दिहल जाय। एह से लइकन के सर्वांगीण विकास होई।

त महिला अंक के लेके हमरो मन में एगो आइडिया आइल- अलग-अलग मातृभाषा के कहानियन के एक साथ ले आवे के। काहे कि मातृभाषा में जवन कहानी लिखाला; ओकर प्रवाह, ओकर आत्मीयता आ ओकर अपनापन देखे जोग होला। ओह ढंग से कहानी दोसरा भाषा में ना उतरे। त कई गो मातृभाषा के एक प्लेटफॉर्म भोजपुरी जंक्शन पर उतारे के योजना बनल।

हालाँकि सोशल मीडिया पर भाषा के लेके खूब लड़ाई बा- वर्चस्व के लड़ाई। हमार बढ़िया त हमार बढ़िया। हमार बेसी मीठ त हमार बेसी समृद्ध।

देखीं, सबका आपन माई अच्छा लागेली। एकर मतलब ई ना कि मउसी दब बाड़ी भा खराब बाड़ी।

साँच पूछीं त माई आ मउसी में कवनो लड़ाई नइखे, बाकिर कुछ मउसिआउत भाई लोग

संपादकीय

आपुसे में कपरफोरउअल कइले बा। हम बड़ त हम बड़!... आ जे वाकई बड़ बा ऊ एह सब परिधि, बाउंड्री भा सीमा के तूड़-ताड़ के दुनिया के सामने एगो मिसाल कायम कइले बा। लोक गायिका शारदा सिन्हा आ विंध्यवासिनी देवी एकर बेहतरीन उदाहरण बा लोग। मैथिली के बेटी भोजपुरी में नाम कइलस लोग। भाषा कहाँ आड़े आइल! का भोजपुरी-भाषी, का मैथिली-भाषी, सबका आँखिन के पुतरी बनल लोग। सबका दिल में ओह लोग खातिर खूब सम्मान बा। भाषा सम्मान खातिर ह, मुहब्बत खातिर ह, संवाद खातिर ह, विवाद खातिर ना।

समावेशी प्रवृत्ति होखे के चाहीं। एक-दूसरा से सीखे-समझे के जरूरत बा। डँड़ार-डँड़ीर खिंचला के जरूरत नइखे।

भोजपुरी जंक्शन में अब तक पूरा विश्व से 100 गो महिला कथाकार के भोजपुरी कहानी (भाग 1,2,3,4) छप चुकल बा। एक अंक के अउर तइयारी होता। एही बीच मन में आइल कि भोजपुरी से इतर भाषा, जवन हिन्दी के करीब बा आ भोजपुरियो से जुड़ल बा, जइसे कि मगही, मैथिली, नागपुरी, अवधी, छतीसगढ़ी आदि के महिला कथाकार लोग के कहानियन के संग्रह एक अंक में निकालल जाय। एह में से कई गो भाषा त आपस में बेटी-रोटी के भी संबंध रखले बा। भोजपुरी आ मैथिली-भाषी के बीच भा भोजपुरी आ अवधी-भाषी के बीच अनेक शादी-बियाह भइल बा। कई गो सीमा पर दूनों भाषा आपस में भरत मिलाप कइले बा। मतलब, भाषा आ संस्कृति के लेन-देन खूब भइल बा। एही भाई-भवद्धी आ संबंध के जियावे-जोगावे के कोशिश बा ई अंक।

एह अंक में कुल 20 गो कहानी शामिल बा। अतिथि संपादक के रूप में डॉ. बिभा कुमारी (मैथिली), डॉ. किरण कुमारी शर्मा (मगही), मीनू' मीना सिन्हा (अंगिका), डॉ. भावना (बज्जिका) आ डॉ. शकुंतला मिश्र (नागपुरी) के सहयोग मिलल बा। आभारी बानी। ई अंक पद्मश्री उषा किरण खान जी के समर्पित बा।

मातृभाषा अंक के दू भाग में 15 गो मातृभाषा के 41 महिला कथाकार के 41 गो कहानी बा। अगिला भाग में अवधी, ब्रजभाषा, कन्नौजी, बुंदेलखंडी, छत्तीसगढ़ी, हरियाणवी, राजस्थानी, कुमाउँनी, गढ़वाली आ बघेली कहानी बा।

एगो कहावत बा कि 'कोस-कोस पर बदले पानी, चार कोस पर बानी', ... इहे विविधता दुनिया के रंगीन बनवले बा। एह से मातृभाषा के संवर्धन-संरक्षण ना होई त एकनी के लुप्त भइला से भाषाई इंद्रधनुष बेरंग हो जाई।

भारत सरकार के एक रिपोर्ट के अनुसार, 1961 के जनगणना के आधार पर जहाँ 1652 गो भाषा बोलल जात रहे, उहाँ फिलहाल 1365 गो बोलल जाता। यूनेस्को के मुताबिक भारत के लगभग 170 गो भाषा संकट में बा।

कवनो मातृभाषा के विलुप्त भइला के मतलब बा एगो संस्कृति, सभ्यता, ओकर साहित्य, संस्कार, लोकगीत, लोककथा, अनेक परंपरा के अमूल्य विरासत, कई गो गुप्त प्रथा, कहावत, मुहावरा आ वाचिक इतिहास ...सब के मौत।
हालाँकि भोजपुरी, मगही, मैथिली, ब्रजभाषा, अवधी, बुंदेलखंडी आ छत्तीसगढ़ी जइसन भाषा कबो विलुप्त ना होई। फगुआ, चइता, कजरी, बिरहा, आल्हा जइसन लोकगीत केहू कवना भाषा में गाई? ... अउर अब त एह सब भाषा के साहित्य, संगीत आ सिनेमा भी समृद्ध होता, त एह सब के भविष्य बहुत उज्ज्वल बा, तबो सचेत त रहहीं के पड़ी।

फरका-फरका खूब सृजन भइल आ आगहूँ होखत रही। तनी एक अँगना में बइठ के उत्सव मनावल जाय। बूझीं जे कवनो भोजपुरिया माई के घर में बियाहे-शादी बा आ ओह में मगही-मैथिली-ब्रजभाषा-अवधी-बुंदेलखंडी, छत्तीसगढ़ी आ नागपुरी आदि मउसी लोग जुटल बा। धूमगज्जर मचल बा। सभ भाषा के गीत-गवनई गूँजत बा आ सभे आनंद में बा। आनंद लीं सभे। जिंदगी आनंद लेवे खातिर बा, बिसमाद खातिर ना।

भाषा आ बोली के विवाद से ऊपर उठके सभका मातृभाषा के स्वागत-सम्मान कइल गइल बा मातृभाषा अंक में। हम त हिंदी के करीब वाला ओहू जुबान के शामिल कइल चाहत बानी, जे मात्र 50 परिवार बोलत होखे आ ओकरा में साहित्य होखे। मातृभाषा लोक के ताकत ह, ओकरा के आर्काइव कइल जरूरी बा।

हमनी के खुला आमंत्रण देनी जा। जवना-जवना मातृभाषा के कहानी मिलल, दू भाग में शामिल बा। जवन मातृभाषा रह गइल बा, आगे फेर अंक निकली त ओह में शामिल कइल जाई।

मातृभाषा माने निज भाषा आ निज भाषा में त अउरी लासा होला। ऊ अउरी धरेला। करेजा छूयेला। त पढ़ीं करेजा के छूये आ दिल में उतरे वाली कहानियन के ... अपना मातृभाषा में।

मातृभाषा अंक पऽ रउरा सभ के उद्गार के प्रतीक्षा में,

प्रणाम।
मनोज भावुक

BHOJPURI JUNCTION-DELBHO/2021/81811 Title Code - DELBHO00011

http://humbhojpuria.com/ https://twitter.com/bhojpurijuncti2/ https://www.facebook/com/bhojpurijunct2

अगिला अंक

भोजपुरी जंक्शन

महिला रचनाकार अंक-6 / कहानी संग्रह

मातृभाषा विशेषांक (भाग-2)

अब तक

- 100 भोजपुरी
- 10 मैथिली
- 4 मगही
- 3 अंगिका
- 1 बज्जिका
- 2 नागपुरी
- 1 छत्तीसगढ़ी
- 2 बघेली
- 1 बुन्देलखंडी
- 6 अवधी
- 2 ब्रजभाषा
- 2 कन्नौजी
- 3 कुमाउंनी
- 2 गढ़वाली
- 1 राजस्थानी
- 1 हरियाणवी

मातृभाषा माने दिल के भाषा

www.bhojpurisahityangan.com

वर्ष : 5, अंक : 13-16|1 मार्च - 30 अप्रैल 2025

भोजपुरी जंक्शन

पाक्षिक पत्रिका

अध्यक्ष आ प्रधान संपादक
रवीन्द्र किशोर सिन्हा

संपादक
मनोज भावुक

अतिथि संपादक
रश्मि शील शुक्ल (अवधी)
पूनम शर्मा 'पूर्णिमा' (ब्रजभाषा)
डॉ. अपूर्वा अवस्थी (कन्नौजी)
कल्पना मनोरमा (बुंदेलखंडी)
शकुंतला तरार (छत्तीसगढ़ी)
गीता शुक्ला 'गीत' (बघेली)
डॉ. सरस्वती कोहली (कुमाउंनी)
बीना बेंजवाल (गढ़वाली)
वन्दना यादव (हरियाणवी)
प्रेमलता सोनी (राजस्थानी)

उप संपादक
डॉ. कादम्बिनी सिंह
मनीषा श्रीवास्तव, परिधि जैन

कला अउर सज्जा
ज्योति सिन्हा

सोशल मीडिया
सुमित रावत

विपणन विभाग

सहायक उपाध्यक्ष
विशाल सिन्हा (मो.- 8853531208)
जनसंपर्क अधिकारी: संदीप द्विवेदी (मो. 9868317507)
क्षेत्रीय प्रबंधक : बिहार-झारखंड
मनीष किशोर (मो.-9334919888)

संपादकीय कार्यालय
ई-1, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली- 110065
editor.humbhojpuria@gmail.com

पंजीकृत कार्यालय
ई-1, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली- 110065
http://humbhojpuria.com/
https://twitter.com/bhojpurijuncti2
https://www.facebook.com/bhojpurijunct2/

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक रवीन्द्र किशोर सिन्हा द्वारा ई - 1, ईस्ट ऑफ़ कैलाश, नई दिल्ली - 110065 से प्रकाशित अमर उजाला लिमिटेड, सी - 21/22, सेक्टर - 51, नॉएडा 201301, गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित,
संपादक - रवीन्द्र किशोर सिन्हा

कंटेंट डिस्क्लेमर: पत्रिका में संकलित सभ रचना में व्यक्त विचार रचनाकार के आपन विचार ह। ओहसे भोजपुरी जंक्शन परिवार के सहमत भइल आवश्यक नइखे।

एह अंक में

सुनीं सभे

काहे जरूरी बा बच्चा लोग के मातृभाषा में शिक्षा देहल ?.....6

अवधी
पद्मश्री डॉ. विद्या विन्दु सिंह / भैरों क माई.....8
उर्मिला शुक्ल / बड़की अम्मा.....13
आशा पाण्डेय / जिनगी क साँझ.....17
डॉ. ज्ञानवती दीक्षित / इलाज से परहेज भला.....21
रश्मि शील शुक्ल / मन के जीते जीत.....24
डॉ रंजना मिश्र / पुनिया.....26

ब्रजभाषा
अर्चना चतुर्वेदी / मारे गए गुलफाम.....28
पूनम शर्मा 'पूर्णिमा' / बरगद.....30

कन्नौजी
वंदना बाजपेयी / गाँव के दिन बहुर गए भैया.....32
डॉ. अपूर्वा अवस्थी / सौभाग्य.....38

बुंदेलखंडी
कल्पना मनोरमा / हँसी हँसी में.....40

छत्तीसगढ़ी
शकुंतला तरार / गिरहूँ काय, झोंक लेहु.....44

बघेली
डॉ. आरती सिंह / कुरई भर चाउर.....46
गीता शुक्ला 'गीत' / दइउ के नियाव.....49

कुमाउंनी
डॉ. करुणा पांडे / हेमंती.....52
प्रोफेसर प्रभा पन्त / हरुलि.....56
डॉ. सरस्वती कोहली / कलावती.....60

गढ़वाली
कुसुम भट्ट / और... ऐना टूट गे.....61
बीना बेंजवाल / रुप्यों कि कुटरि.....64

हरियाणवी
वन्दना यादव / सुगली.....67

राजस्थानी
प्रेमलता सोनी / डकार.....72

भोजपुरी - 100 कहानी
महिला रचनाकार अंक / कहानी-संग्रह 1 – 25 कहानी.....74
महिला रचनाकार अंक / कहानी-संग्रह 2 – 25 कहानी.....76
महिला रचनाकार अंक / कहानी-संग्रह 3 – 25 कहानी.....78
महिला रचनाकार अंक / कहानी-संग्रह 4 – 25 कहानी.....80

हलचल
डॉ. अशोक द्विवेदी के औपन्यासिक-कृति 'वन्या' के लोकार्पण.....92
मनोज भावुक के "भोजपुरी सिनेमा के संसार" खातिर मिलल बेस्ट राइटर अवार्ड.....94

संपादकीय

मातृभाषा माने दिल के भाषा

भाव एक्के लेखा होला। भाषा नू अलग-अलग होला। पूरा दुनिया में लोग-बाग के एक्के लेखा दुख-सुख होला, चिंता-फिकिर होला, खीस-पीत बरेला। लोग एक्के लेखा हँसेला, रोवेला, गावेला, चीखे-चिल्लाला, तारीफ करेला, गरियावेला ... क्रिया-प्रतिक्रिया एक्के लेखा होला। बस, भाषा अलग-अलग होला।

आ जब कवनो औपचारिकता ना होला, मजबूरी ना होला, अपना आप से बात होला, अचेतन में बात होला, अचके में बात होला या दिल से कवनो बात निकलेला त ऊ मातृभाषा में निकलेला। साँच कहीं त मातृभाषा दिल के भाषा ह। अपना परिवार, समुदाय आ संस्कृति के भाषा ह। अपना धरोहर आ पहचान के भाषा ह।

मातृभाषा भा कवनो भाषा श्रेष्ठताबोध भा अहंकार खातिर नइखे बनल, बोले-बतियावे खातिर बनल बा, प्यार-व्यवहार खातिर बनल बा। कुछ लोग भाषा के आपन स्टेटस बना लेला। कुछ अंग्रेजी बोले वाला लोग देह टेढ़ क के चलेला। ओकरा लागेला जे, अंग्रेजी जाने वाला उच्च प्राणी आ अन्य लोग तुच्छ प्राणी। कुछ लोग एक-दूसरा के भाषा के आलोचना करत रहेला। कुछ लोग भाषा, उपभाषा आ बोली के लड़ाई में लागल रहेला जबकि होखे के ई चाहीं कि सब भाषा-बोली के अँकवार में भर के आगे बढ़ल जाय ताकि फुलवारी के कवनो फूल मुरझाय मत। सब भाषायी फूल खिले। कवनो भाषा मरे मत। विलुप्त मत होखे। सबका सम्मान मिले।

मातृभाषा अंक में भाषा आ बोली के विवाद से ऊपर उठके हमनी के सब मातृभाषा के स्वागत-सम्मान कइनी जा। सभ मातृभाषा के खुला आमंत्रण दिहल गइल रचना खातिर। जवना मातृभाषा के रचना ससमय मिलल, शामिल कइल गइल। जवना मातृभाषा के रचना रह गइल बा, आगे ओकरो के शामिल करे के कोशिश होई। मातृभाषा अंक में भाषा, उपभाषा या बोली के बाते नइखे। मातृभाषा के बात बा अउर भाषा-बोली के विवाद से इतर हमनी के जोर मातृभाषा सब के अधिकतम साहित्य संग्रह पर बा।

वक्त के नजाकत इहे बा कि अपना-अपना कमरा से बाहर निकलके आँगन में आवल जाय, आपस में संवाद कइल जाय, दुख-सुख बाँटल जाय, प्रेम बाँटल जाय।

एगो बात अउर... अवधी संविधान के आठवीं अनुसूची में शामिल नइखे लेकिन एह भाषा में रामचरित मानस लिखल गइल बा, जवन घर-घर में पूजल जाला। जब महाकवि तुलसीदास अवधी में रामचरित मानस लिखलें तबो विरोध भइल रहे, हल्ला भइल रहे, हेय दृष्टि से देखल गइल रहे। आजो मातृभाषा में भा कवनो बोली भा उपभाषा में लिखला पर कुछ गिरोहबाज लोग हुले लेले करत मिल जइहें। बाकिर सच्चा साधक के एह सबसे फर्क ना पड़ेला। ऊ गर्व आ सम्मान के साथ अपना मातृभाषा में लिखत रहेला। 'कवना भाषा में लिखत बानी' से ज्यादा महत्वपूर्ण बा कि 'का लिखत बानी'। तुलसी बाबा बहुत पहिले ई साबित कर चुकल बाड़ें।

'भोजपुरी जंक्शन' के मातृभाषा विशेषांक दू भाग में निकलल बा। ई भाग-2 ह। एह में अवधी, ब्रजभाषा, कन्नौजी, बुंदेलखंडी, छत्तीसगढ़ी, बघेली, कुमाउंनी, गढ़वाली, हरियाणवी आ राजस्थानी कहानी बा। भाग-1 में मैथिली, मगही, अंगिका, बज्जिका आ नागपुरी कहानी रहे। दू भाग में कुल पंद्रह गो मातृभाषा के 41 गो कहानी शामिल कइल गइल बा। चूंकि ई सब मातृभाषा हमरा थोड़-बहुत समझ में आवेला बाकिर लिखे-बोले ना आवेला त हर मातृभाषा से एगो अतिथि संपादक के जोड़ल गइल बा।

मातृभाषा अंक के संपादन आसान ना रहे। प्रत्येक मातृभाषा के अतिथि संपादक के साथे एक-एक कहानी पर घंटन टेलीफोनिक बातचीत भइल बा। हम हर कहानी में इनवॉल्व रहल बानी ताकि कवनो कहानी में स्थानीयता के वजह से बहुत बदलाव मत होखे। रचनाकार के भाषा आ स्थानीयता के सम्मान कइल गइल बा। अतिथि संपादक अउर कथाकार के बीच सामंजस्य बइठा के कहानी के संपादन कइल गइल बा। एह से कवनो सामान्य अंक से तिगुना मेहनत लागल बा एह अंक में। तरह-तरह के प्रतिक्रिया भी झेले-सुने के पड़ल बा बाकिर संतोष बा कि अनेक मातृभाषा के विदुषी कथाकार लोग के सक्रिय सहयोग से भोजपुरी जंक्शन के आँगन में एह तमाम मातृभाषा के स्वागत-सत्कार करे के सपना साकार भइल बा, सुख सुलभ भइल बा। हम सब लेखिका लोग के प्रति आत्मिक आभार व्यक्त करत बानी।

अब मातृभाषा अंक (भाग-1 आ भाग-2) रउरा सब के हवाले बा। जइसन सूझल-सँपरल कोशिश भइल। नीक बा कि जबून रउरा बताएम। कमी-बेसी रउरा बताएम। रउरा सभे के बेबाक प्रतिक्रिया के इंतजार में,

प्रणाम।
मनोज भावुक

महिला साहित्यकारन के 104 प्रकाशित भोजपुरी किताब

महिला साहित्यकार लोग के प्रकाशित भोजपुरी किताबन के सूची उपलब्ध करावे के कोशिश कइल जाता। एह अंक में 104 किताब के सूची आ कभर पेज प्रकाशित कइल जाता ताकि दुनिया के पता चले कि भोजपुरिया महिला साहित्यकार लोग केतना सक्रिय बा, कवना - कवना क्षेत्र में, कवना - कवना विधा में का- का लिख रहल बा । जेकरा रुचि जागी भा शोध करे के मन होई ऊ खोजी किताब, पढ़ी किताब । इहे सब सोच के किताबन के सूची दिहल जा रहल बा ।

महिला लोग के लिखल जे-जे किताब एह सूची में नइखे, अगर वोह किताब के विवरण आ कभर पेज के फोटो हमरा के भेजब त भविष्य में ओहू के एह लिस्ट में शामिल कर लिहल जाई। स्नेह - सहयोग अपेक्षित बा। - संपादक

दिवंगत पद्मश्री विंध्यवासिनी देवी के 2 गो भोजपुरी किताब

1- पद्मश्री विंध्यवासिनी देवी (लोक रामायण)
2- पद्मश्री विंध्यवासिनी देवी (ऋतुरंग)

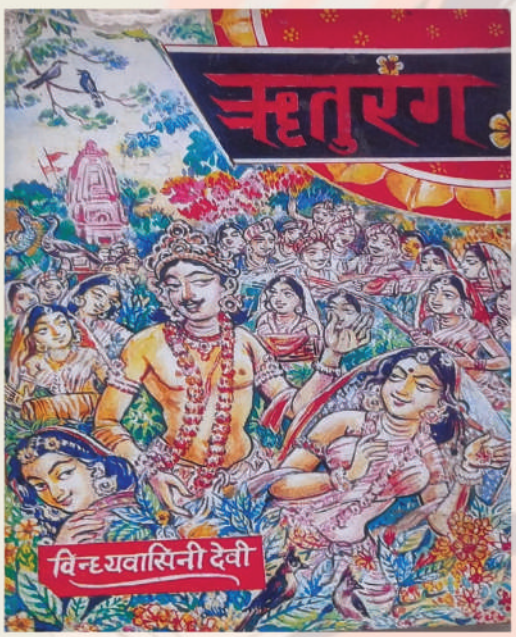

www.bhojpurisahityangan.com

दिवंगत डॉ. राजेश्वरी शाण्डिल्य के 15 गो भोजपुरी किताब

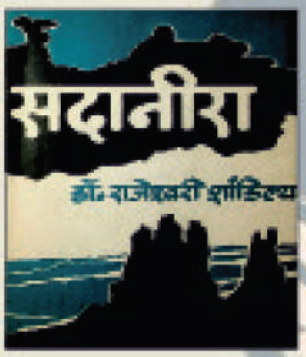

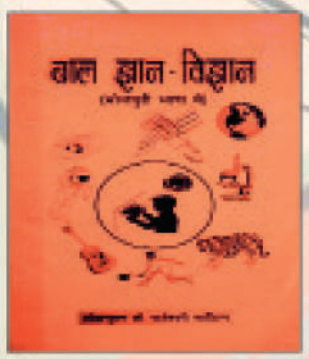

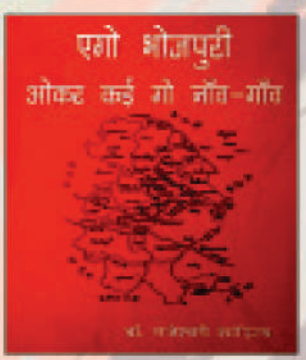

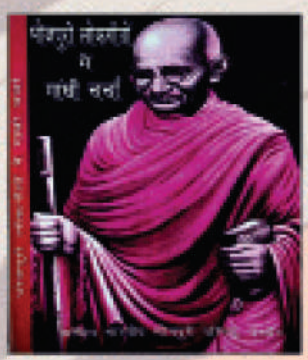

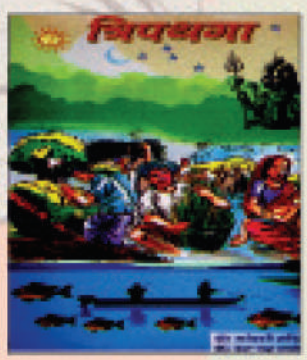

कुछ दिवंगत महिला साहित्यकारन के 14 गो भोजपुरी किताब

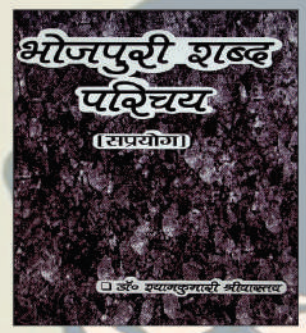

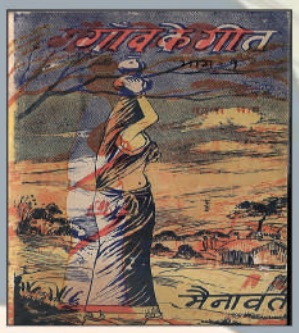

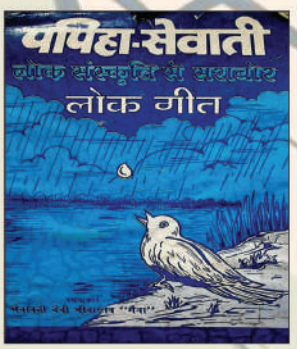

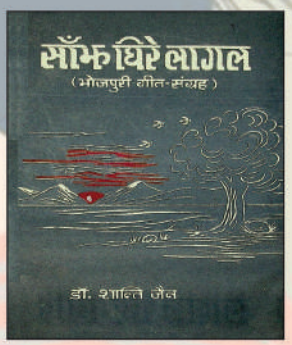

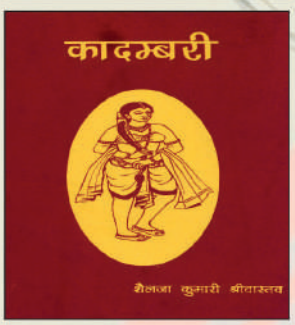

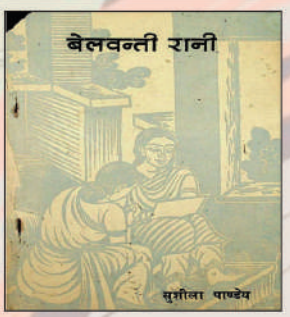

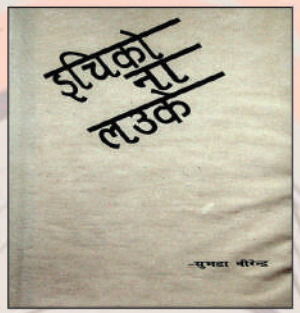

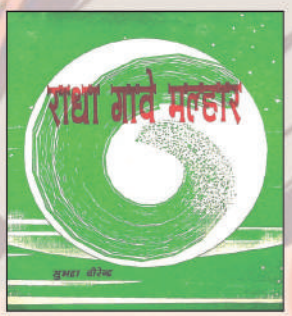

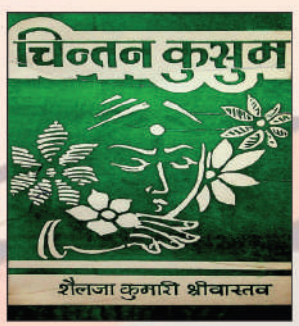

डॉ. आशारानी लाल के 12 गो भोजपुरी किताब

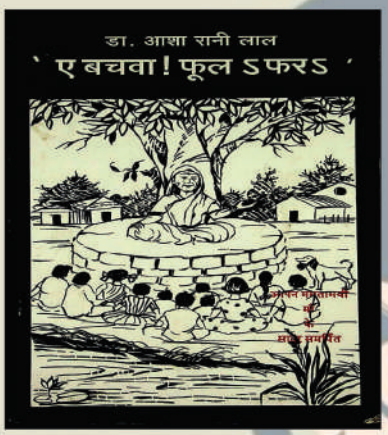

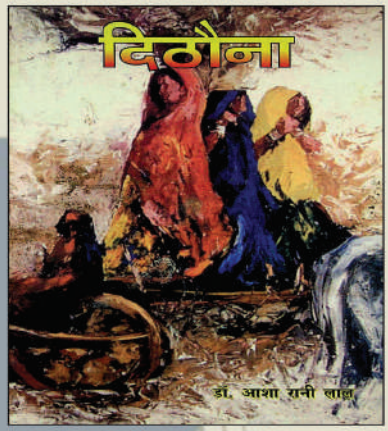

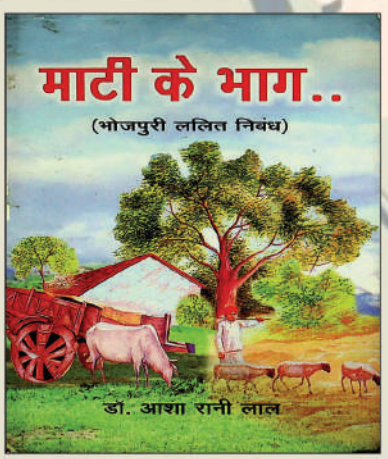

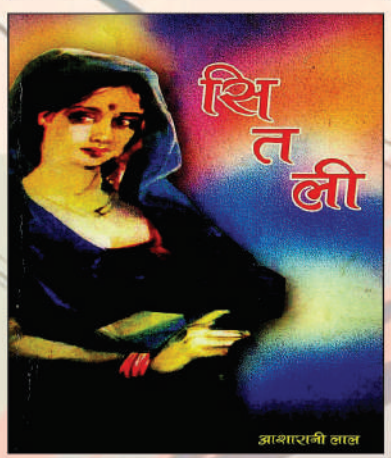

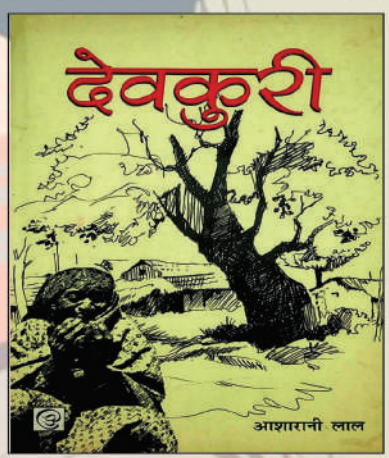

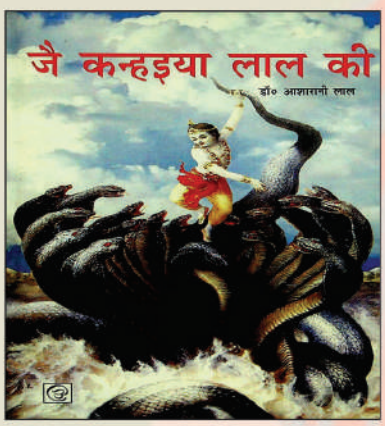

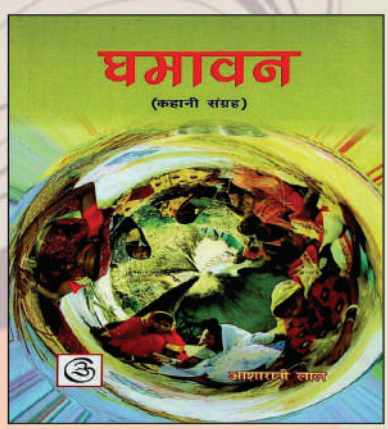

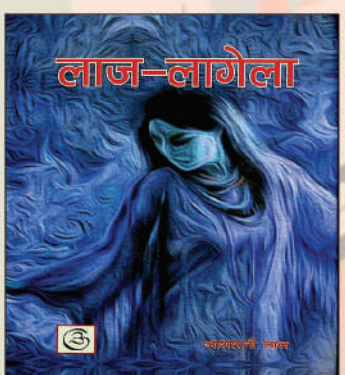

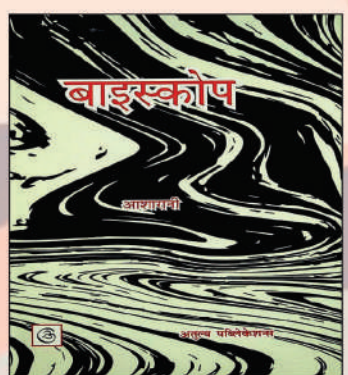

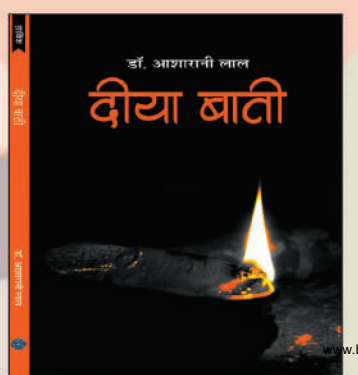

www.bhojpurisahityangan.com

डॉ. शारदा पांडेय के 7 गो भोजपुरी किताब

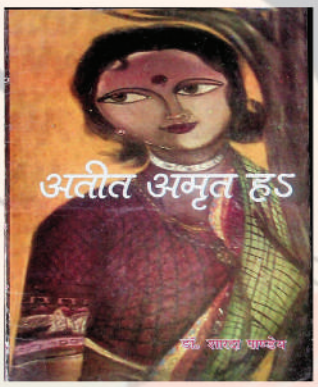

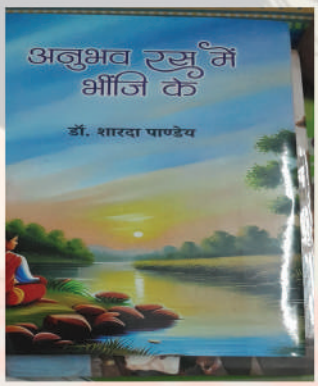

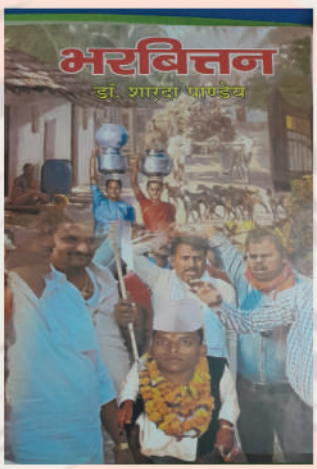

कुछ महिला साहित्यकारन के भोजपुरी किताब-1

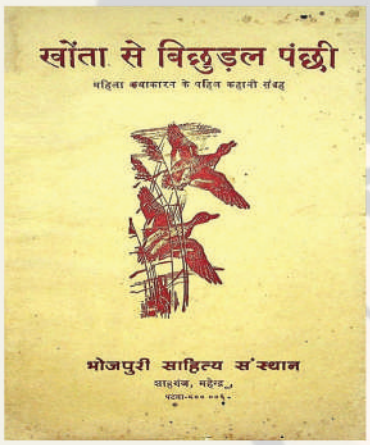

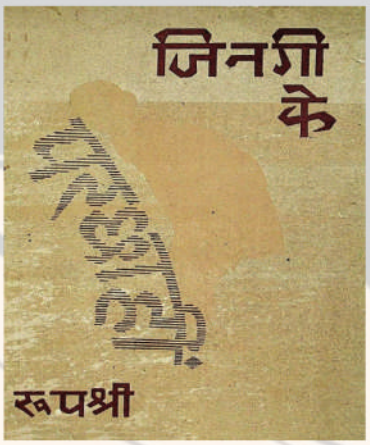

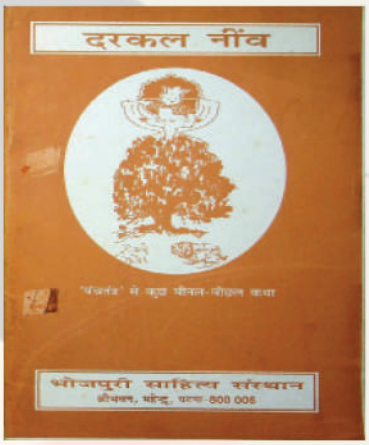

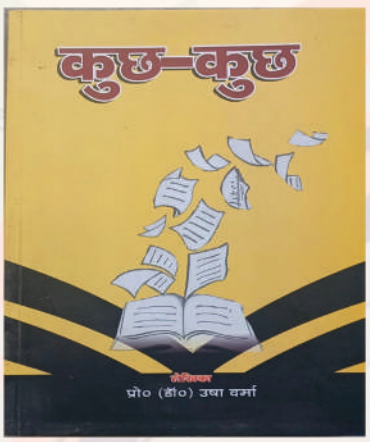

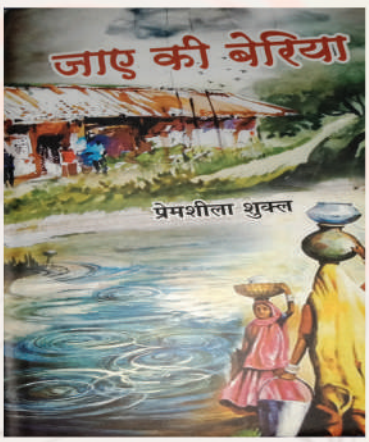

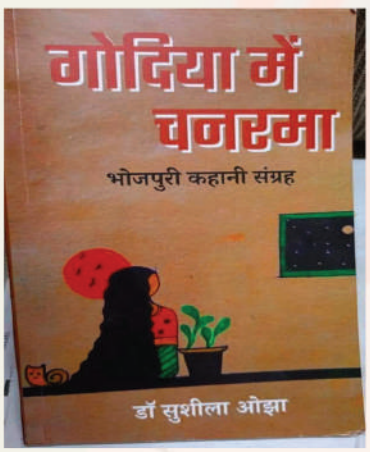

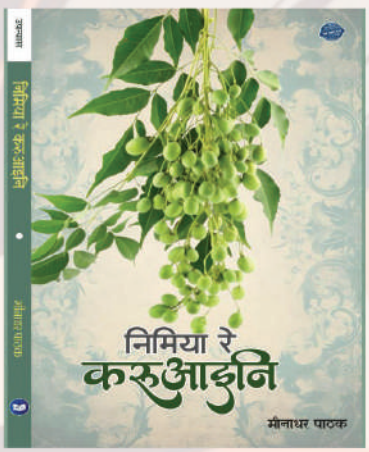

कुछ महिला साहित्यकारन के भोजपुरी किताब-2

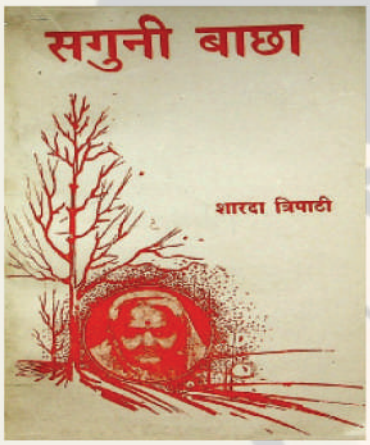

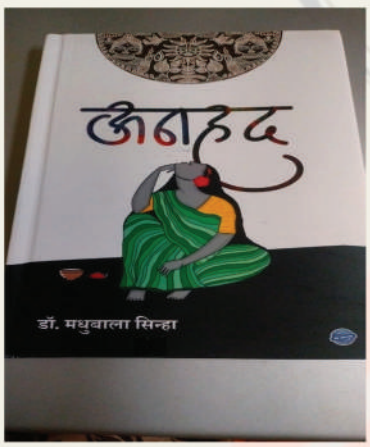

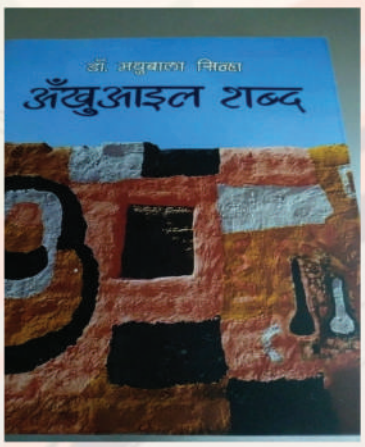

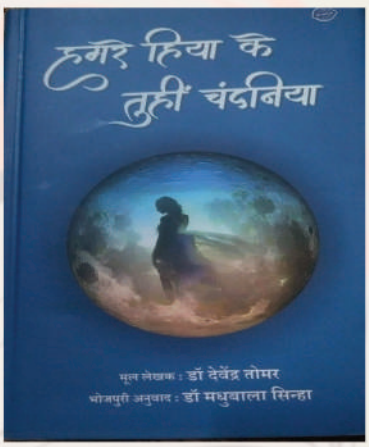

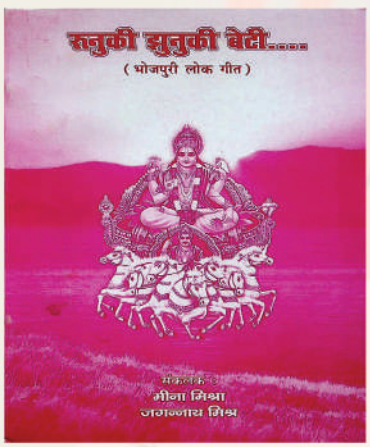

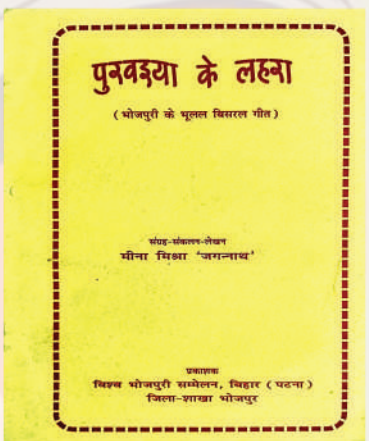

www.bhojpurisahityangan.com

कुछ महिला साहित्यकारन के भोजपुरी किताब-3

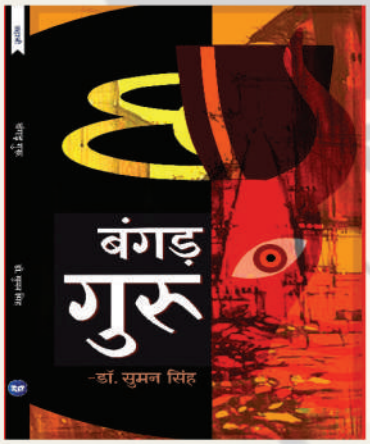

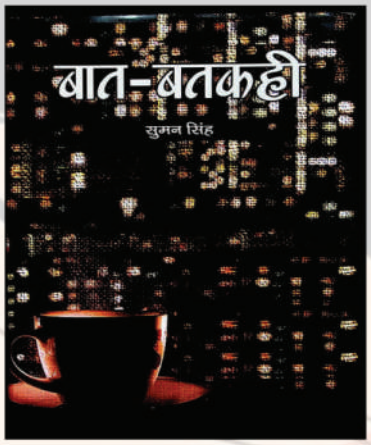

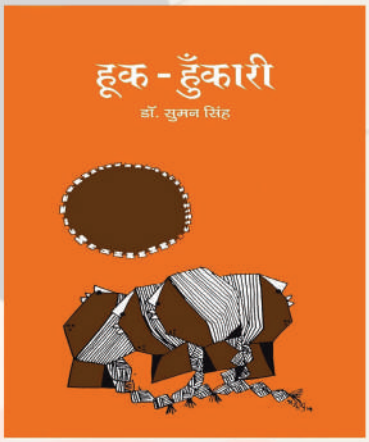

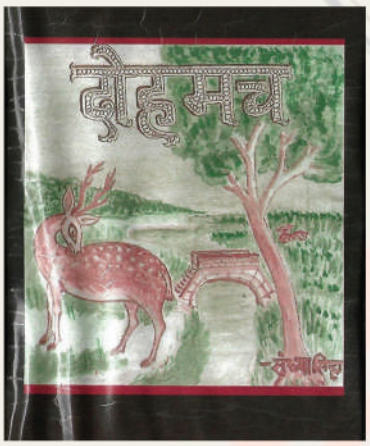

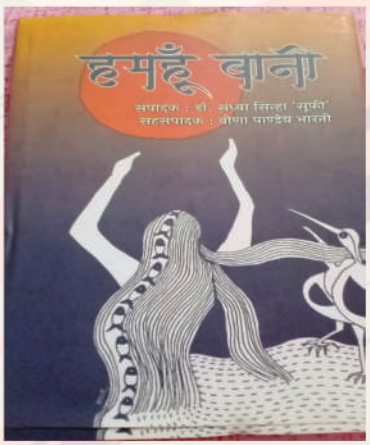

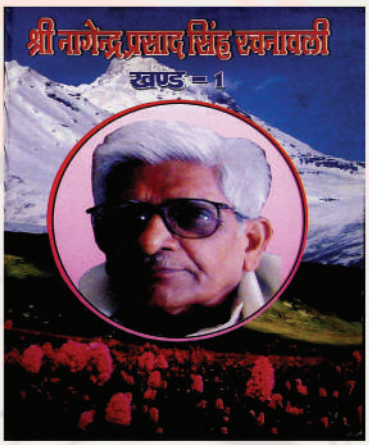

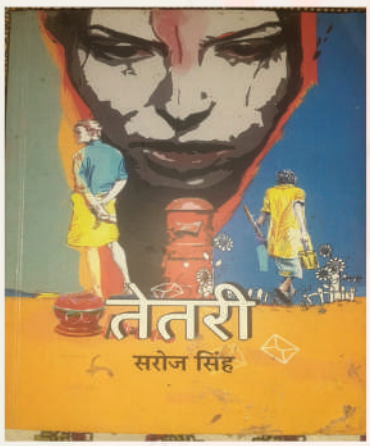

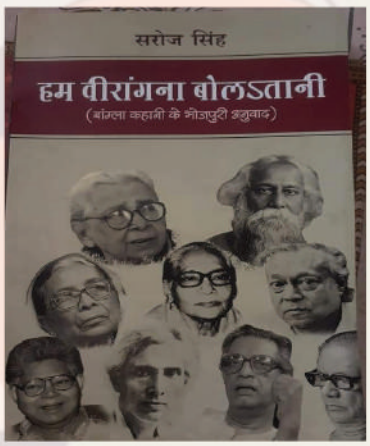

कुछ महिला साहित्यकारन के भोजपुरी किताब-4

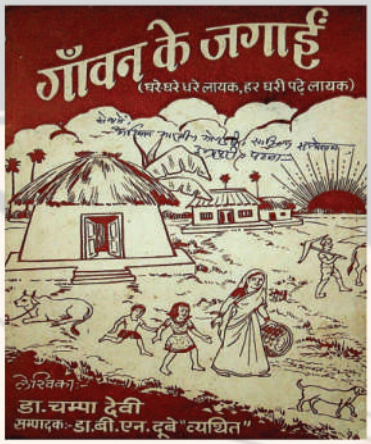

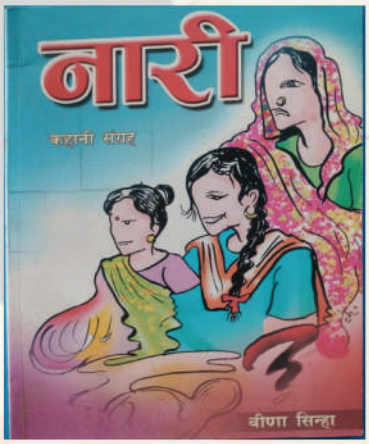

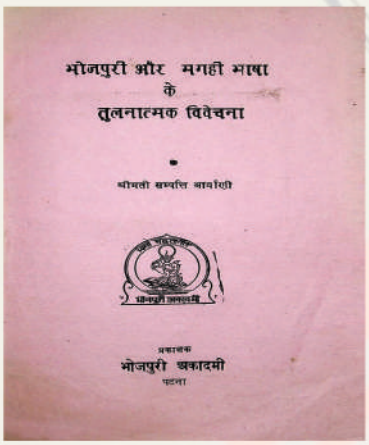

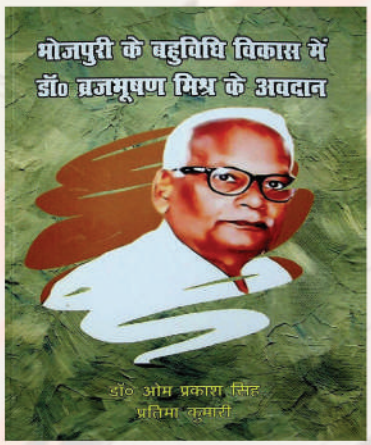

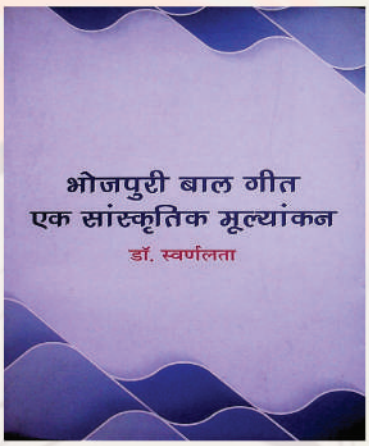

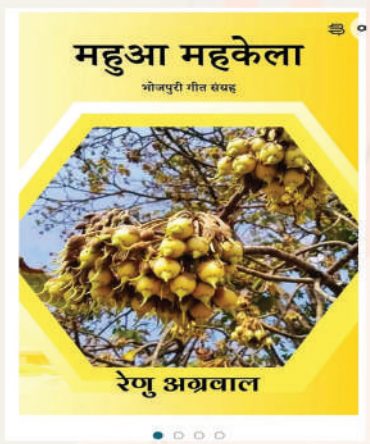

कुछ महिला साहित्यकारन के भोजपुरी किताब-5

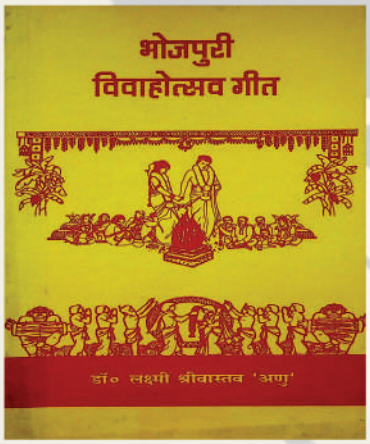

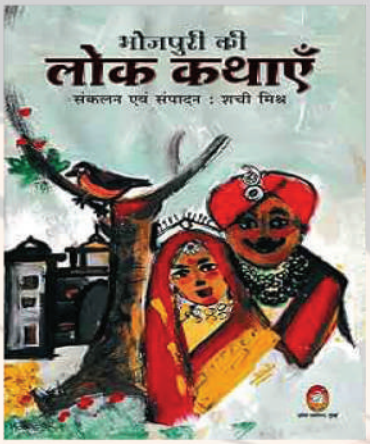

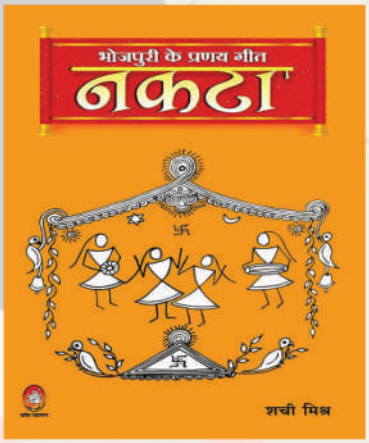

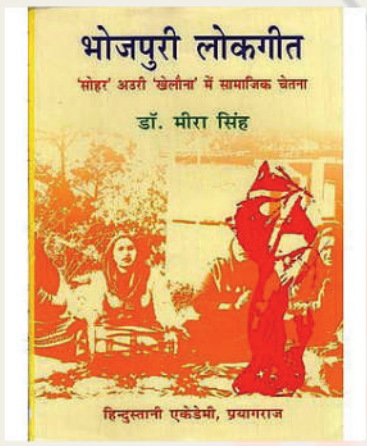

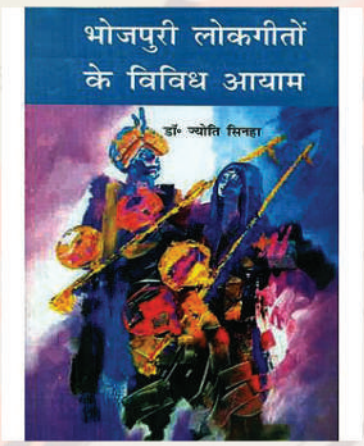

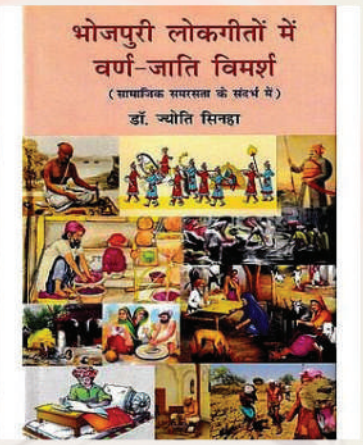

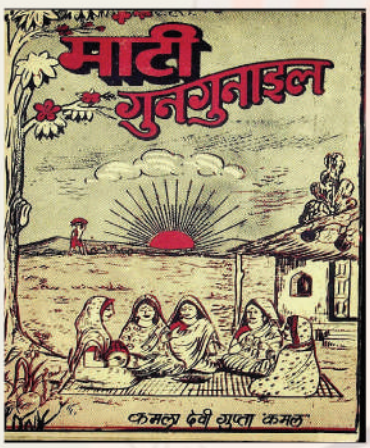

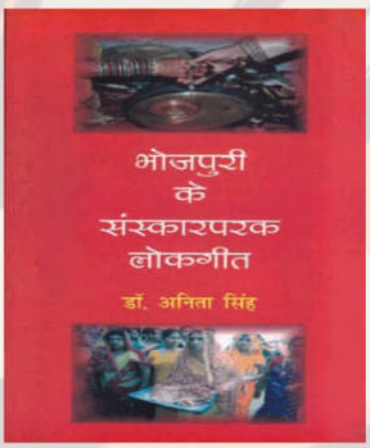

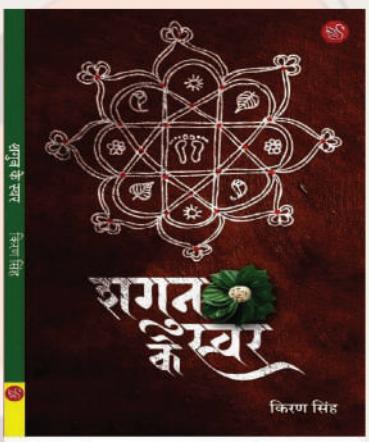

कुछ महिला साहित्यकारन के 9 गो भोजपुरी किताब

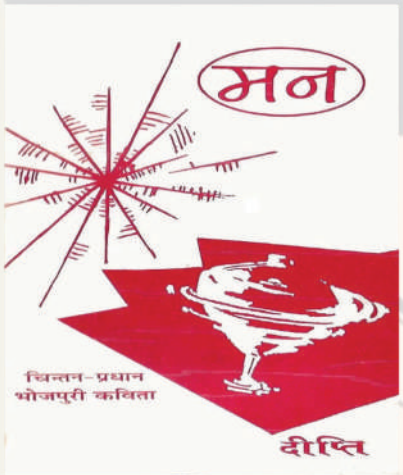

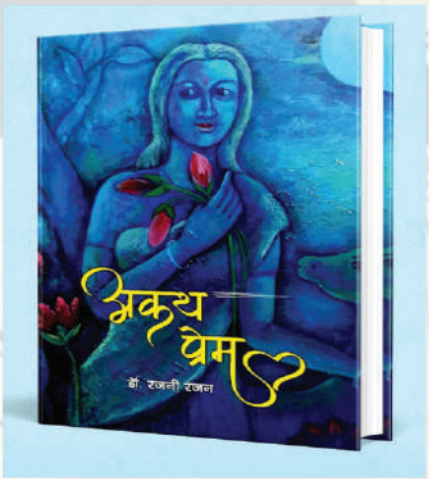

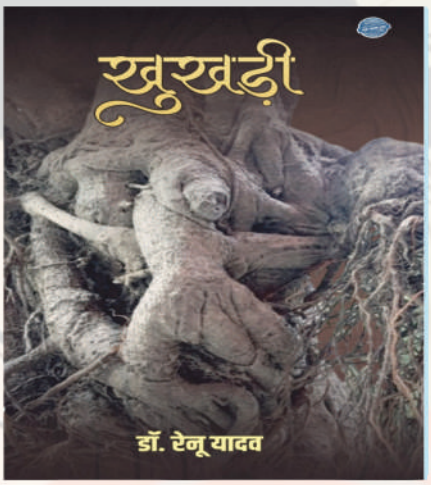

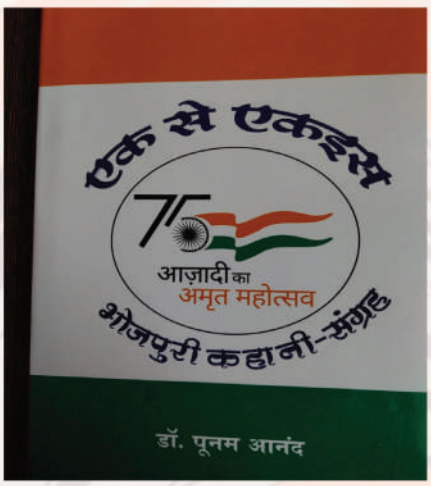

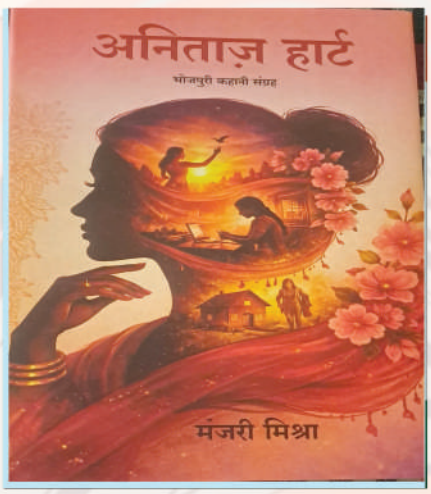

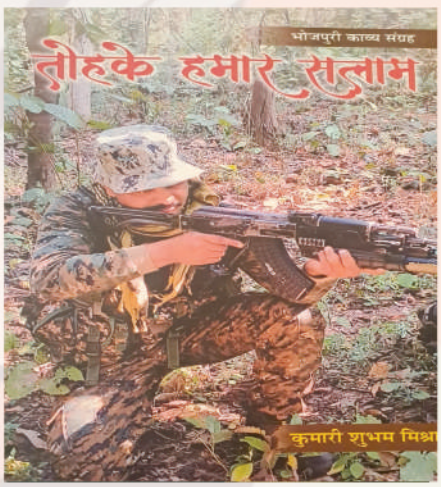

हम भोजपुरिआ के सफर

पढ़ीं भोजपुरी

लिखीं भोजपुरी

बोलीं भोजपुरी

हम भोजपुरिआ के सफर

पढ़ीं भोजपुरी

लिखीं भोजपुरी

बोलीं भोजपुरी

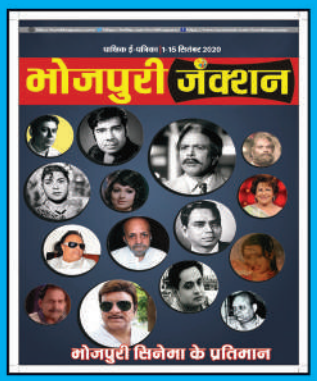

पाक्षिक ई-पत्रिका | 1-15 सितंबर 2020
भोजपुरी जंक्शन
भोजपुरी सिनेमा के प्रतिमान

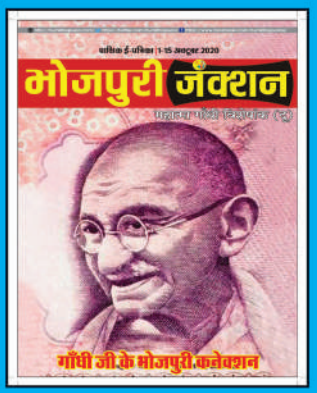

पाक्षिक ई-पत्रिका 16-30 सितंबर 2020
भोजपुरी जंक्शन
बम्बई
भोजपुरी सिनेमा के कलाकार

पाक्षिक ई-पत्रिका | 1-15 अक्टूबर 2020
भोजपुरी जंक्शन
गाँधी जी के भोजपुरी कनेक्शन

पाक्षिक ई-पत्रिका | 16-31 अक्टूबर 2020
भोजपुरी जंक्शन
लोक परंपरा
में माई

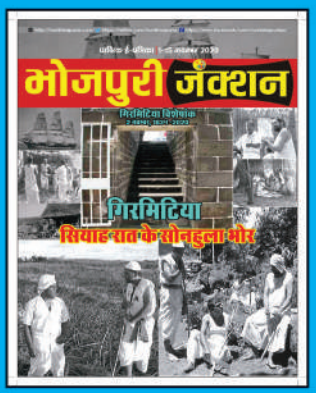

भोजपुरी जंक्शन
गिरमिटिया विशेषांक
गिरमिटिया
सियाह रात के सोनहुला भोर

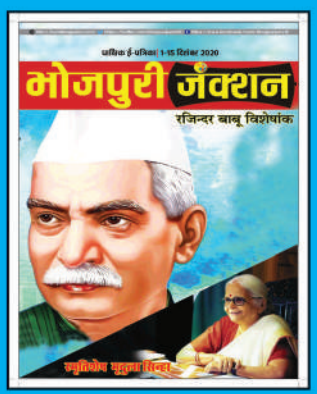

भोजपुरी जंक्शन
दिवरी-बाती अउर छठ विशेषांक
उगी हे दीनानाथ...

पाक्षिक ई-पत्रिका | 1-15 दिसंबर 2020
भोजपुरी जंक्शन
रजिन्दर बाबू विशेषांक

2021
पाक्षिक ई-पत्रिका | 16-31 दिसंबर 2020
भोजपुरी जंक्शन
भईया के मुँह से फूटे संगीत
भउजी के कंगना से खनके ताल
अखिल विश्व में सभे रहे खुशहाल
शुभ हो, मंगलमय हो नयका साल

पाक्षिक ई-पत्रिका | 1-15 जनवरी 2021
भोजपुरी जंक्शन
गाँव से खिचड़ी लाइव

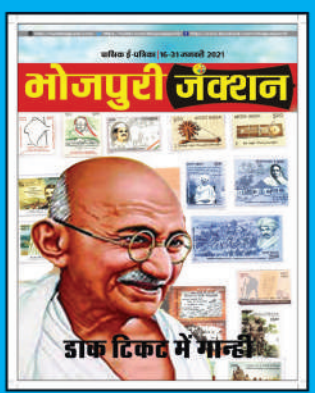

पाक्षिक ई-पत्रिका | 16-31 जनवरी 2021
भोजपुरी जंक्शन
डाक टिकट में गान्ही

भोजपुरी जंक्शन
कोरोना विशेषांक
...ताकि सनद रहे

पाक्षिक ई-पत्रिका | 1-15 मार्च 2021
भोजपुरी जंक्शन
एगो कोरोना रहे...

भोजपुरी जंक्शन
होली विशेषांक
फगुनाहट हs कि कोरोनाहट

भोजपुरी जंक्शन
चइता विशेषांक
हम काटब गेहूं
गोरी कटिहऽ तू मुसुकी

भोजपुरी जंक्शन
कोरोना काल
का आदमी के आदमी बना सकी ?

भोजपुरी जंक्शन
कोविड से बेसी
'सोविड' के जरूरत बा

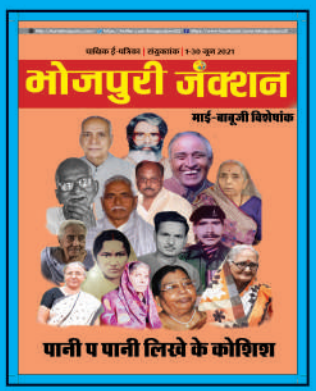
भोजपुरी जंक्शन
माई-बाबूजी विशेषांक
पानी प पानी लिखे के कोशिश

भोजपुरी जंक्शन
माई-बाबूजी विशेषांक
काहे खातिर फादर्स डे
काहे खातिर मदर्स डे

भोजपुरी जंक्शन
सुंदर सुभूमि भइया भारत के देसवा से

भोजपुरी जंक्शन
सुनीं सभे
समसामयिक मुद्दन पर
विचार मंथन

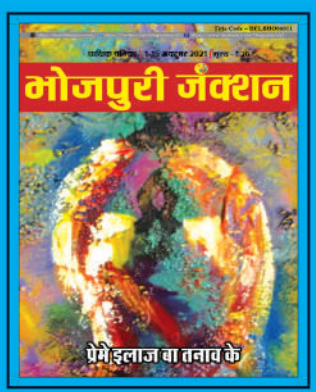
भोजपुरी जंक्शन
प्रेमे इलाज बा तनाव के

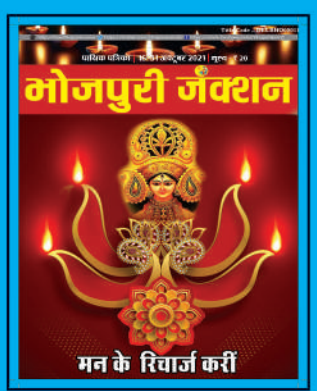
भोजपुरी जंक्शन
मन के रिचार्ज करीं

भोजपुरी जंक्शन
संस्मरण विशेषांक
अनुभव के अँटिया ह संस्मरण

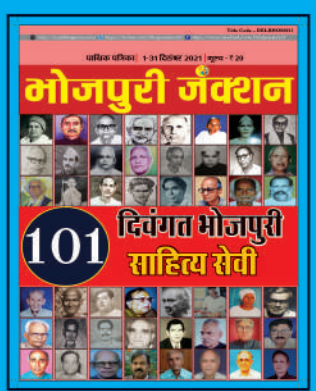
भोजपुरी जंक्शन
101
दिवंगत भोजपुरी
साहित्य सेवी

भोजपुरी जंक्शन
जिनगी संभावना ह, समस्या ना

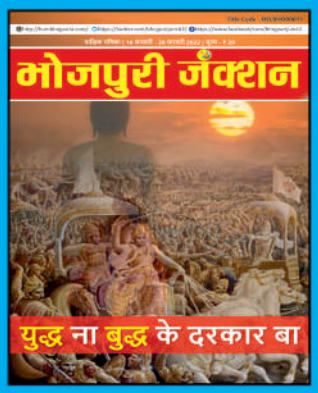

भोजपुरी जंक्शन
युद्ध ना बुद्ध के दरकार बा

भोजपुरी जंक्शन
रूस-यूक्रेन युद्ध विशेषांक
जिंदगी युद्ध ना उत्सव ह

भोजपुरी जंक्शन
भोजपुरी के गौरव विशेषांक (भाग - 1)

भोजपुरी जंक्शन
संपादकीय विशेषांक
ए हो रामा !
हम भोजपुरिआ | भोजपुरी जंक्शन | 62 अंक

भोजपुरी जंक्शन
जन्म-मृत्यु विशेषांक
कवनो
ठगवा
नगरिया
लूटल हो
- कबीर

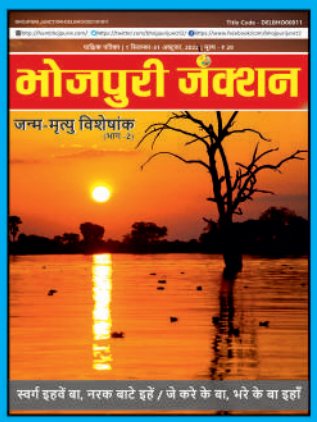

भोजपुरी जंक्शन
जन्म-मृत्यु विशेषांक
स्वर्ग इहवें बा, नरक बाटे इहें / जे करे के बा, भरे के बा इहीं

भोजपुरी जंक्शन
समीक्षा विशेषांक
(भाग -1)
ऑपरेशन थियेटर में भोजपुरी लेखन
भोजपुरी सिनेमा के संसार

भोजपुरी जंक्शन
समीक्षा विशेषांक
(भाग-2)
रोज रात समीक्षा, रोज सुबह उत्सव
भोजपुरी सिनेमा के संसार

भोजपुरी जंक्शन
समीक्षा विशेषांक
(भाग-3)
समीक्षा रचना के पुनर्सृजन ह
भोजपुरी सिनेमा के संसार

भोजपुरी जंक्शन
किसान कवितावली
(भाग-1)
62 कवि
62 कविता
कब होई किसान बनला पर छाती उतान ?

भोजपुरी जंक्शन
समीक्षा विशेषांक
(भाग-4)
बुझेली चिलम जेकरा पर चढ़ेला अँगारी
भोजपुरी सिनेमा के संसार

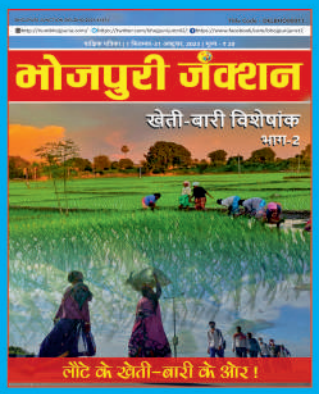
भोजपुरी जंक्शन
खेती-बारी विशेषांक
भाग-2
लौट के खेती-बारी के ओर !

भोजपुरी जंक्शन
खेती-बारी विशेषांक
भाग-3
छठी महया के अर्पित खेती-बारी अंक

भोजपुरी जंक्शन
खेती-बारी विशेषांक
भाग-4
MILLETS
2023
आबाद रहे हरदी-धान

भोजपुरी जंक्शन
राम विशेषांक
500 बरिस
के इंतजार...
6 दिसम्बर 1992
के ऊ दिन...
राम रसायन तुम्हरे पासा

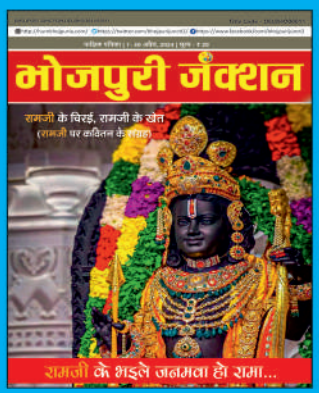
भोजपुरी जंक्शन
रामजी के चिरई, रामजी के खेत
(रामजी पर कविता के संग्रह)
रामजी के भइले जनमता हो रामा...

भोजपुरी जंक्शन
महिला रचनाकार अंक
कहानी-संग्रह (भाग-1)
नारी-चेतना के प्रणाम !

भोजपुरी जंक्शन
महिला रचनाकार अंक
कहानी-संग्रह (भाग-2)
स्त्री के खुदबयानी
कहानी में जिंदगी : जिंदगी में कहानी

भोजपुरी जंक्शन
महिला रचनाकार अंक
कहानी-संग्रह (भाग-3)
स्त्री : पुरुष के सहभागिनी, सहधर्मिणी आ सहचारिणी

भोजपुरी जंक्शन
महिला रचनाकार अंक
कहानी-संग्रह (भाग-4)
जइसन मन, ओइसन कहानी

भोजपुरी जंक्शन
महिला रचनाकार अंक-5 / कहानी संग्रह
मातृभाषा विशेषांक (भाग-1)
मातृभाषा के कवनो विकल्प नइखे

भोजपुरी जंक्शन
महिला रचनाकार अंक-6 / कहानी संग्रह
मातृभाषा विशेषांक (भाग-2)
मातृभाषा माने दिल के भाषा

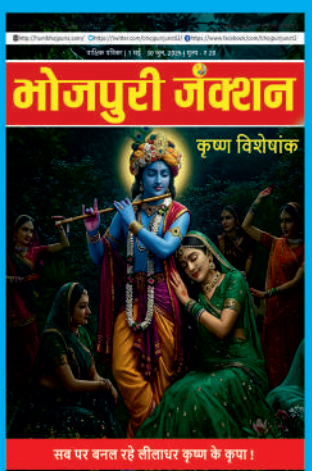
भोजपुरी जंक्शन
कृष्ण विशेषांक
सब पर बनल रहे लीलाधर कृष्ण के कृपा !

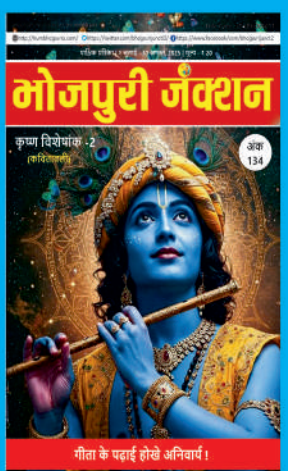
भोजपुरी जंक्शन
कृष्ण विशेषांक -2
अंक
134
गीता के पढ़ाई होखे अनिवार्य !

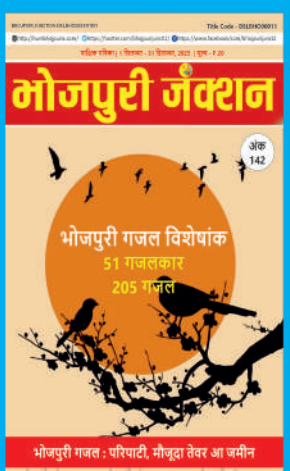
भोजपुरी जंक्शन
अंक
142
भोजपुरी गजल विशेषांक
51 गजलकार
205 गजल
भोजपुरी गजल : परिपाटी, मौजूदा तेवर आ जमीन

राउर पाती

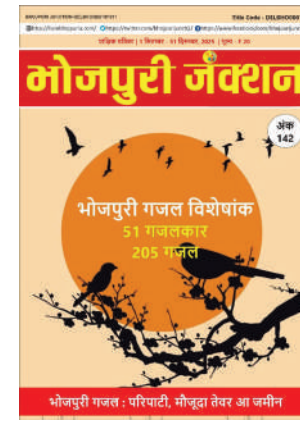

कबीरी फन बा तोहरा लगे

गीत गजल के कवि रूप में चर्चित, प्रशंसित मनोज भावुक एगो श्रेष्ठ संपादक, गद्यकार आ विमर्शकारो हउवन, अब ई अलगा से बतावे क जरूरत नइखे। बाबू! तोहार सोच, विचार आ चिन्तन जवना तरह क भाषिक संरचना में ढल के आ रहल बा, ऊ ओ विषय के शिद्दत से जियले बिना नइखे आ सकत। ई कबीरी फन बा तोहरा लगे जवन सृजन खातिर बेपरवाह फकीरी से आइल बा। ईहे बनल रहो। मंगल होखे। संपादकीय बहुत बढ़िया बा। बधाई।

डॉ. कमलेश राय, मऊ, उत्तर प्रदेश

सारगर्भित आ सार्थक अंक

देर से सही, बाकिर बेहतरीन विशेषांक। संपादकीय सारगर्भित आ सार्थक। गजलो एक से बढ़िके एक। राउर मेहनत साफ झलकत बा। हमार दिल से बधाई आ अनघा शुभकामना!

भगवती प्रसाद द्विवेदी, पटना

महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक कार्य

सुकवि मनोज भावुक के संपादन में 'भोजपुरी जंक्शन' का गजल विशेषांक आया है, जिसमें 51 गजलकारों की 205 भोजपुरी गजलें संकलित हैं। इसमें मेरी भी पाँच गजलें हैं। इस अत्यंत महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक कार्य के लिए मनोज भावुक को हार्दिक बधाई।

प्रोफेसर वशिष्ट अनूप, बीएचयू, वाराणसी

शानदार संपादकीय

रउवा दु पन्ना में भोजपुरी गजल के इतिहास, भूगोल, समाजशास्त्र सब समझा देनी। बहुत शानदार संपादकीय। बहुत बधाई आ शुभकामना।

डॉ. राजीव रंजन राय, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र, दिल्ली

बेहतरीन काम भइल बा

फेसबुक पर राउर वॉल पर भोजपुरी जंक्शन के गजल विशेषांक के सम्पादकीय पढ़े के अवसर मिलल। बेहतरीन काम भइल मनोज जी! राउर लिखल संपादकीय तऽ सोना पर सोहागा बा। पढ़ के अप्पन लिखल एगो मुक्तक याद आ गइल :-

बहरों के वजन भर से गजल तो हो नहीं जाती,
मतला काफिया कहकर गजल तो हो नहीं जाती,
गजल की रूह होती है ज़िगर का खूँ थिरकता है,
गजल का नाम देने से गजल तो हो नहीं जाती।

बहुत बहुत बधाई।

जय राम सिंह, मुम्बई

जतना काम अभी ले हो गइल बा, ऊ कम नइखे

प्रिय भावुक जी,

गजल अंक मिलल। एमें संपादक के मेहनत, त्याग आ तप, भोजपुरी का प्रति निष्ठा आ समर्पण सबकुछ के झलक आ जाता। जतना काम अभी ले हो गइल बा, ऊ कम नइखे।

बहुत बहुत बधाई आ शुभकामना।

सूर्यदेव पाठक पराग, लखनऊ

बहुत बढ़िया अंक

राउर संपादन कार्य बहुते सराहनीय बा। भोजपुरी जंक्शन के हाल के सभे अंक निश्चय ही संग्रहणीय आ मूल्यवान बा। विशेष रूप से ई गजल अंक अतुलनीय बा।

हमार हार्दिक बधाई आ शुभकामनाएँ स्वीकार करीं। आभार भी।

हिमकर श्याम, राँची

अविस्मरणीय कार्य

श्री मनोज भावुक भाई,

सबसे पहिले त एह ऐतिहासिक आ भोजपुरी साहित्य (विशेष रूप से गजल) के विकास ला अविस्मरणीय कार्य खातिर हार्दिक बधाई स्वीकार करीं। एकरा बाद हम निश्चित रूप से एह के पढ़के समीक्षात्मक लेख भेजब।

गोपाल अश्क, नेपाल

गजल के कुम्भ

दिग्गज लोग के साथे विषय सूची में आपन नाम देख के अच्छा लगत बा। राउर मेहनत के प्रणाम बा। जइसे कुंभ में हीत मीत मिल जाला वैसही ई गजलकार लोग के कुंभ ही बा जेमे सगा चाचा भतीजा के मिलन भइल... उहां के समुंद्र हईं जेकर लहर के हमन के नजदीक से बइठ के देखे के मिलेला आ आशीर्वाद भी कि छिछलहर नदी एक दिन समुद्र बनो।

अतुल कुमार राय, मऊ

छपलो संस्करण आइत त केतना नीक होइत

'भोजपुरी जंक्शन' के भोजपुरी गजल विशेषांक सचहूँ बहुत गोटरगर बा। संपादकीय में एह विशेषांक से पहिले भोजपुरी पत्रिकन के गजल विशेषांकन के जिकिर के माध्यम से भोजपुरी गजल-यात्रा के जानकारी साझा कइल गइल बाटे। एकरा संगहीं गजल विधा के कथ्य आ शिल्प पऽ गंभीरता से विचार के आग्रह संपादक जी कइले बानीं।

सुग्घर आ दमगर गजलन के जुटावल आ छाँटल-बरावल आसान ना रहल होखी बाकिर संपादक श्री मनोज भावुक भाई एह काम के हड़बड़ी में ना, थिर होके कइले बानीं। एह भोजपुरी गजल विशेषांक में हमरो पाँचि गो गजलन के सहेजल गइल बा। एह भोजपुरी गजल विशेषांक खातिर संपादक श्री मनोज भावुक जी के बेर-बेर बधाई! हिरदया से बधाई आ साधुवाद। केतना नीक होइत की एह भोजपुरी गजल विशेषांक के डिजिटल संस्करण के साथे-साथे, तनी-मनी आगा-पाछा छपलो संस्करण भी समने आ जाइत। तनी हाथ में लेके, पन्ना उलटि-पलटि के पढ़ल जात तऽ जियरा अउर जुड़ात! श्री मनोज भावुक जी से चिरौरी बा की भोजपुरी गजल विशेषांक के कागद पऽ छपल संस्करण भी ले आवे के जुगत लगाईं।

शिव कुमार पराग, वाराणसी

अनघा आभार

भोजपुरी के पहरुआ आ साफ सुथरा एगो नाम आदरणीय मनोज भावुक जी के सम्पादन में 'भोजपुरी जंक्शन' के गजल विशेषांक में एह बेर हमरो दुइ गो गजल पढ़ीं सभे...हमरा के अपना पत्रिका में स्थान देबे खातिर अनघा प्रणाम आभार।

सोनी सुगंधा, जमशेदपुर

अथक परिश्रम के परिणाम

भोजपुरी जंक्शन गजल संग्रह हमनी के मिल गइल बाटे। ई मनोज भैया के अथक परिश्रम के परिणाम ह कि एक साथे हमनी के 51 गो गजलकार लोग के 205 गो गजल पढ़े के मिल रहल बाटे। भैया के हृदय से बधाई आ धन्यवाद।

डॉ. कादम्बिनी सिंह, बलिया

दिल के करीब

शायद मनोज भावुक के दिल के बहुत करीबी बात बा कि अतना सुंदर संपादकीय भी लिखाइल बा। ई गजल विशेषांक संग्रह करे जोग बा।

प्रोफेसर पी राज सिंह, छपरा

अन्य भाषा के सामने अगहर बनावे में कौनो कोर कसर नइखीं छोडले

बहुत बहुत धन्यवाद अऊर बधाई बा मनोज भावुक जी के, जे अतना बढ़िया भूमिका देके एक से बढ़के एक नया अऊर पुरनकठ गजल के श्रृंखला लेकर के उपस्थित बानी, जेह में बहुयात मात्रा में गजल के एकठ्ठा करके एक जगे समेटल बा।

मनोज जी के जतना भी बड़ाई कइल जाई ऊ कमे मानल जाई। भोजपुरी गजल विधा के एह सोशल मिडिया के प्लेटफॉर्म पर लाकर के उहाँ के भोजपुरी भाषा के अन्य भाषा के सामने अगहर बनावे में कौनो कोर कसर नइखीं छोडले। मनोज जी के बड़का खाँचा से भर भर के अनघा बधाई बा।

रवींद्र कुमार सिंह रोहतासवी, बिहार

भोजपुरी गजल के दिसाईं बहुते सार्थक प्रयास

मनोज भावुक के शुभकामना आ बधाई।

अइसने प्रयास जारी रहो, भोजपुरी के विकास एही कुल्ह से होई। आपन ज्ञान बघरला से बेसी दोसर लोग के अरजल ज्ञान के समेटल भोजपुरी के विकास यात्रा में जियादे जरूरी बा। ऊहो लोग गजल पर आपन ज्ञान देबे लागत बा, जेह लोग के खूदे गजल पर कवनो जानकारी नइखे। अइसना से भोजपुरी के नोकसान होई।

मनोज जी! भोजपुरी गजल के दिसाईं ई एगो बहुते सार्थक प्रयास बा। जय भोजपुरी!

सुनील कुमार तंग, सिवान

करामती अंक

एह श्रमसाध्य करामती अंक खातिर आपके आउर आपके सहयोगी जन क बार-बार अभिनंदन। साधुवाद।

शशि प्रेमदेव सिंह, बलिया

भोजपुरी आंदोलन

भोजपुरी खातिर समर्पित भोजपुरी जंक्शन पत्रिका भोजपुरी आंदोलन के आंदोलित करे में बहुत कारगर साबित होई। बाबू मनोज जी के बहुत बधाई।

सुभाष चंद्र यादव, गोरखपुर

सही प्रयोगशाला

धन्यवाद मनोज भावुक जी के, अपना भाव के प्रयोग सही प्रयोगशाला में करत रहीं। एतना गजल एक जगह मिल गइल अच्छा लगता।

मंजूश्री, गोपालगंज

बेशकीमती खजाना

भोजपुरी के एह बेशकीमती खजाना के सामने लावे खातिर साधुवाद।

दिनेश पांडेय, पटना

✷✷✷

www.bhojpurisahityangan.com

मनोज भावुक के किताब 'भोजपुरी सिनेमा के संसार' : लोकार्पण आ सम्मान

बीएचयू / लोकार्पण
वाराणसी 13 सितम्बर 2025

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय (बीएचयू) के भोजपुरी अध्ययन केंद्र के शृंखला 'किताब के बात' के तहत साहित्यकार आ शोधकर्ता मनोज भावुक के किताब 'भोजपुरी सिनेमा के संसार' के लोकार्पण राहुल सभागार में संपन्न भइल। कार्यक्रम के शुरूआत केंद्र के समन्वयक प्रभाकर सिंह के स्वागत भाषण से भइल।

मैथिली-भोजपुरी अकादमी, दिल्ली से प्रकाशित ई किताब भोजपुरी भाषा में भोजपुरी सिनेमा के इतिहास पर लिखल पहिल शोधपरक कृति ह। प्रो. धीरेन्द्र कुमार राय एह किताब के भोजपुरी समाज, संस्कृति आ सिनेमा के विकास यात्रा के महत्त्वपूर्ण दस्तावेज बतवलें। लेखक मनोज भावुक कहलें कि ई किताब उनकर तीन दशक के शोध आ अनुभव के निचोड़ बा। विश्वमौलि एकरा के आवे वाला पीढ़ी खातिर ऐतिहासिक संदर्भ-ग्रंथ बतवलें। कार्यक्रम के संचालन शोध छात्रा शिवांगी सिंह कइली।

वीकेएसयू / लोकार्पण
आरा 14 अक्टूबर 2025

वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय के भोजपुरी विभाग में 'भोजपुरी सिनेमा के संसार' के लोकार्पण पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. रविन्द्र नाथ राय, प्रो. अयोध्या प्रसाद उपाध्याय, प्रो. डॉ. नीरज सिंह, विभागाध्यक्ष प्रो. दिवाकर पांडेय आ वरिष्ठ साहित्यकार जितेंद्र कुमार के हाथे भइल।

प्रो. दिवाकर पांडेय एह किताब के भोजपुरी सिनेमा के इतिहास लेखन के महत्त्वपूर्ण कृति आ शोधार्थियन खातिर आधार-ग्रंथ बतवलें। प्रो. रविन्द्र नाथ राय एकरा के मनोज भावुक के दीर्घ साधना के परिणाम कहलें, जबकि प्रो. नीरज सिंह उनकर व्यक्तित्व में प्रेम, प्रतिभा आ परिश्रम के सुंदर समन्वय बतवलें। जितेंद्र कुमार एह अवसर पर 'चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह सम्मान' के घोषणा के जानकारी दिहलें। कार्यक्रम के अध्यक्षता प्रो. अयोध्या प्रसाद उपाध्याय कइलें।

पुरस्कार
चौधरी कन्हैया सिंह सम्मान

मनोज भावुक के किताब 'भोजपुरी सिनेमा के संसार' के अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन द्वारा 'चौधरी कन्हैया सिंह सम्मान' से सम्मानित कइल गइल। ई सम्मान अमनौर (छपरा, बिहार) में आयोजित संस्था के 28वाँ अधिवेशन में बिहार सरकार के पर्यटन आ कला-संस्कृति मंत्री अरुण शंकर प्रसाद के हाथे प्रदान कइल गइल। एह कार्यक्रम में मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी, सांसद मनोज तिवारी, अभिनेत्री अक्षरा सिंह, कल्पना पटवारी सहित अनेक साहित्यकार, कलाकार आ भोजपुरी विद्वान शामिल रहलें।

दिल्ली प्रेस से सम्मान
10 अप्रैल 2025, इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान, लखनऊ

दिल्ली प्रेस द्वारा 'भोजपुरी सिनेमा के संसार' खातिर मनोज भावुक के बेस्ट राइटर अवार्ड से सम्मानित कइल जा चुकल बा। गौरतलब कि दिल्ली प्रेस भारत के सबसे बड़ पत्रिका प्रकाशन गृह में से एक बा। ई हिंदी, अंग्रेजी सहित 10 भाषा में 36 से अधिक लोकप्रिय पत्रिका प्रकाशित करेला। 'सरस सलिल भोजपुरी सिने अवार्ड्स 2025' में ई सम्मान दीहल गइल। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रहलें उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक जी।

किताब के बारे में

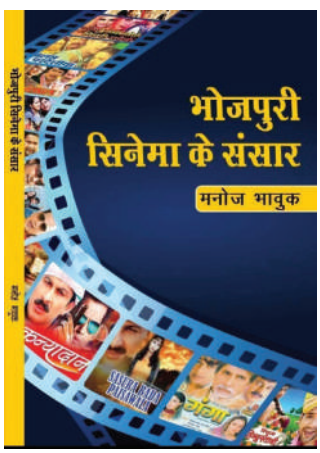

भोजपुरी सिनेमा के संसार (पहिल संस्करण : 2024) साल 1931 से अबले भोजपुरी सिनेमा के यात्रा के विस्तृत दस्तावेज ह। एह में 1962 के पहिल भोजपुरी फिलिम 'गंगा मइया तोहे पियरी चढ़इबो' से पहिले हिन्दी सिनेमा में भोजपुरी के मौजूदगी, कई रोचक प्रसंग, प्रमुख सिने हस्तियन के साक्षात्कार, आ भोजपुरी सिनेमा के चुनौती, संभावना, कारोबार, भविष्य, ओटीटी, वेब सीरीज, टेलीफिल्म आ धारावाहिक पर विस्तार से चर्चा कइल गइल बा। भोजपुरी साहित्य आ सिनेमा के बीच मजबूत सेतु के रूप में मनोज भावुक के अनुभव एह किताब के विशिष्ट बनावत बा। ऊ सिर्फ सिनेमा के इतिहासकार ना, बलुक स्थापित आ लोकप्रिय फिल्म-गीतकार भी बाड़न। ✷✷✷

सितारन के हाथ में 'भोजपुरी सिनेमा के संसार'

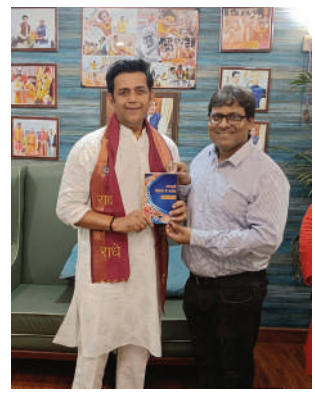

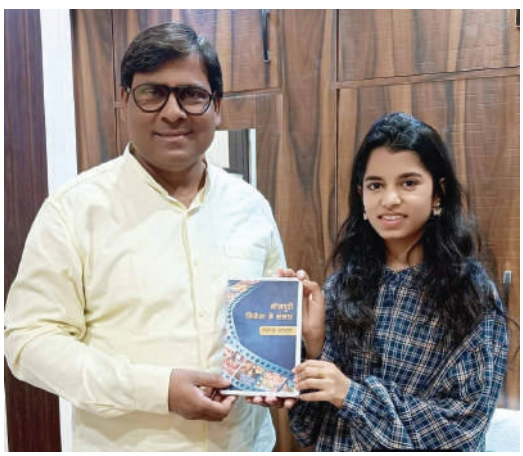

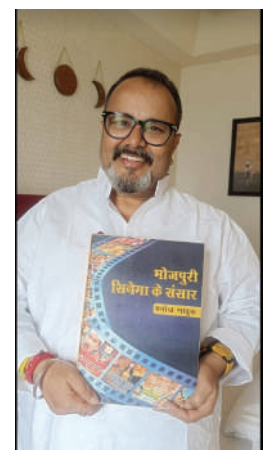

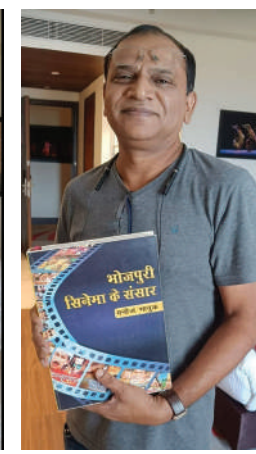

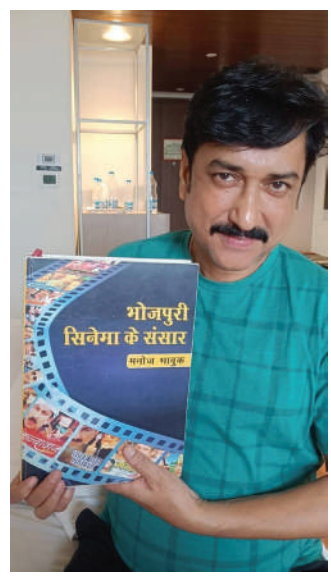

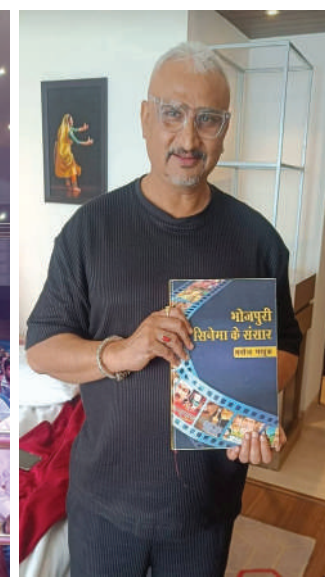

मनोज भावुक के मिलल बेस्ट लिरिसिस्ट अवॉर्ड

भोजपुरी जंक्शन के संपादक आ फिल्म गीतकार मनोज भावुक के 15 मार्च 2026, रविवार के पटना के बापू सभागार में आयोजित 7वें सरस सलिल भोजपुरी सिने अवाड्र्स 2026 में बेस्ट लिरिसिस्ट अवॉर्ड से सम्मानित कइल गइल। ई सम्मान उनका के फिल्म 'दुलहिनिया नाच नचावे' के गीतन खातिर इम्पा प्रेजिडेंट अभय सिन्हा के हाथे प्रदान कइल गइल।

अवार्ड मिलला के बाद दिल्ली प्रेस आ सरस सलित के प्रति आभार व्यक्त करत मनोज भावुक कहले कि "भोजपुरी अवार्ड समारोह के सार्थकता तबे बा, जब हमनी के ओहू लोग के याद करीं जा, जे एकर नीव डालल। खाली अपने पीठ थपथपवला से ना होई। काल्ह हमनियो के पुरान हो जाएब जा। मजा तब बा, जब हमनी के एह दुनिया में ना रहीं जा, तबो लोग हमनी खातिर ताली बजावे।"

मनोज कहले कि 'संगीतकार रजनीश मिश्रा हमरा के फिल्म से बतौर लिरिसिस्ट जोड़नी। ई अवार्ड रजनीश जी के समर्पित।

दरअसल, लिरिसिस्ट मनोज भावुक आ म्यूज़िक डायरेक्टर रजनीश मिश्रा के जोड़ी जब भी साथ आइल, यादगार गीत सामने आइल। फिल्म 'मेहंदी लगा के रखना' के लोकप्रिय गीत 'तोर बउरहवा रे माई', फिल्म

'मेहमान' के 'मेरे राम' अउर फिल्म ''आपन कहाये वाला के बा'' चाहे " दुलहिनिया नाच नचावे" के गीत, ... सबसे भोजपुरी संगीत के मान बढ़ल।

गीत लेखन के अलावा मनोज भावुक अपना शोधपरक पुस्तक 'भोजपुरी सिनेमा के संसार' में 2020 तक के भोजपुरी सिनेमा के इतिहास के समेटले बाड़ें। एकरा अलावा 'चलनी में पानी' आ 'तस्वीर ज़िंदगी के' उनकर चर्चित पुस्तक ह। ✷✷✷

विद्यया ऽमृतमश्नुते
KNOWLEDGE IS THE ESSENCE OF THE LIFE

THE INDIAN PUBLIC SCHOOL

THE INDIAN PUBLIC SCHOOL
विद्यया ऽमृतमश्नुते
PERSEVERANCE EXCELLENCE
INTEGRITY

Dehradun | Affiliated to C.B.S.E. | Co-Educational and fully Residential School

LEARN | IMPLEMENT | INNOVATE | EXCEL

The 21st Century Gurukul

ADMISSIONS OPEN 2026-27

Classes IV to IX and XI

+91 9568012778 | +91 9568012776 | +91 9568012772

admission@indianpublicschool.com | www.indianpublicschool.com